विश्व-भ्रमण

भारत से विदा

दो वर्ष मे एक बार उन देशों की परिषद् होती है जो 'कामन-वेल्थ' में सम्मिलित हैं। ये वे देश हैं जिनसे इंग्लिस्तान का किसी न किसी प्रकार का संबंध रहा है, परन्तु जो अब पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत भी कामनवेल्थ का एक अंग हो गया है और दो वर्षों के अनन्तर होने वाली इस परिषद् में भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल भी जाता है।

सन् १९५० में यह परिषद् न्यूज़ीलैण्ड में हुई थी, और उसमें जो भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल गया था उसके नेतृत्व का उत्तरदायित्व मुझपर रखा गया था। सन् १९५२ के ८ सितम्बर से १३ सितम्बर तक यह परिषद् कैनेडा में होने वाली थी। इस परिषद् में भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल के नेता लोकसभा के अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकर थे, जिन्होंने प्रतिनिधि-मण्डल में मुझे भी रखा था।

मैंने सोचा कि मुझे कैनेडा जाने का जो अवसर मिलेगा, उसका उपयोग मैं विश्व-भ्रमण के लिए क्यों न कर डालूं। कैनेडा जाने के रास्ते में यूरोप पड़ता ही है और कैनेडा अमेरिका से लगा हुआ है। लौटना फिर यूरोप होकर हो सकता है अथवा अमेरिका के पश्चिमी छोर के न्यूयार्क से अमेरिका के पूर्वी छोर सैनफ्रांसिस्को आकर और

वहां से आराम और थान होकर। अमरीका, मनाया, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, फिजी आदि मैं पहले हो भाया था। इस यात्रा से संसार के प्राय: समस्त देशों का मेरा भ्रमण हो जाएगा और इस भ्रमण के कारण ससार की समस्याओं का अध्ययन भी, इस विचार ने विश्व-भ्रमण के विचार को और अधिक उत्तेजना दे दी।

मेरे छोटे पुत्र जगमोहनदास और मेरे छोटे दामाद धनश्यामदास मेरे साथ जाने के लिए बड़े उत्सुक थे। जगमोहनदास अब मध्यप्रदेश-विधान सभा के सदस्य भी थे। इन दोनों का भी मेरे साथ जाना निश्चित हुआ और हम लोगों ने रूस को छोड़ निम्नलिखित देशों को जाने का निर्णय किया—(१) मिस्र, (२) यूनान, (३) इटली, (४) स्विट्जरलैंड, (५) फ्रांस, (६) इग्लैण्ड, (७) कैनेडा, (८) अमेरिका, (९) हवाई द्वीप, (१०) जापान, (११) चीन, (१२) हांगकांग, (१३) स्याम, (१४) बर्मा।

८ सितंबर, १९५२ से कैनेडा में होने वाली इस परिषद् का भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल २७ अगस्त को जाने वाला था, परन्तु, चूंकि हम यूरोप के विभिन्न देशों को भी जा रहे थे, इसलिए हम ३१ जुलाई को बी० ओ० सी० के चार इंजिन वाले एक दीर्घकाय वायुयान द्वारा दिल्ली से रवाना हुए। यात्रा इतनी लम्बी थी कि वह वायुयान द्वारा ही की जा सकती थी, अतः सारी यात्रा प्रधानतया वायुयान द्वारा ही हुई।

काहिरा पहुंचने तक

भारत से उड़कर हमारा वायुयान सर्वप्रथम कराची में उतरा। इस उड़ान में उस समय इस वायुयान को लगभग ढाई घण्टे लगे। जिस समय हमारे वायुयान ने कराची में पाकिस्तान की भूमि का स्पर्श किया तब मुझे याद आया वह समय, जब ... का विभाजन नहीं हुआ था। यद्यपि पाकिस्तान के निर्माण के ... का नारा कई वर्षों से यत्र-तत्र लगने लगा था तथापि जिन्ना के इस सवाल को हाथ में लेने के पहले यह नारा

कुछ मनचलों की मनचली कल्पना का विषय ही माना जाता था। महात्मा गांधी के प्रादुर्भाव के बाद भारतीय राजनीति में स्वातन्त्र्य-युद्ध में भाग न लेने के कारण श्री जिन्ना का कोई स्थान न रह गया था। इन्हीं जिन्ना का फिर कितने शीघ्र उत्थान हुआ तथा उन्हीं के प्रयत्न से पाकिस्तान की स्थापना हुई। यह सब हुआ श्री जिन्ना के व्यक्तित्व के कारण अथवा विशिष्ट परिस्थितियों की वजह से ? एक पुराना विवाद चला आ रहा है कि व्यक्ति समय का निर्माण करता है या समय व्यक्ति का। श्री जिन्ना के व्यक्तित्व को लेकर मैं इसी विचारधारा में गोते लगाने लगा। क़ायदेआज़म का व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं से भरा हुआ था, इसमें सन्देह नहीं। इस देश की राजनैतिक बागडोर गान्धी जी के हाथ में आने के पूर्व इस देश की राजनीति में और इस देश की प्रधान राजनैतिक संस्था कांग्रेस में जिन्ना का बहुत बड़ा स्थान रह चुका था। कांग्रेस के गान्धी जी के हाथ में आने पर जिस प्रकार उस काल के अनेक राजनैतिक नेताओं ने कांग्रेस को छोड़ दिया, उसी प्रकार श्री जिन्ना ने भी। लेकिन इन कांग्रेस छोड़ने वालों में से अनेक नरम दल के नेताओं ने जिस तरह 'लिबरल फेडरेशन' नामक एक पृथक् सस्था बनाई, वैसी कोई बात जिन्ना ने नहीं की, वरन् मुस्लिम लीग तक को उन्होंने हथियाने की कोशिश नहीं की। गान्धी-युग के त्यागमय स्वतन्त्रता के संग्रामों में जिन्ना अपने जबीन की विशिष्ट आदतों के कारण भाग न ले सकते थे अतः वे गान्धी की आंधी में 'जैसी बहै बयार पीठ पुनि तैसी कीजै' सिद्धान्त के अनुसार चुपचाप बैठे रहे। यहां तक कि कुछ वर्षों के लिए देश को छोड़कर विलायत चले गये और वहां वकालत करते रहे। सन् २० की धारासभाओं के चुनाव का कांग्रेस ने बहिष्कार किया था। जिन्ना साहब ने कांग्रेस छोड़ दी थी, इतने पर भी उन चुनावों में वे लड़े नहीं हुए। हां, कांग्रेस में रहते हुए जो जिन्ना राष्ट्रीयता के सबसे बड़े पुजारियों और साम्प्रदायिकता के सबसे बड़े विरोधियों में से एक थे, उन्हीं जिन्ना ने धीरे-धीरे समय-समय पर मुस्लिम हितों की बातें

बढ़ना आरम्भ किया। साइमन-कमीशन के अवसर पर नेहरू-कमेटी की रिपोर्ट के समय, पहली गोलमेज परिषद् में तथा अन्य अवसरों पर उन्होंने जो कुछ कहा और किया, उस इतिहास को देखने से पाकिस्तान की स्थापना जिस नींव पर हुई उस नींव की खुदाई किस प्रकार हो रही थी, इसका पता लग जाता है। और अन्त में ज्योंही उन्होंने देखा कि मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का जहर अच्छी तरह फैल गया है तथा मौलाना मुहम्मद अली की मृत्यु के पश्चात् मुसलमानों में कोई नेता नहीं रह गया है, त्योंही अपने समस्त पुराने राष्ट्रीय सिद्धान्तों को ताक में रखकर, एक कट्टर से कट्टर सम्प्रदायवादी नेता के रूप में, वे फिर से राजनीतिक क्षेत्र में कूद पड़े। अब जिस प्रकार गान्धी जी ने पुरानी, राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस को हाथ में लेकर अपने समस्त कार्यक्रम को कार्यरूप में परिणत किया था उसी प्रकार श्री जिन्ना ने भी मुस्लिम लीग को हाथ में लेकर अपने कार्यक्रम को क्रियान्वित करना आरम्भ किया। अन्तर इतना अवश्य था, और यह बहुत बड़ा अन्तर था, कि गान्धी जी के कार्यक्रम में कुछ करने की बातें थीं और इस करनी में त्याग तथा तपस्या आवश्यक थी। जिन्ना के कार्यक्रम में करने को कुछ नहीं था, जो कुछ था कहने को था और इस कथनी में न त्याग की जरूरत थी न तपस्या की; वरन् गान्धी जी की करनी ने देश की जनता से जो त्याग और तपस्या कराई थी और जिसके कारण विदेशी सत्ता कमजोर पड़ती जा रही थी उसका उपयोग जिन्ना के कथनी के कार्यक्रम में होता जा रहा था। अंग्रेजों की नीति वर्षों से मुस्लिम-परस्त थी ही। हिन्दुओं और मुसलमानों को लड़ाते रहना तथा इस प्रकार अपना उल्लू सीधा करना यह अंग्रेज वर्षों नहीं, युगों से करते आ रहे थे। श्री जिन्ना ने अंग्रेजों से मिलकर भारत को कोई हानि पहुंचाई, यह कहना उनके साथ अन्याय करना होगा, उन्होंने यह कभी नहीं किया। पर अंग्रेजों की इस नीति का उन्होंने अपने उत्कर्ष के लिए पूरा-पूरा उपयोग अवश्य कर लिया। इस प्रकार हम देखते हैं

जिन्ना के व्यक्तित्व में एक नहीं, अनेक विशेषताएं थीं। यदि

जिन्ना के सदृश कुशल राजनीतिज्ञ मुसलमानों में न होता तो पाकिस्तान कदापि स्थापित न हो सकता था। व्यक्ति समय का निर्माण करता है या समय व्यक्ति का, इस विवाद को जब हम सामने रखते हैं, तो जिन्ना का व्यक्तित्व विशेषताओं से रहित था और केवल समय ने जिन्ना को बना दिया—हम यह नहीं मान सकते। पर साथ ही एक विशिष्ट परिस्थिति के कारण ही जिन्ना का इतना उत्कर्ष हो सका, इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता। दोनों का अन्योन्य सम्बन्ध है, यह मेरा मत है। पर एक बात और, प्राय: महापुरुष अपने समय का निर्माण उन सिद्धान्तों पर करता है जिन सिद्धान्तों पर उसे विश्वास होता है। गान्धी जी ने भी यही किया, लेकिन कायदेआजम जिन्ना के सम्बन्ध में यह बात नहीं कही जा सकती। जिन उसूलों पर पाकिस्तान का निर्माण हुआ था वे जिन्ना को व्यक्तिगत रूप से कभी भी मान्य न थे। इस एक आश्चर्यजनक बात को सच्चे इतिहास को सदा उल्लेख करना ही होगा।

और अब मुझे पाकिस्तान की स्थापना की अनेक घटनाएं याद आने लगीं। कितने निर्दोषों का खून बहा था, कितनी सती-साध्वियों का धर्म नष्ट हुआ था, कितने मासूम बच्चे ककड़ियों और भुट्टों के सदृश काट डाले गए थे, कितने लखपती और करोड़पती कंगाल हो गए थे, कितने ऐसे थे कि जिनके महल नष्ट हो गए थे और आज उन्हें झोपड़ी भी नसीब न थी! और क्या हिन्दू-मुस्लिम समस्या को सुलझाने के लिए जिस पाकिस्तान का निर्माण हुआ था, उससे यह समस्या सुलझ गई? लाखों शरणार्थी उत्तर-पश्चिम से आए थे और किस कठिनाई से उन्हें बसाया गया था, अब लाखों हिन्दू आ रहे हैं पूर्व से। पाकिस्तान धर्म-निरपेक्ष राज्य नहीं है। पाकिस्तान राज्य का धर्म इस्लाम है। उसे अल्पमत वालों की परवाह नहीं। ऐसा समय शीघ्र ही आता दीखता है जब पाकिस्तान में शायद एक भी गैर-मुस्लिम न रह जाएगा; पर हमारा देश धर्म-निरपेक्ष देश है, हम द्विराष्ट्र सिद्धान्त को नहीं मानते। धर्म-निरपेक्षता ही ठीक सिद्धान्त

है और द्विराष्ट्र सिद्धान्त को न मानना ही सही बात है।
में चाहे एक भी गैरमुस्लिम न रहे, पर भारत में तो करोड़
रहेंगे ही। अतः पाकिस्तान की स्थापना के बाद भी हमा
हिन्दू-मुस्लिम समस्या का हल नहीं होगा। आज कश्मीर
प्रश्न उठा हुआ है। यदि पंजाब का हिस्सा, सिन्ध, बलूचि
पश्चिम का सरहदी प्रान्त और बंगाल का हिस्सा अलग कर
के निर्माण के बाद भी हिन्दू-मुस्लिम-प्रश्न जैसा का तैसा
यदि हम कश्मीर पाकिस्तान को दे भी दें, जो कभी दि
सकता और कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है, तो क
प्रश्न हल हो सकता है? और जब मैं यह सोचता हूं, तब
उठता है कि देश का विभाजन स्वीकार करके हमने कोई
नहीं की? गान्धी जी विभाजन के विरुद्ध थे। और जब मैं य
हूं, तब मेरे मन में उठता है कि हमारे नेताओं ने देश क
शीघ्र स्वतन्त्र कराने अथवा जिन पदों पर वे आसीन हो चुके
हाथ से न जाने देने के लोभ से देश के विभाजन को स्वी
जल्दबाजी की कार्यवाही तो न कर डाली थी? एक बार नह
बार मेरे मन में ये प्रश्न उठे हैं और इन प्रश्नों का सन्तोषजन
न मुझे कभी मिला था और न आज ही मिल रहा था।

लगभग ग्यारह बजे रात्रि को हवाई जहाज ने कराची
अड्डा छोड़ दिया और दूसरे दिन प्रातःकाल नौ बजे हम लोग
पहुंचे। परन्तु भारत के समय से अब साढ़े बारह बज गए
ही रात में साढ़े तीन घण्टे का अन्तर पड़ गया था।

ने सभ्यता और संस्कृति का प्रसार किया था।

आधुनिक विद्वानों के मतानुसार मिस्र की सभ्यता का उदय ईसा के सात हज़ार वर्ष पूर्व हुआ था। मोहनजोदडो और हडप्पा के भग्नावशेषों का पता लगाने के पूर्व तथा ऋग्वेद संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है, इस मान्यता के पहले यह माना जाता था कि इस विश्व में मिस्र की सभ्यता ही सबसे पुरानी है। अब इस सम्बन्ध में मतभेद हो गया है और ऐसे विद्वानों की कमी नहीं जो भारत की सभ्यता को सबसे पुरानी सभ्यता मानते हैं। फिर भी मिस्र ने मानव को बहुत कुछ दिया है। वर्ष-गणना, अंकगणित और लेखन के लिए अक्षर सर्वप्रथम मिस्र में ही ईजाद हुए थे। यहीं सबसे पहले खेती और सिंचाई का आरम्भ हुआ था। यहीं मानव ने ऐसी घास के पौधे ढूढ़े थे जिनमें अनाज पैदा होता था। इन पौधों की खेती पहले मनुष्य हाथ से ज़मीन को कमाकर किया करता था। बाद में उसने मिस्र में ही सर्वप्रथम बैलों की सहायता से खेती करना प्रारम्भ किया। अधिकतर पशुओं में मनुष्य से कहीं अधिक बल रहता है। पर जो बुद्धि मनुष्य में है वह पशुओं मे नहीं। बुद्धि और कौशल से ही तो, पशु तथा अन्य शक्ति के स्रोतों को उपयोग में ला, मानव ने सभ्यता और संस्कृति निर्मित की है। वह दिन मानव-इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण दिनों मे से एक है जिस दिन मिस्र के आदिम मानव ने बैलों की शक्ति के सहारे नील नदी के कछार में सर्वप्रथम खेती आरम्भ की। इस खेती के सहारे जिस अतिरिक्त धन का उपार्जन हुआ था उसीसे मिस्र की प्राचीन सभ्यता निर्मित हुई। मिस्र देश का मृत्यु का देवता 'सेरापीज' बैल के आकार का है। गाय को भी मिस्र देश मे पवित्र और पूजनीय माना गया। यहां की पूजनीय गाय का नाम है 'एपिस'।

भू-मध्यसागर के दक्षिणी तट पर स्थित उत्तरपूर्व अफ्रीका का यह देश कोई बहुत बड़ा देश नहीं है और न यहां की आबादी ही बहुत बड़ी है। समूचे मिस्र देश का क्षेत्रफल है ३,८३,००० वर्गमील

छोटा और चौड़ा है, उत्तरी मिस्र लंबा और संकरा। उत्तरी मिस्र में हरियाली एक छोटी-सी पट्टी के रूप में है। शेष भाग लाल रेत और चट्टानों से पूर्ण है। दक्षिणी भाग की उपत्यका काफी चौड़ी है।

काहिरा मे उतरते ही हमे मिस्र के रेगिस्तानी तथा आबाद हिस्से स्पष्ट दीख जाते हैं; दोनो एक-दूसरे से मिले हुए। रेगिस्तानी भाग सूर्य की किरणों मे चादी के चूर्ण के समान [illegible] बालुका वाला और आबाद हिस्सा नाना प्रकार [illegible] हरा कच्छ। आबाद हिस्से मे उल्लेखनीय वस्तु उत्पन्न होती है—कपास। मिस्र की रूई का तार जितना लम्बा होता है ससार के किसी देश की रूई का नही, और इसका कारण मिस्र देश की भूमि के अतिरिक्त उस भूमि पर कभी पानी न बरसना है। सारे ससार मे इस रूई की माग रहती है। पतला सूती कपड़ा इस रूई के मिश्रण बिना बन ही नहीं सकता। इस रूई से मिस्र में बहुत कम कपड़ा बनता है और अधिकतर रूई बाहर भेजी जाती है।

मिस्र देश मे वायुयान से उतरते ही हमारा ध्यान वहां की भूमि और नील नदी के प्रवाह के अतिरिक्त वहां के निवासियो की ओर आकर्षित हुआ। मिस्र के निवासियों का वर्ण भारतीयो के सदृश गेहुआ है। पश्चिमी पोशाक के अतिरिक्त मिस्र के पुरुषों की पोशाक है गले से पैरो की एड़ी तक धारीदार कपड़े का लम्बा चोगा और सिर पर लाल रग की काले फुदने वाली तुरकी टोपी। स्त्रियों की पोशाक एक काले रग का बुरका है, पर यह बुरका रहता है गले से पैर तक, चेहरा इस बुरके से नही ढका जाता। स्त्रियों की पोशाक सौन्दर्य से सर्वथा रहित है। इसीलिए वहां की महिलाएं शायद पश्चिमी पोशाक अधिकाधिक अपनाती जाती हैं। यदि हम बाहर से आए हुए लोगो को, विशेषकर अरबवासियो को, छोड़ दें तो मिस्र-निवासियों मे प्रधानतया अफ्रीकी और एशियाई दो फिरके स्पष्ट रूप से पाए जाते हैं। दोनों के चेहरे की बनावट मे काफी भिन्नता है। दक्षिणी मिस्र के लोग अधिकतर अफ्रीकन हैं और उत्तरी मिस्र के लोग अधिकतर एशिया के देशो के

सन् ६७२ ई० में समाप्त हुआ था। इसकी प्राचीनता और इसके मुख्य प्रालय में मौलवी के खड़े होने के स्थान पर पत्थर की पच्चीकारी के सुन्दर काम के सिवा इसमे अन्य कोई विशेषता न थी।

इन दोनो मस्जिदो को देखने के पश्चात्, हमने एक सड़क पर से खलीफो के मकबरे देखे। यहा से हम लोग काहिरा का मुख्य बाजार देखने पहुचे। इस बाजार की इमारतो मे तो प्राचीनता का कोई लवलेश भी न था, पर बिकने वाली वस्तुओं मे आधुनिक काल की वस्तुओ के साथ-साथ कुछ प्राचीन काल की चीजें भी दिखाई दे जाती थी, जिनमे मुख्य थे 'क्यूरिओ'। हमने बाजार से पत्थर के कुछ क्यूरिओ, मिस्र के भिन्न-भिन्न दृश्यो की कुछ फोटो और प्राचीन तथा अर्वाचीन मिस्र पर कुछ पुस्तकें खरीदीं।

बाजार से हम ससार की सात अद्भुत वस्तुओ मे से एक मिस्र के प्रसिद्ध पिरामिड देखने रवाना हुए, जब शुक्ल पक्ष की दशमी का चाद अच्छी तरह से मिस्र के निर्मल गगन में चमकने लगा क्योकि हमने सुना था कि हमारे जन्म-स्थान जबलपुर मे नर्मदा के भेड़ाघाट तथा आगरे के ताजमहल के सदृश पिरामिड भी ज्योत्स्ना की नीलिमामय श्वेतता मे अपना एक विशेष सौंदर्य प्रदर्शित करते हैं।

मिस्र मे पिरामिडों का निर्माण उस पिरामिड-युग मे हुआ, जो ईसा के २८१५ वर्ष पूर्व से २२६४ वर्ष पूर्व तक माना जाता है। इस बीच प्राचीन राजवश की तीसरी, चौथी, पांचवी और छठी पीढ़ियो ने राज्य किया। पिरामिड-युग मे निर्मित सभी पिरामिड नील नदी के पश्चिमी तट पर बने हैं।

यो तो मिस्र में इस समय ज्ञात पिरामिडों की सख्या लगभग ८० है, किन्तु इनमें सबसे बड़े पिरामिड तीन हैं। ये तीनों पिरामिड एक ही स्थान गिज़ाह के पठार पर एक-दूसरे के अत्यन्त सन्निकट बने हैं। सबसे बड़ा पिरामिड चॅपस ने बनवाया था और यह महान पिरामिड के नाम से प्रसिद्ध है। दूसरा पिरामिड चफरन ने बनवाया जो उसीके नाम से प्रसिद्ध है। तीसरे पिरामिड का निर्माता माइसेरिनस था। ये

शिलाखण्ड उठा-उठाकर कैसे इतनी ऊंचाई पर लाए गए, यह एक आश्चर्य से स्तम्भित कर देने वाली बात है। हमारे मार्ग-प्रदर्शक तथा वहां के अन्य लोगों ने हमें बताया कि पहले इन पिरामिडों के बाहरी भाग संगमरमर से पटे हुए थे। एक पिरामिड के ऊपरी कुछ भाग में अभी संगमरमर लगा हुआ है, पर बाद में बादशाह मुहम्मद अली यहां का संगमरमर निकलवाकर ले गया और उस संगमरमर से मुहम्मद अली की उस विशाल मस्जिद का निर्माण हुआ, जिसका वर्णन पहले आ चुका है। संगमरमर लगे हुए ये पिरामिड चांदनी में एक अद्भुत नजारा दिखाते होंगे, इसमें सन्देह नहीं, पर संगमरमर निकल जाने पर भी ज्योत्स्ना में इनका अपना एक सौन्दर्य है, यह निश्चित है।

प्रकाश और परछाईं में हर तरफ इन पिरामिडों का निरीक्षण करने के बाद हम इन्हींके निकट मिस्र देश के अन्य विश्वविख्यात स्फिक्स को देखने चले। पिरामिडों के समान ही यह भी एक महान विशालकाय वस्तु है। इस स्फिक्स का शरीर है सिंह का और चेहरा है एक पुरुष का, कदाचित् बादशाह चफरन का। इसका निर्माण हुआ था ईसा के लगभग तीन हजार पांच सौ वर्ष पूर्व। इसकी लम्बाई है २४० फुट और ऊंचाई ६६ फुट। पांवों को छोड़ बाकी यह समूचा स्फिक्स एक ही विशाल चट्टान से बना है। बाद में यह सदियों तक रेत से पुरा रहा। सन् १८१८ में इसके चारों ओर की रेत हटाकर इसे फिर से निकाला गया है।

आज की इस घुमाई के बाद हमने यह तय किया कि दिन के प्रकाश में भी कल हम इन आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखेंगे। जब हम अपने होटल को लौटे तब रात के करीब दस बज चुके थे। होटल पहुंचते ही हम लोगों ने खाना मंगाया और खाने के बाद जब खाने का बिल हमारे पास आया तब हमें कम आश्चर्य नहीं हुआ। हम तीनों शाकाहारी थे। हमने जो खाना मंगाया था उसमें डबल रोटी, मक्खन, शाकाहारी सूप, उबले साग-भाजी, फल और फल का रस

अधिक है, पर जब हम भारत तथा अन्य स्थानों की समान वस्तुओं के मूल्य का मिलान करते हैं तब हमें मालूम होता है कि भारत में न-ही बराबर वस्तुओं का मूल्य कितना कम है। अन्य देशों में यदि इतनी अधिक कीमत भी लोगों को नहीं अखरती और भारत में इतना सस्ता मूल्य भी अखरता है तो इसका कारण भारत के लोगों तथा अन्य देशों के लोगों की आर्थिक अवस्था है। इस पूरी यात्रा में हमें भारत से सस्ता सामान कहीं भी नहीं मिला। हां, अन्य स्थानों में लन्दन में सामान अवश्य सस्ता था, पर भारत के मान से तो उनका भी मूल्य काफी अधिक था।

यों तो यहूदी अपना राज्य बनाने का प्रयत्न बहुत समय से कर रहे थे, किन्तु फिलिस्तीन में एक अलग यहूदी राज्य की स्थापना का सूत्रपात २ नवम्बर, १९१७ की उस घोषणा से हुआ जिसे बेलफर-घोषणा कहा जाता है। १९२३ में ब्रिटेन को शासन-प्रबन्ध चलाने का जो आदेश दिया गया था उसमें यह सिद्धान्त निहित था। यह आदेश यहूदी गणराज्य इसरायल की स्थापना की घोषणा के साथ ही समाप्त हुआ। इसपर इसरायल और अरब राज्यों में युद्ध छिड़ गया। मिस्र ने अरब देशों को संगठित करने में प्रमुख भाग लिया। इसी

उद्देश्य के लिए अरब लीग की स्थापना हुई, जिसका प्रधान कार्यालय काहिरा मे है। यद्यपि इसरायल के प्रति अरब देशों, विशेषकर मिस्र, का मनमुटाव अब भी बना हुआ है, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण अरब राज्यों को चुप हो जाना पड़ा है; वैसे मिस्र इसरायल जाने वाले सामान के स्वेज नहर से गुजरने पर अब भी कड़ी निगरानी रखता है।

इसरायल राज्य की स्थापना १५ मई, १९४८ को हुई। इसरायल और पड़ोसी अरब राज्यों की अल्पकालीन किन्तु भीषण युद्ध के पश्चात् यूनान के रोड्स नामक स्थान मे अस्थायी सन्धि पर दस्तखत किए गए। जिन देशों ने सन्धि पर दस्तखत किए उनके नाम हैं—मिस्र, लेबनान, जोर्डन और सीरिया। सन्धि पर दस्तखत फिलिस्तीन-सम्बन्धी संयुक्तराष्ट्र के मध्यस्थ और संयुक्तराष्ट्र-फिलिस्तीन समझौता कमीशन की देख-रेख मे किए गए। जनवरी, १९४९ में पहले आम चुनाव हुए और डाक्टर वीजमैन इसरायल गणराज्य के पहले प्रधान बने। इसरायल सरकार इस बात के लिए वचनबद्ध है कि बाहर से आने वाले सभी यहूदियों को इसरायल में स्थान दिया जाएगा। १९४९ में कोई साढे तीन लाख लोग इसरायल आए। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इसरायल राज्य को संसार के अधिकतर देश स्वीकार कर चुके हैं और १२ मई, १९४९ को उनसठवें सदस्य के रूप में वह संयुक्तराष्ट्र में शामिल हो चुका है।

इसरायल राज्य की सबसे बड़ी विशेषता एक यह हुई कि उन्होंने अपनी राज्यभाषा हिब्रू को बनाया। हिब्रू एक मातृभाषा है, परन्तु इतने थोड़े समय मे भिन्न-भिन्न स्थानों से आकर बसने वाले यहूदियों ने हिब्रू सीख ली। आज वहां के गणतन्त्र की सारी कार्रवाई हिब्रू में होती है। हमारे देश में जिस हिन्दी को अपनी राज्यभाषा और राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है वह हिब्रू के सदृश मातृभाषा नहीं है। आज भी इस देश की लगभग आधी जनता की वह मातृभाषा है और शेष में से भी उसे न समझने वालों की संख्या नगण्य है। क्या हमारे

र उसके समर्थक भी कम नहीं पाए जाते? अंग्रेजी का स्थान न्दी पन्द्रह वर्षों में ले लेगी, यह हमने अपने संविधान द्वारा घोषित त्या है, पर जिस गति से हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान दिलाने का यत्न चल रहा है उससे तो पन्द्रह क्या पन्द्रह के ऊपर एक शून्य जोड़ने जो संख्या हो जाती है उतने वर्षों में भी हिन्दी को उसका उचित थान प्राप्त होने वाला नहीं है। इस विषय में हमें इसरायल के हिब्रू ेम से स्फूर्ति और प्रेरणा मिलनी चाहिए।

हम लोग काहिरा का अजायबघर देखने गए। बड़ा भारी अजायब-गर का भवन है और उसमें भारी तथा बहुत प्राचीन संग्रह है। इस संग्रह में मूर्तियां हैं, चित्र हैं, आभूषण हैं, वस्त्र हैं और सबसे अधिक हैं लाशें, जिन्हें मिस्र की प्रसिद्ध 'ममी' के नाम से पुकारा जाता है, तथा कब्रों में मिला हुआ विविध प्रकार का सामान। इस कब्रों के सामान में सबसे अधिक संग्रह है थेब्स में मिला हुआ मिस्र के बादशाह तूतएन्ख आमुन की कब्र का सामान। तूतएन्ख आमुन की यह कब्र सन् १६२२ में मिली थी। तूतएन्ख आमुन की ममी अभी भी उसी जगह है, पर उसी ममी पर एक के बाद एक जो सात कफन लगाए गए थे वे सब इस अजायबघर में लाए गए हैं। ये कफन कोई साधारण कपड़े के नहीं हैं, ये हैं एक प्रकार की सन्दूकें, जिनपर सच्चा सोना प्रचुर परिमाण में लगा हुआ है। ये सन्दूकें इस प्रकार बनी हुई हैं कि एक सन्दूक दूसरी सन्दूक के भीतर आ जाती है और इस प्रकार अन्त में सात सन्दूकों की एक सन्दूक हो जाती है। अन्तिम सातवीं सन्दूक में तूतएन्ख आमुन की ममी थी। लाश को छोड़, ... इस अजायबघर में एक-दूसरे से अलग कर सात शीशे बक्सों में सजाई गई हैं। इस कफन के सात बक्सों के अ... आमुन की कब्र से निकला हुआ न जाने कितना सा... है—तूतएन्ख आमुन के बैठने की स्वर्ण की कुर्सियां, उ...

प्राचीन मिस्र के स्मृति-चिह्नों में इस समाधि के संग्रह का स्थान
महत्त्वपूर्ण है और काहिरा के संग्रहालय में भी सबसे आकर्षक
यही है।

इस कब्र के सामान के सिवा अजायबघर का अन्य
सामान भी मृतकों से ही सम्बन्ध रखता है, इसलिए मैंने तो
अजायबघर का नाम मुरदों का अजायबघर रखा। प्राचीन मिस्र
मृतक शरीर का बड़ा महत्त्व था। उसे इस प्रकार के मसाले
कफन में बन्द किया जाता था कि लाश हजारों वर्षों के बीत जाने पर
सड़ती न थी और सुरक्षित रहती थी। यह मसाला किन चीजों से
बनता था, इसका पता अनेक प्रयत्न करने पर भी अब तक वैज्ञानिक
लगा पाए हैं। यद्यपि रूस में लेनिन की लाश को भी सुरक्षित रख
का प्रयास किया गया है, परन्तु लेनिन की मृत्यु को अभी बहुत
नहीं बीता है और सुना जाता है कि उसके इधर-उधर से क्षय हो
कुछ लक्षण भी दिखाई पड़ने लगे हैं। फिर पुराने मिस्र में लाश
को इस प्रकार सुरक्षित रखने के प्रयत्न के अतिरिक्त लाशों के सा
जीवित अवस्था के उपयोग का सामान भी गाड़ा जाता था। प्राचीन
मिस्र के लोग यह मानते थे कि मृतक कब्र में इस सब सामान का उप
योग कर सकेगा। मेरे मन पर तो मुरदों के इस अजायबघर का बड़ा
बुरा प्रभाव पड़ा। मुझे मृतकों की बड़ी-बड़ी समाधियां, मकबरे आदि
भी भी अच्छे नहीं लगते, फिर मिस्र के इस अजायबघर में तो इस
वादावाद की पराकाष्ठा है। इन समाधियों, मकबरों, मुरदों से सम्बन्ध
रखने वाली सभी प्रकार की वस्तुओं में मुझे आसक्ति-भावना परमो-
त्कट रूप में दिख पड़ती है और जब मैं इन वस्तुओं को देखता हूं तब
सदा हिन्दुओं का दर्शन स्मरण हो आता है। हिन्दुओं में मृतक
शरीर के अवशेष को भी कभी नहीं रखा जाता। लाश जला दी जाती
भस्म और हड्डियों को किसी पवित्र नदी में प्रवाह कर दिया जाता
जिस स्थान पर लाश का अग्नि-संस्कार होता था वहां भी पहले
... या छतरी नहीं बनती थी। यह प्रथा ... और

ममी, लगभग ३४०० वर्ष पुराना एक चित्र और १९८८ ...
एक मिस्री मकान का नक्शा।

संसार की सभ्यता का सूत्रपात मिस्र में हुआ, आज अधिकांश विद्वान यही मानते हैं। मिस्र में ही प्रथम मौलिक संस्कृति, स्थापत्य-कला, कृषि-बागवानी एवं वस्त्र-विन्यास का विकास हुआ। वहीं पर सर्वप्रथम भौतिकशास्त्र, खगोलशास्त्र, औषध-विज्ञान, इंजीनियरी आदि का विकास हुआ। वहीं पर सर्वप्रथम न्याय, शासन-व्यवस्था एवं धर्म की नींव पड़ी। यूरोप को बाद में जो कुछ यूनान ने दिया उसे यूनानियों ने मिस्र से ही प्राप्त किया था। यूनानी इतिहासकारों ने स्वयं ही मिस्र की नील घाटी के ज्ञान-भण्डार के प्रति आभार प्रकट किया है, जिसे उन्होंने मौखिक रूप में प्राप्त किया था।

जैसा पहले कहा जा चुका है, मिस्र की सभ्यता का उदय प्रागै-तिहासिक काल से अर्थात् ईसा से कोई सात हजार वर्ष पूर्व मेनेस के शासन-काल से मिलता है, यद्यपि कुछ इतिहासकार मिस्र के इतिहास को तीन हजार चार सौ वर्ष प्राचीन ही मानते हैं।

अत्यन्त संकरे नीलघाटी प्रदेश में इस सभ्यता का क्योंकर उदय हुआ, यह अवश्य ही बड़े आश्चर्य की बात है। भौगोलिक दृष्टि से देखने पर मिस्र को एक लाभ अवश्य था कि वह तीन महाद्वीपों के संसर्ग में था, एशिया, यूरोप और अफ्रीका। हो सकता है कि अपनी इस विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण ही मिस्र सभ्यता का ... केन्द्र-बिन्दु बन गया हो। मिस्र की सभ्यता का पता उस सामान ... ही तो चलता है जो कि मिस्रवासी मुरदों के साथ कब्र में गाड़ दिया करते थे। अनावृष्टि और शुष्क जलवायु के कारण वे वस्तुएं आज भी सुरक्षित अवस्था में मिल जाती हैं।

मिस्र के इतिहास में इतने अधिक शासकों ने राज्य किया कि उनको ३० राज-वंशों में बांटकर ही स्मरण रखा जा सकता है।

के बाद बाद मानिए।

मिस्र के निवासियों में भिन्न-भिन्न स्थान के लोग हैं, यह पहले कहा जा चुका है। यहां ८१ प्रतिशत मुसलमान हैं। ६२ प्रति लोगों की आजीविका खेती है, कपास, अनाज, चीनी प्रमुख पैदा है। मिस्र से निर्यात कपास, बिनौला, प्याज और सोना-चांदी का है है, आयात तम्बाकू, रसायन, कोयला, खाद और कपड़े आदि का है है। जैसा कहा जा चुका है, मुख्य निर्यात कपास का ही है। शि का स्तर बहुत ऊंचा नहीं है, यद्यपि प्राइमरी, सेकण्डरी तक स्कूलों का प्रबन्ध है और दो सरकारी विश्वविद्यालय भी हैं।

१९३३ में ही मिस्र में ७ से १२ वर्ष तक की उम्र के बच्चों लिए शिक्षा अनिवार्य कर दी गई थी। १९४४ में प्राथमिक शि मुफ्त कर दी गई और १९५० में माध्यमिक शिक्षा। १९५१ में बच्चों के लिए किंडर गार्टन स्कूलों की संख्या २३३ थी, जिनमें ८४ हजार से अधिक विद्यार्थी थे। सरकारी और गैर सरकारी प्राइमरी स्कूलों की संख्या ६,५८३ और सेकण्डरी स्कूलों की संख्या १०७ थी। मिस्र की सरकारी भाषा अरबी है।

मिस्र की अर्थ-व्यवस्था पर विचार करते समय यह नहीं भूलना चाहिए कि एक तो वहां की आबादी बहुत घनी है और दूसरे बेकारी बहुत बढ़ी हुई है। नील घाटी के चप्पे-चप्पे में जिस तरह खेती होती है और वहां जितने अधिक कपास की उपज होती है, उतनी तो कदाचित् दुनिया के किसी भाग में नहीं होती, किन्तु इसपर भी मिस्र के किसानों के रहन-सहन का स्तर बहुत निम्न है। स्वास्थ्य और मकान आदि की स्थिति बड़ी खराब है। कहा जाता है कि इस समस्या का मूल कारण भूमि का अनुचित वितरण है। इसके अतिरिक्त खेती के तरीके भी पुराने ढंग के हैं।

दिल्ली छोड़े हमें अभी दो दिन ही हुए थे, पर इन दो दिनों में हमने कितना देखा और समझा था। महीनों और हफ्तों जिन यात्राओं में लगते थे उन्हें शनैः-शनैः उत्तरोत्तर शीघ्रगामी यातायात के साधनों ने कितना सुगम बना दिया था। इन दो दिनों में हम हजारों मील उड़ चुके थे। एक प्राचीनतम मिस्र देश को देखकर हम एक दूसरे प्राचीनतम देश यूनान को जा रहे थे। किसी समय इन दोनों देशों का संसार में कितना महत्त्व था! आज पुरातत्त्ववेत्ताओं इतिहास अथवा कला-प्रेमियों के सिवा किसीकी दृष्टि मे भी इन देशों का कोई महत्त्व न रहा था। पर इन दो दिनो मे भी मिस्र मे हमने जो कुछ देखा था और उसके सम्बन्ध मे अब तक जो कुछ पढ़ा था उसके कारण वायुयान की रफ्तार के साथ ही हमारे मन में एक पर एक न जाने कितनी बातें उठने लगीं।

ठीक समय हमारा वायुयान एथिन्स रवाना हो गया।

यूनान

हमारा वायुयान एथिन्स काहिरा के समय से १२ बजे रात्रि को पहुंचा, पर एथिन्स का उस समय १ बज चुका था। एथिन्स कुछ ऐसे स्थान पर है कि काहिरा के पश्चिम मे पड़ता है अतः यहां का समय काहिरा से उल्टा एक घंटा आगे रहता है।

एथिन्स में उतरते ही मुझे 'ट्रायल ऐण्ड डेथ आफ साक्रेटीज' पुस्तक मे कभी पढ़े हुए सुकरात के सवाद स्मरण हो आए। जिस समय यूनान अपने उत्कर्ष की चरमसीमा पर था उस समय वहां संसार के सर्वश्रेष्ठ विचारकों मे से एक सुकरात ने मानव की विचार-धारा को एक विशिष्ट प्रवाह में बहाने का जो प्रयत्न किया था, हजारों वर्षों के बीत जाने पर, उसका अपना एक महत्त्व है। आज भी सुकरात के उन सवादों को पढ़ मानव के ज्ञान की सीमा कितनी बढ़

जाती है !

जिस न्यायालय ने सुकरात को प्राणदण्ड दिया उसमें उन्होंने क्या अनुरोध किया, जरा गौर कीजिए—"आपसे मेरी केवल एक ही याचना है। जब मेरे पुत्र बड़े हों और आपको ऐसा प्रतीत हो कि उनमें थोड़ी-बहुत धन-लिप्सा है अथवा उनमें गुण-ग्राहकता के अति-रिक्त अन्य कोई प्रवृत्ति है तो आप उन्हें दण्ड दें और उन्हें उसी प्रकार सताएं जिस प्रकार मैंने आपको सताया है। यदि वे कुछ भी न होते हुए कुछ होने का प्रपंच रचें तो आप उनकी इस प्रकार भर्त्सना करें जैसे मैंने आपकी की है। यदि आप ऐसा करेंगे तो हम समझेंगे कि मुझे और मेरे पुत्रों के साथ न्याय हुआ है।...खैर, अब हम लोगों के समय हो गया, मेरे लिए मृत्यु के आलिंगन करने का और आपके लिए जीवन-उपभोग करने का, पर हम दोनों में कौन अच्छी यात्रा को अग्रसर हो रहा है, यह एक ईश्वर के सिवा और कोई नहीं कह सकता।"

ऐसा ही एक और उदाहरण लीजिए—"गलत शब्दों का प्रयोग अपने-आप में तो एक त्रुटि है ही, उससे आत्मा भी कलुषित हो जाती है।"

सुकरात ने यूनानी दर्शन और विचारधारा को एक नई दिशा में ढाला। उनसे पहले सभी दार्शनिक भौतिकवादी थे, किन्तु उन्होंने उसमें अध्यात्मवाद का पुट दिया जिसे बाद में उनके मेधावी शिष्य अफलातूं ने चरम उत्कर्ष पर पहुंचा दिया। ऐसे सुकरात को उस समय के एथिन्स के निवासियों ने प्राणदण्ड दिया था और इस प्राण-दण्ड की घोषणा के बाद जेल से भागने के समस्त साधनों के उपलब्ध होते हुए सुकरात ने जेल से भागना अनैतिक मान, प्राण बचाने के [illegible] की रक्षा के लिए प्राण देना ही उचित माना था। जे[illegible] प्राण बचाना उचित है या प्राण देना, इस विषय पर [illegible] ने जेल में ही एक लम्बा वाद-विवाद किया था। इस विव[illegible] प्रतिपादित किया था कि आत्मा अमर है, मृत्यु एक प्र[illegible]

के समान है जो मानी ही है और मनुष्य को छुटकारा दिला देती है। इसीलिए मनुष्य को अपनी आत्मा में विश्वास रखना चाहिए। सुकरात के ये विचार गीता के उस उपदेश से मिलते-जुलते हैं जो भगवान कृष्ण ने रणभूमि में अर्जुन को दिया था कि यह संसार कर्मभूमि है, मनुष्य के मन को दुर्बल बनाने वाली माया-ममता मनुष्य के पास नहीं फटकने देनी चाहिए और अनासक्त भाव से कर्तव्य-रत रहना चाहिए। यह सोचना कि कोई किसी को मार सकता है या आत्मा मर सकती है, कोरा भ्रम है। नीचे दिया गया एक अंश उस समय का है जब सुकरात से यह प्रश्न पूछा गया कि आपको किस तरह दफनाया जाए—"यदि मैं आपकी पकड़ में आऊं और बचकर न जा सकूं तो आप मुझे जैसे चाहें दफना दें।"' क्रीटो को समझाना मेरे लिए कठिन है कि वही तो मैं सुकरात हूं जो आपसे इस समय वार्तालाप कर रहा हूं। वह समझता है कि मैं तो वह हूं जिसे अभी थोड़ी देर में मृत पाया जाएगा और उसकी जिज्ञासा है कि वह मुझे किस प्रकार दफनाए। मुझे यह आश्वासन दिलाने के लिए खासा लम्बा भाषण देना पड़ा है कि जहर का प्याला पीते ही मैं यहीं नहीं रहूंगा बल्कि उन सुखों का उपभोग करने चला जाऊंगा जो इस संसार से जाने वालों को प्राप्त होते हैं। किन्तु मुझे प्रतीत होता है कि अपने को और आपको इस प्रकार सान्त्वना देने का भी क्रीटो पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए जिस प्रकार न्यायाधीशों के लिए क्रीटो मेरा जामिन बना था, उसी तरह आप मेरे जामिन बनिए, किन्तु भिन्न रूप में। क्रीटो इस बात के लिए जामिन हुआ था कि मैं यहां रहूंगा। आप इस बात के लिए जामिन बनिए कि मैं अवश्य नहीं रहूंगा बल्कि ओझल और अदृश्य हो जाऊंगा। तब क्रीटो को कम पीड़ा होगी और जब वह मेरा शरीर जलते या दफनाए जाते देखेगा तो वह यह सोचकर मेरे लिए शोक नहीं करेगा कि कोई दुःखद बात तो नहीं हो रही है और मेरे अंतिम संस्कार पर यह नहीं कहेगा कि हम सुकरात को दफना रहे हैं।"

गरल-पान से पहले जब क्रीटो ने कहा कि अभी तो सूर्य पर्वत-शिखर पर है और दिन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ इसलिए आप अभी क्यों विष-पान करते हैं तो सुकरात ने उत्तर दिया—"कुछ देर बाद में ही विष-पान करने से क्या हाथ आएगा ? कुछ क्षण और जीवित रहकर और इस प्रकार जीवन के प्रति आसक्ति दिखाकर मैं स्वयं अपना ही तो उपहास करूंगा।" इस प्रकार हंसते-हंसते उस साहसी वीर ने ईश-वन्दना की और विष-पान कर लिया। कितनी दुःखद और दारुण थी यह मृत्यु पर इससे पहले ही सुकरात ने अपने साथियों से कह दिया था कि "खबरदार, आप लोगों में से कोई न रोए, क्योंकि रोना कमजोरी का लक्षण है और मुख्य रूप से इसीलिए मैंने स्त्रियों को यहां से दूर हटवा दिया है।"

सुकरात को प्राणदण्ड दिया गया था विचार-स्वातन्त्र्य के प्रचार के अपराध पर। सुकरात के बाद भी पश्चिम में इस प्रकार के अनेक महापुरुषों को इसी प्रकार के दण्ड मिले हैं, जिनमें मुख्य [illegible] जीसस क्राइस्ट। विचार-स्वातन्त्र्य की सहिष्णुता एक बड़ी भार[illegible] सहनशीलता है। भारत में हमें यह सहिष्णुता जितनी अधिक दिखा[illegible] देती है उतनी संसार के किसी देश में नहीं। भारतवासी आर[illegible] से ही ईश्वरवादी रहे हैं, पर यदि कोई बिरला व्यक्ति निरीश्वरवा[illegible] भी हुआ है और उसने अपने मत का प्रचार करने का प्रयत्न किया है तो उसे कभी भी नहीं रोका गया। भगवान राम के समय यदि एक ओर ईश्वरवादी ऋषि-मुनियों के आश्रमों की बड़ी भारी संख्या थी तो दूसरी ओर चार्वाक् के इकलौते निरीश्वरवादी मत को भी रोकने [illegible] कोई प्रयत्न नहीं हो रहा था। बाद में बौद्ध और जैन मत का [illegible] नहीं रोका गया। विचार-स्वातन्त्र्य, और हर व्यक्ति को [illegible] की आज़ादी हमारी संस्कृति की प्रधान [illegible] है। भारत को छोड़ विचार-स्वातन्त्र्य की ऐसी उपासना [illegible] या किसी संस्कृति में देखने को नहीं मिलती।

[illegible] दिन प्रातःकाल नित्य कर्मों से छुट्टी पा कोई १० बजे दि[illegible]

के कदाचित् दर्शन करना चाहते थे, पर यत्र-तत्र बहुत कम लोगों में हमें पुराने यूनान की बनावट नज़र आई। शेष वे सर्वथा आधुनिक। पोशाक स्त्री और पुरुषों की पूर्ण रूप से यूरोपीय थी। मिस्र में जो थोड़ी-बहुत स्त्रियां काले बुरके पहनती थीं और कुछ पुरुष गले से एडी तक लम्बे भोने तथा फुंदने वाली लाल तुर्की टोपियां वैसे प्रकार के वस्त्र यहां के लोगों के न थे। आखिर अब हम यूरोप में आ गए थे।

एथिन्स दक्षिण-पश्चिमी यूरोप के अन्य किसी नगर जैसा ही है। वेश-भूषा में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं पाया जाता, हां, इनके वस्त्र कुछ हल्के अवश्य होते हैं और हैटों का किनारा कुछ मोटा होता है। दो बातों से हमने अन्दाजा लगा लिया कि एथिन्स मध्यपूर्व की सीमा का ही एक नगर है। एक तो हमें कभी-कभी तुर्की फैज टोपियां दिखाई पड़ीं और दूसरे सड़कों पर मिठाइयों और पुष्प आदि बेचने वाले दिखाई दिए, जो हमारे यहां के फेरी वालों से मिलते-जुलते हैं। छोटी-छोटी गलियों और बाजारों में आपको लुहारों, चमारों आदि की दूकानें भी पूर्व के वातावरण का बोध कराती हैं।

अब हमने एक ऐसी टैक्सी-मोटर का प्रबन्ध किया, जिसका ड्राइवर अंग्रेजी जानता था। और इस टैक्सी पर हम नवीन एवं प्राचीन दोनों प्रकार के एथिन्स को पूर्ण रूप से देखने के लिए रवाना हुए।

निश्चित ही एथिन्स का सबसे सुन्दर स्थल आर्कोपोलिस पर्वत पर पोर्थेनोन के खण्डहर हैं। यहां एथीना का मन्दिर था जो संगमरमर का बना था और प्राचीन यूनानी कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना बताया जाता है। १६८७ ई० तक यह मन्दिर ज्यों का त्यों रहा किन्तु १६८७ में भूकम्प का धमाका होने से इसे विशेष क्षति पहुंची। आज इस मन्दिर में केवल स्तम्भ-मात्र हैं और एथीना की मूर्ति भी नहीं है, फिर भी यह एक महान उत्कृष्ट कलाकृति है। सहसा मैं कल्पना के पांखों पर गया और सोचने लगा, कैसा भव्य रहा होगा यह [illegible]। समय यह अपने पूर्ण यौवन पर था। इस मन्दिर के [illegible] आधुनिक एथिन्स नगर दिखाई देता है। पीनियम

यहां से दिखाई पड़ता है जो प्राचीन यूनान का सबसे प्रति
ष्ठित मन्दिर है। इस मन्दिर से हमें इसके निर्माण की वास्तुक
। कुशलता और सौंदर्य-बुद्धि का परिचय मिलता है।

हम ओलिम्पियन जीयस का मन्दिर भी देखने गए। वहां प
विशाल स्तम्भ स्थित हैं। यह मन्दिर पहले दोनों मन्दिरों के
ा है, किन्तु यूनान के सबसे बड़े मन्दिरों में से है। जनश्रुति है
यह मन्दिर उस स्थल पर निर्मित है जहां प्रलय का जल भू
विलीन हो गया था।

नयी चीज़ों में होटल के सामने का मैदान तो हमारा
विशेष रूप से आकर्षित कर ही चुका था, इसके अतिरिक्त जिन
इमारतों ने हमें सबसे अधिक प्रभावित किया, वे थीं एथिन्स के
विद्यालय और अकादमी की इमारतें। विश्वविद्यालय की इमा
विशेषता थी उसकी चार मूर्तियां। इमारत के ऊपर की गुम्बज़ मे
ओर यूनान की पुरानी देवी 'एथीना' और एक पुराने देवता 'अपा
मूर्ति बनी है। एथीना की मूर्ति वस्त्र पहने हुए है, पर अपालो के
मुकुट और ऊपर के शरीर पर इधर-उधर कुछ वस्त्र के प्रद
अतिरिक्त शेष मूर्ति नग्न है। दोनों मूर्तियां नई हैं, पर
चेहरे और अंग पुरानी यूनानी कला के अनुरूप हैं। यूनान
एवं चित्र दोनों कलाओं में पुरुषों और स्त्रियों को अधिक
रूप में ही प्रदर्शित किया गया है। इसका कारण मानव-
सौंदर्य का प्रदर्शन है, कोई कामुक भावना नहीं और सच्ची
इन मूर्तियों तथा चित्रों के दर्शन से मन में कोई विकारमय
उत्पन्न भी नहीं होती। नीचे की सीढ़ियों के दोनों ओर सु
अफलातू की मूर्तियां थीं। ये भी कोई प्राचीन काल की
मूर्तियां नहीं हैं, आधुनिक काल में ही बनी हैं, पर कित

भी इकंगा जीवन ही होगा। जीवन में अध्यात्म और अधिभूत दोनों का उचित मिश्रण होने से ही वह पूर्ण जीवन हो सकता है।

दूसरे दिन हमने यूनान के दो अजायबघर देखे। इनमे एक का नाम था 'बिनैकी म्यूज़ियम' और दूसरे का 'नेशनल म्यूज़ियम'। बिनैकी म्यूज़ियम का संग्रह विविध प्रकार का है—मूर्तियां, चित्र, कपड़े, आभूषण, हथियार आदि। सारा संग्रह बडी सुन्दरता से सजाया गया है, परन्तु संग्रह में हमें कोई विशेषता न जान पड़ी। नेशनल म्यूज़ियम देखकर तो हमें बडी निराशा हुई। हम आशा करके गए थे कि वहां हमें यूनान की वे मूर्तियां देखने को मिलेगी जिनकी छोटी-छोटी प्रतिमूर्तियां एव चित्र हम न जानें कितने वर्षों से कितने स्थानों एवं कितने रूपों में देखते आ रहे हैं। परन्तु वहां जाने पर मालूम हुआ कि वह सारी सामग्री गत लडाई के समय बन्द करके रख दी गई है। लड़ाई समाप्त हुए वर्षों बीत चुके थे और इन वर्षों में दुनिया में न जाने कितनी नई-नई एव महत्त्वपूर्ण बातें हो चुकी थीं, फिर इस सामग्री को यूनान वालों ने अब तक क्यों बन्द रखा है, यह हमारी समझ में न आया। नेशनल म्यूज़ियम का जो संग्रह इस समय वहां था वह यूनान के प्राचीन इतिहास की दृष्टि से सर्वथा नगण्य था। इन दोनों अजायबघरों में कोई विशेषता न होने पर भी मिस्र के मुरदों का अजायबघर देखने से मेरे मन पर जैसा प्रभाव पडा था, वैसा कोई बुरा प्रभाव न पड़ा।

प्राचीन काल की तरह आज भी एथिन्स यूनान की राजधानी है, किन्तु उसका गौरव उसके वर्तमान मे न होकर उसके अतीत में है। एथिन्स के ध्वस्त खडहर हमें उस वैभव का स्मरण कराते हैं जो कभी था और आज नहीं है, किन्तु कला और संस्कृति के प्रेमी आज भी इस नगर के आकर्षण से बच नहीं सकते।

यूनान का नाममात्र लेने से उस पुरातन देश का स्मरण हो आता है जहां सर्वोत्तम श्रेणी के साहित्य और कला का सृजन हुआ

था। मिस्र, चीन और भारत की तरह इस देश को भी मानव-संस्कृ
का एक उद्गमस्थल होने का गौरव प्राप्त है। वर्तमान युग में यूनान
उतना अधिक महत्त्व भले ही न हो, किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से
भी यूनान सारे संसार को, विशेषकर पश्चिमी संसार को, अनेक
प्रभावित किए हुए है।

दक्षिण की ओर यूनान प्रायद्वीप भू-मध्यसागर से घिरा हुआ है
उत्तर में अल्बानिया, यूगोस्लाविया और बल्गारिया ये तीन बाल्क
देश हैं। यूनान का पश्चिमी तट बहुत ऊंचा और पहाड़ी है। इस त
पर बन्दरगाहों का सर्वथा अभाव है। इसके विपरीत पूर्वी तट खाड़ि
और बन्दरगाहों से परिपूर्ण है। लगभग सभी बड़े-बड़े नगर पूर्वी त
पर बसे हैं। इटली और यूनान में यही अन्तर है कि इटली के प्र
प्रमुख नगर पश्चिमी तट पर हैं जबकि यूनान के पूर्वी तट पर। यूना
में कोई २२० टापू हैं, जिनमें सबसे बड़ा क्रीट है।

यूनान का इतिहास ईसा के जन्म से कई शताब्दी पहले का है
होमर कवि ईसा से कोई एक हजार वर्ष पहले हुआ था। सम्पूर्ण
यूनानी संस्कृति ईसा से पहले की है। यूनान देश को तब हैलस कहते
थे और यहां के निवासी हैलेनीज कहलाते थे। यूनान तब एक संयुक्त
राष्ट्र के रूप में संगठित न था बल्कि 'नगर-राज्यों' में विभक्त था। इस
प्रकार के छोटे-छोटे राज्य होने का कारण भौगोलिक भी हो सकता
है, क्योंकि सारा यूनान पर्वत-श्रेणियों द्वारा विभक्त है। इस प्रकार
हर एक प्रदेश में अपने अलग शासन तथा रीति-रिवाज और कानून
रहे होंगे। इन राज्यों मे आपसी सद्भाव अथवा मेल-जोल नहीं पाया
जाता था। पारस्परिक स्पर्धा और लड़ाई-झगड़ों में ही अन्त में यूनान
की शक्ति का ह्रास हो गया।

यद्यपि उस युग में यूनान में कोई डेढ़ सौ नगर-राज्य थे, पर सबसे
बड़ा नगर-राज्य एथिन्स था। यह स्थान समुद्री शक्ति, साहित्य, कला
और विद्या का भी केन्द्र था। इसके अतिरिक्त पश्चिम में बोइटिया
और दक्षिण में स्पार्टा नामक नगर-राज्य थे। स्पार्टा-निवासी साहसी

में रायल) होटल में की थी। हवाई अड्डे से हम होटल आए। रास्ते में हमें रोम नगर का कुछ भान हो गया। काहिरा और एथिन्स के सदृश रोम भी एक आधुनिक नगर है, पर कई जगह दिल्ली के पुराने फाटकों और शहरपनाह के सदृश यहां भी प्राचीन रोम के कुछ फाटक तथा यहा-वहा से टूटी हुई चाहरदीवारी के कुछ हिस्से दीख पडते हैं। कुछ संगमरमर के प्राचीन मकान भी हैं और उनपर कुछ मूर्तियां। रोम में काहिरा और एथिन्स के सदृश स्वच्छता हमे दृष्टिगोचर न हुई। यहां के निवासियों में हमें नेहुए वर्ण की भाई और अधिक दिखाई दी। स्त्री-पुरुष सभी की वेश-भूषा यूरोपीय थी।

रात को एक मार्ग-प्रदर्शक की पर्यटक बस में अन्य अनेक यात्रियों के साथ हम रात्रि के रोम को देखने चले। रात्रि को रोम सचमुच सुन्दर जान पड़ा। बिजली के भिन्न-भिन्न रंगो के ट्यूबों से बने हुए बाजारों की दुकानों के साइनबोर्डों तथा अन्य प्रकार के बिजली के प्रकाश से सारा नगर जगमगा रहा था। दोपहर को हवाई अड्डे से होटल जाते हुए हमें रोम में स्वच्छता की जो कमी दृष्टिगोचर हुई थी रात्रि को वह भी छिप गई थी। पर्यटक बस चलती जाती और मार्ग-प्रदर्शक लाउड स्पीकर द्वारा स्थानों का वर्णन करता जाता, अंग्रेजी और फासीसी दो भाषाओं में।

सबसे पहले हमें एक फव्वारा दिखाया गया। इसकी पानी की धाराएं नीचे लगे बिजली के बल्बों के कारण रग-बिरगी हो गई थी। फव्वारे को भली भांति देखते हुए हम रोम की संगमरमर की प्रसिद्ध इमारत, विक्टर इमेनुअल मेमोरियल पहुचे। बस यहां खड़ी हो गई और हम सब यात्रियों ने बस से उतर इस इमारत का निकट से परीक्षण किया। मार्ग-प्रदर्शक ने इस इमारत का पूरा विवरण बताया जो इस प्रकार है—सम्राट इमेनुअल द्वितीय के स्मारक के रूप में इस इमारत का निर्माण सन् १८८५ से १९११ के बीच हुआ था। यह स्मारक इटली की एकता और स्वतन्त्रता का प्रतीक माना जाता है। इसका यह काम सम्राट विक्टर द्वितीय के शासन-काल में

[illegible] हुआ था। इसका आर्किटेक्ट [illegible] नामक कलाकार ने तैयार
किया था। यह भवन [illegible] का बना हुआ है। [illegible]
[illegible] की कला की पुष्टि है। इस इमारत को देखने के पश्चात्
हम रोम के कुछ पुराने भवनों को देखने गये। इसके बाद हम पहुंचे
रोम के एक पुराने [illegible] एक रेस्त्रां है। रेस्त्रां में
[illegible] रोम की प्रसिद्ध [illegible] मदिरा
पी, जो हम दोनों ने [illegible]। कहा जाता है कि रोम की
मदिरा [illegible] में सबसे सस्ती होती है और इसे [illegible] भी [illegible]
कि पानी से भी उसकी कीमत कम।

रेस्त्रां से गए हम रोम के एक प्रसिद्ध रात्रि-क्लब में। रात्रि-
क्लब की लीला जीवन में हमने सर्वप्रथम रोम में ही देखी। यह रात्रि-
क्लब हम लों कामवासनाओं के उभारने तथा अभिसार करने का
[illegible] दृष्टिगोचर हुआ। एक विशाल मण्डप में सैकड़ों
कुर्सियां पड़ी हुई थीं। एक ओर था रमभय, बिगार [illegible], वायलिन
आदि सारे पश्चिमी वाद्य-यन्त्रों का एक मण्डा आर्केस्ट्रा बज रहा था।
मण्डप की कुर्सियां भरी हुई थीं नर और नारियों से, जो खा रहे थे,
पी रहे थे, धीरे-धीरे वार्तालाप करते हुए मुस्करा रहे थे, और
झूम रहे थे। सबसे अधिक पी जा रही थी वारुणी। आर्केस्ट्रा के
सामने कभी होता था नृत्य और कभी गान। इटली की भाषा तो हम
जानते न थे, अतः जब गान होता तब गायकों की स्वर-लहरी ही हम
सुन पाते तथा उन स्वरों के साथ देख पाते गायकों के हाव-भाव, हां
नृत्य हम उसी तरह देख सकते जिस तरह अन्य लोग। नृत्य की
अपनी एक भाषा होती है जिसे कहा जाता है मुद्राएं और जो मुद्रा
शास्त्र में पारंगत नहीं होते वे इन मुद्राओं का एक-सा ही अर्थ लगा
हैं। फिर इस रात्रि-क्लब के नृत्य की मुद्राओं का अर्थ समझ सकना
तो बड़ा ही सरल था। उनमें भारतीय नृत्य-पद्धतियों—भारत-
नाट्य, कथाकली, गरबा, मंनपुरी और कथक पांचों में से किसीकी
भी गूढ़ता न थी। रूस की प्रसिद्ध नर्तकी मैडम पवलवा की इस

वरण को, कि भारत ने ही नृत्यकला और वैज्ञानिक नृत्यकला क
प्रथम आविष्कार किया है और भारत की नृत्यकला सर्वोत्कृष्ट
यकला है, यद्यपि अनेक वर्ष बीत चुके थे तथा भारत के प्रसिद्ध
क श्री उदयशंकर और रामगोपाल आदि की पश्चिम सराहना भी
फी कर चुका था, परन्तु इस रात्रि-क्लब के इस नृत्य में उन मुद्राओं
कोई स्थान न था। यहां के नृत्य की तो सारी मुद्राओं का ए
अभीष्ट था—कामुकता। ये नृत्य कर रही थी रोम की कुछ तरुणियां
नके शरीर केवल दो स्थानों पर ही ढके हुए थे—वक्षस्थल कोई चार
र इंच डायमीटर की चोलियों से और जांघों के बीच कोई तीन-ती
व चौड़ी पट्टियों से। शेष सारे अंग खुले हुए थे। एथिन्स में जल-विहा
रने वाली सुन्दरियों के शरीर पर भी हम वस्त्रों की कमी देख चु
, पर यह रात्रि-क्लब तो इस दृष्टि से एथिन्स के समुद्र-तट से क
गे बढ़ा हुआ था।

जब हम लोग यहां पहुंचे तो यह पौने सोलह आना तक न
रीरों वाला कामुक नृत्य वहां की छः तरुणियां कर रही थीं। इसक
ाद हुआ एक गान और फिर एक पुरुष और स्त्री का नृत्य। यह
रुष-स्त्री का नृत्य क्या एक बलशाली कामुक कुश्ती थी। कामलीला
ं बल की पराकाष्ठा तक प्रयोग कर प्रदर्शन इस नृत्य का उद्देश्य
ा। और इस नृत्य के बाद रंगमंच दे दिया गया दर्शकों को नाचने
े लिए। नृत्यों के दर्शन से दर्शकों की भावनाएं उत्तेजित हो ही चुकी
थीं, उन्हें और भी सहायता पहुंचाई होगी मदिरा ने। अब दर्शकों की
एक-एक जोड़ी खूब नाची। हमारे साथ के दो यात्री भी उन छः
नृत्य करने वाली छोकरियों में से दो को लेकर नाचने लगे। जब
दर्शकों का यह नृत्य जी भर कर हो चुका तब फिर से पहले वाले
नृत्यों की ही द्वितीय आवृत्ति हुई और सारा कार्यक्रम समाप्त हुआ
कोई सवा बजे रात्रि को।

यूरोपीय सभ्यता में इस प्रकार के नर-नारियों के सम्मिलित
सामूहिक नृत्य का अपना एक स्थान है, पर उनमें तथा रात्रि-क्लब

जाता है यहां के व्यवस्थापकों को इनकी टिकटों से ! इन संस्थाओं की सारी सुव्यवस्था का शायद यही प्रधान कारण है। वैटिकन का अजायबघर देखने के बाद हमने वैटिकन के शेष स्थल भी सरसरी दृष्टि से देखे, अनेक तो दूर से ही, और वैटिकन का कुछ हाल भी समझने का यत्न किया। वैटिकन राज्य पोप की प्रभुसत्ता के अधीन एक स्वतन्त्र राज्य है। यह ससार का सबसे छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल सौ एकड से कुछ अधिक है और जनसंख्या भी एक हजार से बहुत अधिक नही है। पुलिस-व्यवस्था इटली की पुलिस के पास है। १८७० मे इटली में एकता स्थापित होने के बाद ११ फरवरी, १६२६ मे लाटेरान की सधि द्वारा वैटिकन नगर की स्थापना हुई। वैटिकन के अधिकतर भाग को वैटिकन प्रासाद और सेंट पीटर गिरजाघर घेरे हुए हैं। वैटिकन प्रासाद चीन की राजधानी पीकिंग मे वहा के सम्राट के महल के बाद ससार का सबसे बडा प्रासाद है। यह पचपन हजार वर्गमीटर मे बना हुआ है, इसमे बीस आगन हैं और लगभग डेढ़ हजार आलय और कमरे आदि हैं। न केवल अपने आकार के कारण बल्कि ऐतिहासिक और कलात्मक दृष्टि से भी यह महल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। १४५० मे निकोलस पचम के बाद के सभी पोपो ने इसको अधिकाधिक समृद्ध बनाया है।

सेंट पीटर गिरजाघर के सम्मुख २६० फुट लम्बा और २१५ फुट चौडा एक चौक है। इसमे अण्डाकार चार-चार की कतार मे स्तम्भ खडे हुए हैं, जिनपर छत है। स्तम्भो की सख्या २८४ है और ऊपर महात्माओ की १४० मूर्तियां हैं। गिरजाघर के लिए सीढ़ियों पर चढने से पहले ही सेंट पीटर की मूर्ति के दर्शन होते हैं। कितनी भव्य है वह मूर्ति, कितना सौम्य है सारा दृश्य ! वर्तमान गिरजाघर उस स्थान पर बना हुआ है जहां सेंट पीटर की कब्र के पास सम्राट कान्स्टेन्टाइन का प्रासाद था। सेंट पीटर गिरजाघर के भीतरी भाग मे प्रवेश करने के लिए पाच द्वार हैं। दाईं ओर का पहला द्वार जयन्ती द्वार कहलाता है। यह पचीस वर्ष में केवल उसी समय खोला

जाता है क्योंकि जयन्ती-समारोह होते हैं। सेंट पीटर गिरजाघर में रोमन कला की महत्ता स्पष्ट है। यहीं के कारण हम सेंट पीटर गिरजाघर को उतनी अच्छी तरह से न देख सके जितनी अच्छी तरह से हमने बाद में इटली में दूसरे प्रसिद्ध गिरजाघर सेंट पाल को देखा।

तीसरे पहर तीन बजे हम सबसे पहले रोम के प्रसिद्ध सेंट पाल गिरजाघर को देखने गए। कितना विशाल, भव्य और सुन्दर यह गिरजाघर है! बनावट तथा उसकी सामग्री में तो नहीं, परन्तु विशालता, भव्यता और सौन्दर्य में इसका पूरा मिलान काहिरा की मुहम्मद अली की मस्जिद से हो सकता है। जैसा विशाल, भव्य और सुन्दर यह गिरजाघर है वैसी ही काहिरा की वह मस्जिद। और दोनों हैं उस ईश्वर और जगदीश्वर की वन्दना के स्थान। मुझे एकाएक दक्षिण भारत के ऐसे ही विशाल, भव्य और सुन्दर श्रीरंग, रामेश्वर एवं मीनाक्षी देवी के मन्दिरों का स्मरण हो आया। उन मन्दिरों के गोपुरों, मण्डपों आदि में भी ऐसी ही विशालता, भव्यता और सौन्दर्य दिखता है—चाहे बनावट सर्वथा दूसरे प्रकार की ही क्यों न हो। तो स्थापत्यकला की भिन्न-भिन्न प्रणालियों से इन वस्तुओं का मन पर जो प्रभाव पड़ता है उस प्रभाव में कोई भिन्नता नहीं है चाहे स्थापत्यकला भिन्न-भिन्न प्रकार की हो, पर यदि निर्मित वस्तु में विशालता है, भव्यता है और सौन्दर्य है तो मन पर उस वस्तु का प्रभाव एक-सा ही पड़ेगा। हाँ, इस दर्शन से आनन्द प्राप्त करने के लिए मन को उदार होने की आवश्यकता अवश्य है। मन में संकीर्णता है और धर्मान्धता की इस प्रकार की भावना है कि चाहे हाथी के पैर के नीचे कुचल जाओ पर जैन मन्दिर में पैर न रखो, तो फिर मन को कोई आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए गांधी जी की प्रार्थना के समय 'रघुपति राघव [illegible] राम' के साथ 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' भी गाया जाता था। [illegible], मैं काहिरा की मुहम्मद अली की मस्जिद और रोम के [illegible] [illegible] के दर्शन से कुछ वैसे ही आनन्द की उत्पत्ति हुई [illegible]

रत में दक्खिन के विशाल मन्दिरों के दर्शन के समय हुई थी और
र आनन्द में मुझे उस परमपिता परमात्मा की भी याद आई जिसकी
हानता के स्मरण के लिए ही इन महान वस्तुओं का निर्माण हुआ
। हां, काहिरा की मस्जिद और रोम के इस गिरजाघर की कब्रें
मुझे जरा भी अच्छी न लगी। नित्य के उस दर्शन की मन में अभि-
षा उत्पन्न कराने के लिए जिन ऐसी वस्तुओं का निर्माण होता है
नमें इस क्षणभंगुर अनित्य शरीर की कब्रें क्यों बनाई जाएं।

सेंट पीटर गिरजाघर के बाद सेंट पाल रोम का सबसे बड़ा
गिरजाघर है। १८२३ के अग्निकाण्ड में जल जाने के बाद लगभग
समूचा गिरजाघर ही फिर से बनाया गया है। यह गिरजाघर कान्स्टें-
टाइन ने बनवाया था। इसी स्थल पर सेंट पाल का सिर उतारा
गया था। पांचवीं शताब्दी में इस गिरजाघर को बड़ा बनाया गया।
समय-समय पर गिरजाघर में और भी सजावट होती रही। अन्त में
इसकी गणना सर्वोत्तम गिरजाघरों में होने लगी, प्रोटेस्टेंट मतानुया-
यियों के सुधार-आन्दोलन से पहले यह गिरजाघर इंग्लैंड के बादशाह
के संरक्षण में रहता था। यह गिरजाघर कालडेरिया के डिज़ाइन के
आधार पर तैयार किया गया है। इसमें १४६ स्तम्भ हैं। मध्य में
सेंट पाल की मूर्ति है। पीछे गुलाबी ग्रेनाइट के दस स्तम्भ हैं।

इस गिरजाघर से हम गए उस स्थान पर जहां किसी ज़माने में
मानव से सिंह को कुश्ती कराई जाती थी और उसे देखने चारों ओर
नर-नारी एकत्रित होते थे। यह स्थान फ्लेवियन वंश के सम्राट वैस्पे-
सियन ने बनवाया था। इसी स्थल पर नीरो के उद्यान की अप्राकृतिक
झील थी। इस इमारत को सम्राट वैस्पेसियन के पुत्र टीटस ने
८० ई० में पूरा किया। इसका उद्घाटन-समारोह सौ दिन तक चलता
रहा और इस बीच कोई पांच हज़ार वन्य-पशुओं का वध किया गया।
भूचाल, मरम्मत न होने और नागरिकों के दुरुपयोग के कारण यह
इमारत बहुत कुछ नष्ट हो गई। इसे कोलोसियम कहा जाता है जो
रोमन सम्राटों का क्रीड़ा-स्थल था और बर्बरता का केन्द्र भी। कोलो-

का ग्राम परिणाम सिंह द्वारा मानव का खाया जाना ही तो होता था और इस भीषण लीला को देखने के लिए इस मकान में उस ज़माने में रोम का सारा सभ्य पैट्रीशियन समाज एकत्रित होता था। रोम के प्राचीनतम इतिहास से विदित है कि जनता दो भागों में विभक्त थी। पैट्रीशियन और प्लेबियन। पैट्रीशियन लोगों के वर्ग को सब प्रकार के राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे। प्लेबियन वर्ग को नागरिकता के भी अधिकार न थे।

इस इमारत को देख हम प्रसिद्ध 'रोमन फोरम' नामक स्थान को गए। रोमन फोरम के स्थल पर किसी समय एक दलदल वाली घाटी थी। रोमन और सैबाइन्स में आपसी संघर्ष होने के बाद जब वे मिलकर एक हो गए तो धीरे-धीरे फोरम ने शहर के राजनीतिक और व्यापारिक केन्द्र का रूप धारण कर लिया। रोम का महत्त्व बढ़ने के साथ-साथ इसका भी महत्त्व बढ़ा। रिपब्लिकन युग में बाज़ार आदि को यहां से हटाकर आसपास की बस्तियों में ले जाया गया और उनकी जगह सभा-भवन और न्यायालयों की स्थापना की गई। बाद में सीज़र की योजना के अनुसार, जिसे कुछ काल पश्चात् आगस्टस ने पूरा किया, फोरम के दक्षिण भाग का निर्माण किया गया। तीसरी शताब्दी के अन्तिम काल में अग्निकाण्ड में यह बहुत कुछ नष्ट हो गया। बर्बरों के आक्रमणों से, भूचाल आने से, और ठीक-ठीक देख-भाल न होने से धीरे-धीरे इसको क्षति ही पहुंचती गई।

रोमन फोरम से चलकर हमने रोम की कुछ प्रधान मूर्तियों को देखा।

चौथे दिन प्रातःकाल हमारी जिनीवा तक रेल-यात्रा आरम्भ होनी थी। रोम से हमारी गाड़ी सात बजे प्रातःकाल चल साढ़े दस बजे फ्लारेन्स पहुंचने वाली थी। चार बजे प्रातःकाल उठ, नित्य कर्म से निवृत्त हो हम रोम स्टेशन पहुंचे। बड़ा भारी स्टेशन था। रोम के स्टेशन के बाहर एक स्मारक है जो [illegible] सैनिकों की यादगार में बनाया गया है। [illegible] है।

का काम करने का निश्चय कर फ्लारेन्स के सम्बन्ध में अंग्रेजी भाष
की एक पुस्तक खरीदी। जगमोहनदास ने इस पुस्तक में से पहले यह
के महत्त्वपूर्ण स्थानों को छांटा और फिर एक टैक्सी ले हम लोग
रवाना हुए।

फ्लारेन्स देखने के लिए रवाना होते ही मालूम हो गया कि
फ्लारेन्स सचमुच बडा ही सुन्दर स्थान है। पहाड़ियों से घिरा हुआ
यह स्थान बड़ा हरा-भरा है। कुदरती हरीतिमा के सिवा हजार
दरख्त लगाए गए हैं। चीड़ और देवदारु वृक्षों की भरमार है। सडक
के दोनों ओर ऐसे घने और सीधे वृक्षों की पंक्तियां हैं कि सडकें कु
बन गई हैं। स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे पार्क, उनमें रंग-बिरंगे पुष्प
ने इस हरियाली को और भी सुन्दर बना दिया है। इमारतें सर्वत्र
आधुनिक। सफाई उत्कृष्ट से उत्कृष्ट। नगर और उसके आसपास
स्थानों को देखते-देखते हमारी मोटर उस स्थान को चढ़ने लगी जा
से सारा नगर उसी प्रकार दिखाई देता है जैसा बालकेश्वर पहाड़
बम्बई। इस पहाडी पर जो सडक जाती है उसके दोनों ओर वृ
देखते ही बन पड़ते हैं। पहाडी पर चढ़ने पर एक सुन्दर मैदान मिल
है और यहा से पहाड़ियों की गोद में बसा हुआ फ्लारेन्स नगर दी
पड़ता है। सारा दृश्य अत्यन्त रमणीय है। इस स्थल को माइके
एंजेलो हिल कहते हैं। माइकेल एंजेलो रोम के विश्वविख्यात चि
कार थे। उन्हींके नाम पर इस पहाड़ी का निर्माण किया गया है
मैदान में माइकेल एंजेलो की एक ब्रांज की सुन्दर मूर्ति है और
मूर्ति के चारों ओर रंग-बिरंगे पुष्पों से भरा हुआ एक छोटा-सा पा
एक रेस्तरां की सुन्दर छोटी-सी इमारत भी बनी हुई है। सारा स
इतना मनोहारी था कि हमने तय किया कि फ्लारेन्स के अन्य स्थ
को देखने के पश्चात् फिर हम यहीं आएंगे और आज सन्ध्या
भोजन इसी रेस्तरां में करेंगे।

यहां से हम लोग फ्लारेन्स के दो चित्रों के विशाल चित्र-सा
को देखने गए, उनमें एक का नाम था पिट्टी गैलरी और दूसरे

उफीजी गैलरी । उफीजी गैलरी में तो कोई विशेष बात न थी, प
पिट्टी गैलरी के सदृश चित्र-संग्रह कदाचित् संसार में कहीं न होगा।
माइकेल एंजेलो और रैफिल रोम के दोनों विश्वविख्यात चित्रकार
एवं अनेक प्राचीन और अर्वाचीन चित्रकारों के मूल चित्र यहां संग्रही
है। अनेक चित्रों की विशालता, भव्यता और सौन्दर्य देखते ही बनत
है। यद्यपि चित्र एक सतह पर बने हैं पर चित्रों की चित्रकारी कु
इस प्रकार की गई है कि उनमें गहराई तक दृष्टिगोचर होती है
इन चित्रों को देख हमने चित्रशालाओं के भवन के बाहरी भाग
मूर्तियों का अवलोकन किया।

फ्लारेन्स से वेनिस गाड़ी एक बजे रात के लगभग जाती थी। छ
बजे प्रातःकाल हम वेनिस पहुंच गए।

स्टेशन के बाहर आते ही हमें वेनिस का सौंदर्य दीख पड़ने लगा
सचमुच वेनिस एक विचित्र नगर है और उसकी सबसे बड़ी विचित्रता
है उसकी पानी की सड़कें तथा गलियां। वेनिस का सारा आवागमन
डोंगों और मोटर-बोटों द्वारा होता है। वेनिस उन अनेक नगरों की
तरह नहीं है जिन्हें प्राकृतिक वरदान प्राप्त होता है। उसको जो कुछ
प्रदान किया है, मानव ने ही अपने श्रम से प्रदान किया है। विपरीत
परिस्थितियों का सामना करके भी मनुष्य जो कुछ कर सकता है,
वेनिस इसका ज्वलन्त उदाहरण है। वेनिस नगर बड़े नियमित ढंग
से बसाया गया है। वह साढ़े इक्कीस मील लम्बा है और सवा तेरह
मील चौड़ा।

हम एक डोंगे पर बैठ, उसीपर अपना सामान रख, किसी होटल
की खोज में रवाना हुए। हमारा डोंगा अनेक पानी की सड़कों और
गलियों को पार करता हुआ पानी के ही उस मैदान में पहुंचा जिसके
चारों ओर वेनिस की प्रधान इमारतें बनी हुई हैं। जिन पानी की
सड़कों और गलियों को पार करता हुआ हमारा यह डोंगा इस पानी
के मैदान में पहुंचा, उनमें से अनेक सड़कों और गलियों का पानी बहुत
गंदा हो गया था और कई स्थानों पर तो बदबू भी आ रही थी।

वर्षों तक पानी के एकत्रित रहने का ही यह परिणाम था और यह नहीं कि सफाई की कोई व्यवस्था न हो, यदि सफाई की कोई व्यवस्था न होती तो मानवों का यहां रह सकना ही कठिन हो जाता।

वेनिस के पानी के इस मैदान की इमारतों में से अनेक में होटल भी हैं। कठिनाई से हमें 'रेंजीना' नामक होटल में जगह मिली।

नित्य कर्म से निवृत्त हो हम मार्ग-प्रदर्शक के साथ वेनिस देखने रवाना हुए। इस मार्ग-प्रदर्शक की व्यवस्था और अन्य मार्ग-प्रदर्शकों की व्यवस्था में यही अन्तर था कि अन्य मार्ग-प्रदर्शक मोटरबोट में दर्शकों को ले जाते थे और यह मार्ग-प्रदर्शक दर्शकों को डोंगी में लेकर चला।

वेनिस में हम सेंट मार्क का गिरजाघर, डोगेज का प्रासाद, ललित कला अकादमी और सार्वजनिक बाग देखने गए। सेंट मार्क के गिरजाघर जैसी सुन्दर इमारतें तो मसीही धर्म वाले क्षेत्र में इनी-गिनी मिलेंगी, और जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में सेंट मार्क की इमारत भव्य और सुन्दर है, उसी प्रकार डोगेज का प्रासाद गौरव और ऐश्वर्य का केन्द्र है।

सन्ध्या को अपने होटल के पीछे के कुछ भागों को हमने पैदल ही घूमकर देखा। जब हम होटल में रात्रि का भोजन कर रहे थे तब बिजली की बत्तियों से सजी हुई एक नाव हमारे सामने से निकली। इस नाव में एक सुरीला आरकेस्ट्रा बज रहा था और एक युवती गा रही थी। सुना कि इस पानी के मैदान में हर दिन-रात्रि को यह नाव नाना प्रकार के वाद्य-यन्त्र बजाती और गाती हुई निकलती है।

भू-मध्यसागर में इटली देश की स्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। समूचे भू-मध्यसागर को मानो वह दो क्षेत्रों में विभक्त करता है। पश्चिम में कोई सवा तीन लाख वर्गमील समुद्र है और पूर्व में लगभग इसका दूना। इसके अतिरिक्त इटली का दक्षिणी छोर और सिसली लगभग अफ्रीका महाद्वीप को छूते हुए हैं। इस केन्द्रीय स्थिति के

प्रश्न उठा। इटली की स्वतन्त्रता और एकता के निर्माता हैं मेजनी, गैरीबाल्डी और केबूर। इन तीन व्यक्तियों की चर्चा किए बिना इटली का कोई भी इतिहास पूरा नहीं कहा जा सकता। मेजनी की नैतिकता, गैरीबाल्डी के बल-प्रयोग, केबूर की राजनीतिक सूझ-बूझ से इटली ने वह रूप धारण किया जिसके कारण बाद में वह संसार के शक्तिशाली राज्यों में गिना जाने लगा।

इटली के इतिहास में मेजनी का बड़ा महत्त्व है। इस बात को समझने वाला वह पहला व्यक्ति था कि इटली की एकता प्रयत्नसाध्य है। अपने इस विश्वास को अन्य व्यक्तियों में भी फूंकने में वह सफल हुआ। परिणाम यह हुआ कि इटली का नवयुवकवर्ग देशप्रेम में मग्न हो उठा। इस प्रकार मेजनी इटली की स्वतन्त्रता और एकता का पैगम्बर सिद्ध हुआ। मेजनी का जन्म १८०५ में हुआ और मृत्यु १८७२ में।

गैरीबाल्डी ने तलवार के जोर से इटली को एक करने का प्रयत्न किया। उसने सिसली और नेपल्स पर विजय प्राप्त की और रोम पर भी धावा बोलने की ठानी, किन्तु इससे फ्रांस के साथ युद्ध आरम्भ हो जाने का खतरा था। यहां केबूर की राजनैतिक दूरदर्शिता ने सहायता की। उसने नेपोलियन तृतीय के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित किए। उसका विश्वास प्राप्त किया और सहायता भी, और ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी कि अन्त में रोम भी इटली का अंग बन गया। रोम को स्वतन्त्र और संयुक्त इटली की राजधानी बनाया गया। और इस प्रकार मेजनी का स्वप्न साकार हुआ। गैरीबाल्डी एक कुशल सेनापति था। मेजनी ने जो जीवनदायिनी शक्ति अपने विचारों से उत्पन्न की थी और केबूर ने जिसे अपनी राजनीतिकता से सुरक्षित बनाया, उसे गैरीबाल्डी ने बहुत हद तक मूर्त रूप प्रदान किया।

केबूर राजनीतिशास्त्र का प्रकाण्ड विद्वान था और इटली के देशभक्तों में केवल उसीने यह अनुमान लगाया था कि विदेशी सहायता के बिना इटली का उद्धार सम्भव नहीं।

इटली की एकता और संगठन का काम विक्टर इमैनुएल के शासन-काल में सम्पन्न हुआ। वह १८६१ ईस्वी में शासनारूढ़ हुआ था।

आस्ट्रिया और जर्मनी के साथ बचाव-सन्धि कर लेने पर भी इटली १९१५ में मित्रराष्ट्रों की ओर से पहले महायुद्ध में सम्मिलित हो गया। वर्साई की सन्धि के पश्चात् इटली को काफ़ी निराशा हुई, क्योंकि न तो उसे भूमध्यसागर में मनोवांछित नियन्त्रण-स्थान प्राप्त हुआ और न उसे उपनिवेश बढ़ाने की ही सुविधा मिली। मुसोलिनी ने इटली के इस असन्तोष से लाभ उठाकर १९२२ से १९४३ तक के समय में उसे एक फासिस्ट राज्य का रूप दे दिया। पहले यह फासिस्ट राज काफ़ी सहिष्णु रहा और उसने राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) के साथ काफ़ी सहयोग भी किया, पर बाद में जर्मनी की शह पाकर इटली साम्राज्यवादी होने लगा। द्वितीय महा-युद्ध में इटली ने जर्मन के साथी के रूप में प्रवेश किया। आरम्भ में तो इटली और जर्मनी-पक्ष की विजय होती रही, किन्तु बाद में पासा पलट गया और १९४३ में इटली ने मित्रराष्ट्रों के सामने आत्म-समर्पण कर दिया। इटली की हार का भी मूल कारण वही था जो उसके दूसरे साथी देशों की हार का, अर्थात् साधनों का प्रचुर न होना। वर्तमान युग में युद्ध का निर्णय बाहुबल अथवा सैन्यबल से नहीं होता, हां, कुछ काल के लिए इनका प्रभाव अत्यन्त घातक हो सकता है। जर्मनी के पास प्रथम श्रेणी की सेना थी और हथियार भी आधुनिकतम थे, किन्तु जब लड़ाई लम्बी खिंचने लगी तो धीरे-धीरे उसके साधनों ने भी जवाब दे दिया। इधर मित्रराष्ट्रों के पास साधनों का बाहुल्य था। लड़ाई में भाग लेनेवाले प्रमुख देश थे—रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका।

इटली की अर्थ-व्यवस्था पर विचार करते हुए उस भीषण विनाश को याद रखना आवश्यक है जो द्वितीय महायुद्ध के कारण हुआ। इटली युद्ध का प्रमुख स्थल था और घनी आबादी होने के कारण विनाश की विभीषिका द्विगुणित हो गई थी। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय

स्थिति होने के कारण इटली मित्रराष्ट्रों के आक्रमण का शिकार हुआ और शत्रुराष्ट्रों के आक्रमण का भी।

युद्ध से पूर्व इटली में उसकी आवश्यकता का ६४ प्रतिशत भाग पैदा होता था। युद्धकाल में इस उत्पादन में काफी कमी हो गई और अब तक भी स्थिति को पूरी तरह सुधारा नहीं जा सका है। इटली के उद्योग की स्थिति और भी चिन्ताजनक है। युद्धकाल में बिजली उत्पन्न करने के अनेकों केन्द्र नष्ट हो जाने से अब कारखानों के लिए काफी बिजली प्राप्त नहीं होती। उधर इटली की भूमि-समस्या भी जटिल है। खेती के तरीके भी आधुनिकतम नहीं हैं और भूमि की उपजाऊ शक्ति में भी कमी है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि इटली के उद्योग, व्यापार और कृषि के विकास की भविष्य में भी सम्भावना नहीं।

दूसरे दिन तीसरे पहर की गाड़ी से हम स्विट्ज़रलैंड जाने वाले थे, परन्तु रास्ते में इटली देश का एक प्रधान व्यापारी केन्द्र मिलान नामक नगर पड़ता था। अतः हमने ता० १० अगस्त का दिन मिलान को देना तय कर लिया था। दोपहर को तीन बजे हमारी गाड़ी वेनिस से रवाना होकर पांच बजे के लगभग मिलान पहुंची। मिलान में कोई विशेष बात न थी, पर व्यापारी केन्द्र होने तथा एक नवीन शहर होने के कारण अब तक देखे हुए इटली के सब शहरों की अपेक्षा मिलान हमें अधिक सम्पन्न दिखाई दिया। बड़े-बड़े नये मकान और साफ-सुथरी सड़कें।

मिलान से हमारी गाड़ी तीन बजे के लगभग रवाना होती थी और जिनीवा पहुंचती थी रात को नौ बजे के करीब। रास्ते में हमें आल्प्स पर्वत-श्रेणी को पार करने वाले थे और इस आशा से कि स्विट्ज़रलैंड के रमणीय दृश्य देखने को मिलेंगे, हमारे मन अत्यन्त उत्साहित थे।

अपना सामान ले हम स्टेशन पहुंचे और ठीक समय हमने इटली

देश में स्विट्ज़रलैंड को प्रस्थान किया।

स्विट्ज़रलैण्ड

मिलान से चलकर जब हमारी ट्रेन स्विट्ज़रलैंड की धरती पर आई तब हम समझते थे कि जिस प्रकार भारत में शिमला, दार्जिलिंग आदि की रेलें पहाड़ों पर घूम-घूमकर चढ़ती हैं, और कभी-कभी तो रेल की पांतों के घुमावदार बार-बार रास्ते एकसाथ दीख पड़ते हैं, वैसा ही स्विट्ज़रलैंड के मार्ग में होगा; पर वहां वैसा न हुआ। मैदानों के सदृश मार्ग सीधा था, हां, सुरंगें बार-बार मिलती थीं और इनमें कई काफी लम्बी थीं। दोनों ओर पर्वत-श्रेणियां थीं, कहीं ऊंची, कहीं नीची, कहीं वृक्षों से ढकी हुई सघन हरी, कहीं बिना एक भी दरख्त के एकदम नंगी। बहुत ऊंची श्रेणियों के ऊपरी शिखरों पर बरफ के भी दर्शन हुए, जो अनेक स्थलों पर सूर्य की तेज किरणों में हीरे के ढेरों के सदृश चमक रही थी। कभी-कभी जल-प्रपात भी दृष्टिगोचर हो जाते थे और कभी-कभी पर्वतों के चरणों में बहती हुई पहाड़ी सरिताएं। एक स्थान पर ऐसी ही एक नदी का नीर इतना सफेद था कि जान पड़ता था कि वह नीर की नदी न होकर क्षीर की नदी है। बिजली की रेल तेजी से चली जा रही थी और रेल की उस तेज चाल के कारण जान पड़ता था कि दोनों ओर के पहाड़ हमारे पीछे की ओर जोर से भागे चले जा रहे हैं। सारा दृश्य अत्यन्त मनोरम था, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु इस दृश्य में विशाल झीलों के मिलने तक हमें कोई नई बात न मालूम हुई। भारत में कश्मीर, शिमला, दार्जिलिंग, मसूरी आदि के पहाड़ी दृश्य भी ठीक ऐसे ही हैं; कश्मीर की उपत्यका के दृश्य तो कई स्थानों पर इन दृश्यों से भी कहीं अधिक सुन्दर हैं।

पर ज्योंही जिनीवा झील के दर्शन हुए त्योंही सारे दृश्य में एक

वीनता या गई। यद्यपि कश्मीर की उपत्यका में भी अनेक भीलें
, पर इतनी बड़ी कोई नहीं। जिनीवा भील की लम्बाई पचपन मील
और अधिक से अधिक चौड़ाई नौ मील है। वह चन्द्राकार है। भील
के सब ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां हैं, जिनमे से कई शिखरो पर सदा
बरफ जमी रहती है। अधिकाश पहाड़ियां हरे चीड़ और देवदारु
तरुओं से आच्छादित हैं। ऊपर के शिखरो पर जमी हुई श्वेत बरफ
और उसके नीचे हरी कच्छ; इन पहाड़ियो के भील के जल में प्रति-
बिम्ब पड़ने से दृश्य अत्यन्त सुहावना था। सन्ध्या हो रही थी।
आकाश के निर्मल न होने के कारण दृश्य को और अधिक सुषमा मिल
गई थी, क्योंकि बादलो को अस्त होते हुए अरुण की अशुओं ने कहीं
अरुण, कहीं सुनहरी बना दिया था। इन रगो का प्रतिबिम्ब बरफ से
ढके हुए श्वेत पर्वतो के शिखरो, हरे तरुओ और भील के नीले नीर
पर अनोखा रंग बरसा रहा था। कुछ और अंधेरा होने पर भील के उस
पार बसे हुए छोटे-छोटे गाव में बिजली का प्रकाश फैला। अब तो
हवा के वेग से चलती हुई ट्रेन की चाल के कारण सारा दृश्य एक
स्वप्न-भूमि-सा जान पड़ने लगा। हम तब तक इस दृश्य को निर्निमेष
दृष्टि से देखते रहे जब तक अंधेरे की काली चादर ने सारे दृश्य को
ढककर हमारी आखों से ओझल न कर दिया।

हमें लूसान स्टेशन पर गाडी बदलनी पड़ी। यहा से जिनीवा
पहुचने मे केवल कुछ ही मिनट लगे। जिनीवा पहुचते ही स्टेशन
पर हमे एयर इंडिया इण्टरनेशनल के प्रतिनिधि मिले, जिन्हें हमारे
जिनीवा पहुचने की सूचना स्विट्ज़रलैंड के भारतीय दूतावास ने बर्न
से भेजी थी और किसी अच्छे होटल मे हमारे ठहरने का प्रबन्ध करने
को कहा था।

दूसरे दिन से हमने स्विट्ज़रलैंड घूमना आरम्भ किया। देश का
कुछ हिस्सा, और अत्यन्त मनोरम हिस्सों मे एक, हम मार्ग मे रेल से
देखते हुए आए थे, शेष मे का कुछ भाग हम अपने कार्यक्रम के तीन
दिनो मे देख सकते थे।

[illegible] गई है [illegible]
सामान पहुँचाने वालों का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ [illegible] की [illegible]
[illegible] दृष्टि [illegible] बनाया गया है। इस दृष्टि
[illegible] को [illegible] और को [illegible] देखने वालों [illegible] को और
[illegible] बहुत बढ़ गई है। [illegible] आधुनिक [illegible] है।
[illegible] की [illegible] और [illegible] हैं। [illegible] भी [illegible] है।
[illegible] बहुत [illegible] नहीं [illegible] ही है।

जिनीवा की बात ही क्या [illegible] भी कम है। यों स्विट्ज़रलैंड
भी तो बहुत छोटा देश है, क्षेत्रफल है १५ हजार ९४० वर्गमील और
आबादी है ४७ लाख १३ हजार ९९६। ऐसे छोटे-से देश के नगर
और यहां होने चाहिए, पर देश की आबादी का देखते हुए यहां के
नगरों को बड़ा [illegible] अधिक नहीं मानती है। स्विट्ज़रलैंड के बड़े
बड़े चार नगर हैं, जिनकी आबादी एक लाख से अधिक है। इनमें से
राजधानी बर्न की आबादी १ लाख ३० हजार, ज़ूरिख की आबादी ३
लाख ९६ हजार, बेसल की आबादी १ लाख ९२ हजार और जिनीवा
की आबादी १ लाख २८ हजार है। जिनीवा का नम्बर स्विट्ज़रलैंड
के बड़े नगरों में तीसरा आता है। यह न इस देश की राजधानी है
और न व्यापारी केन्द्र, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से जिनीवा का बड़ा
महत्व है। इसका कारण है यहां लीग ऑफ नेशन्स का वर्षों तक
दफ्तर रहना और अन्तर्राष्ट्रीय अनेक दफ्तरों का होना। फ्रांस के
समीप होने के कारण यहां के प्रदेश में फ्रेंच भाषा अधिक रहते हैं।
बेसल जर्मनी और स्विट्ज़रलैंड के बीच सम्पर्क और आदान-प्रदान का
मार्ग है। जिनीवा उसी प्रकार फ्रांस और स्विट्ज़रलैंड के बीच आदान-
प्रदान का मार्ग है। दोनों ही नगर में एक-एक यूनिवर्सिटी है। ज़ूरिख
का महत्व व्यापार तथा रेल-केन्द्र होने के नाते है। दूसरा कारण यह
है कि वहां स्विट्ज़रलैंड की अकेली टेक्निकल यूनिवर्सिटी है। सारे
यूरोप में यह निराली बात स्विट्ज़रलैंड में ही है कि वर्न देश का सबसे
बड़ा नगर न होते हुए भी वहां की राजधानी है।

जिनीवा में हमें कोई पुराने खण्डहर आदि नहीं मिले अतः एक घण्टे के भीतर हमने सारा नगर घूम डाला। पुराना प्राकृतिक सौन्दर्य और नवीन इमारतें, सड़कें इत्यादि तथा उनकी स्वच्छता के अतिरिक्त अन्य कोई दर्शनीय स्थान देखने को न था। शहर की घुमाई समाप्त कर हम लीग आफ नेशन्स का दफ्तर देखने पहुंचे। यह इमारत और यहां का सारा कार्य देखने योग्य था।

लीग आफ नेशन्स की इस इमारत और पुस्तकालय को देखने के पश्चात् जब हम अपने होटल को लौट रहे थे उस समय हमें लीग आफ नेशन्स की स्थापना से लेकर अब तक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के प्रयत्नों का तथा उसकी असफलताओं की एक के बाद एक घटनाओं का स्मरण आया। सन् १६१४-१८ के युद्ध के बाद अमेरिका के उस समय के प्रेसीडेंट श्री वुडरो विल्सन की राय का परिणाम लीग आफ नेशन्स की स्थापना थी। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति का यह पहला व्यापक प्रयत्न था, इसमें सन्देह नहीं। पर इसकी सबसे बड़ी आरम्भिक ट्रेजेडी यह हुई कि जिस देश के राष्ट्रपति की राय के अनुसार इस संस्था की स्थापना हुई, वही देश इस संस्था में सम्मिलित नहीं हुआ। लीग आफ नेशन्स ने विश्व में शान्ति स्थापित रहे, इसके कम प्रयत्न नहीं किए, पर इन प्रयत्नों के बावजूद सन् ३६ से सन् १६१४-१८ से भी कहीं बड़ा और भीषण संग्राम फिर हुआ और लीग आफ नेशन्स समाप्त हो गई। इस युद्ध के बाद लीग आफ नेशन्स के सदृश ही यू० एन० ओ० की स्थापना हुई। यू० एन० ओ० और लीग आफ नेशन्स में नाम के सिवा अन्य अन्तर बहुत कम है। हां, एक अन्तर अवश्य है—लीग आफ नेशन्स में अमेरिका सम्मिलित नहीं हुआ था, पर यू० एन० ओ० में तो वही सर्वेसर्वा है। जो कुछ हो, प्रश्न यह है कि यदि लीग आफ नेशन्स सफल नहीं हुई तो क्या यू० एन० ओ० को सफलता मिलेगी? उत्तर सरल नहीं है। अब तक यू० एन० ओ० को भी सफलता नहीं मिल रही है। यू० एन० ओ० के रहते हुए ही कोरिया की लड़ाई हुई और शान्ति के उपासक यू० एन० ओ० ने उस लड़ाई

से लड़ना अधिक उपयुक्त मान लिया। सच तो यह है कि अमरीका के स्वार्थ रक्षा के लिए ही वह कोरिया का युद्ध कर रहा है। पर आज जो भी युद्ध में सम्मिलित होते हैं, वह अपना में उद्देश्य बताते हैं। वह समय अब बीत गया, जब युद्ध विजय के लिए लड़ा जाता था और विजयी विजित राष्ट्र पर बहुत वस्तु मांगी जाती थी। आज युद्ध होता है शान्ति के लिए। यू० एन० ओ० के रहते हुए दक्षिण अफ्रीका में वहां के असंख्य निवासियों को मानवोचित अधिकार नहीं मिल रहे हैं और जो मानवोचित अधिकारों के लिए शान्तिमय सत्याग्रह करना चाहते हैं उनपर जो सत्याग्रह करने की सजा दी जाने लगी है। इस समय अन्य कई बसने वाले काम में अफ्रीका के अन्य देश यह बर्बर दण्ड देने की व्यवस्था कर रहे हैं। क्या इससे अधिक कोई बर्बरता मनुष्य से मनुष्य के प्रति सम्भव है ? हमारे देश के कश्मीर-प्रश्न का भी यू० एन० ओ० कोई हल नहीं निकाल सका है। क्या आणविक युद्ध को यू० एन० ओ० रोक सकेगा ? कौन इसका उत्तर दे सकता है ? पर इसीके साथ यह बात भी माननी होगी कि यदि विश्व का पूर्ण संहार नहीं होना है तो लीग आफ नेशन्स अथवा यू० एन० ओ० जैसी किसी संस्था का होना भी अनिवार्य है। संसार के विचारक सारे संसार को एक सरकार की कल्पना कर रहे हैं। विश्व-कल्याण के लिए सारे संसार की सरकार के अतिरिक्त अन्य मार्ग भी नहीं है। और यदि यह नहीं होता है, युद्ध नहीं रुकते हैं, तो आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों हमारे इस जगत् का नाश अवश्यम्भावी है। जिस दिन बारूद ईजाद हुई थी, कौन जानता था कि इस छोटे-से विस्फोटक पदार्थ के पश्चात् धीरे-धीरे मामला एटम और हाइड्रोजन बमों तक पहुंच जाएगा। ऐसा भी कोई बम बनाना कदाचित् असम्भव न हो कि जिससे हमारा भू-मण्डल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाए। कहा जाता है, मानव-मन का निर्माण प्रकृति ने इस प्रकार का किया है कि युद्ध अनिवार्य है। मानव में पाशविक भावनाएं प्रकृति की देन हैं, यह मैं मानता हूं।

राग-द्वेष से रहित, जीवन-मुक्त मानव ही हो सकता है, यह भी मुझे स्वीकृत है। परन्तु राग-द्वेष व्यक्तियों के बीच होते हैं। व्यक्तियों के झगड़े मानव-समाज मे सदा रहेंगे, यह मुझे मान्य है। लेकिन सामूहिक युद्धों मे जो राग-द्वेष प्रकृति से मानव को मिले हैं, उसका कितना अंश रहता है, यह विचारणीय है। सेनाओं के योद्धा जब एक-दूसरे से लड़ते हैं, तब क्या उनकी कोई व्यक्तिगत शत्रुता रहती है? एरोप्लेन जब बम बरसाते हैं तब क्या किसी व्यक्तिगत राग-द्वेष के कारण? मैं युद्ध को स्वाभाविक न मान एक अत्यन्त अस्वाभाविक वस्तु मानता हूं और मुझे तो आश्चर्य है कि सभ्य कहलाने वाले मानव-समाज में अब तक यह मार-काट कैसे हो रही है? कहा जाता है, युद्ध सदा से होता आया है। जो बात होती रही है वह सदा होती रहेगी, ऐसा तो नहीं है। एक समय था जब मानव को मानव खा जाता था, आज तो यह नहीं होता। एक काल फिर आया जब गुलाम-प्रथा के समय मानव-शरीर बेचे और खरीदे जाते थे। आज भी चाहे शोषण हो, परन्तु आज मानव-शरीर का क्रय-विक्रय तो नहीं होता। यदि मानव की उन्नति हो रही है और यदि संसार का नाश नहीं होना है तो चाहे मानव-मन मे राग-द्वेष की भावनाएं प्रकृति ने दी हों, चाहे युद्ध अब तक होता रहा हो, एक न एक दिन ऐसा आना ही चाहिए जब जिस प्रकार मानव द्वारा मानव का खाना रुका, मानव-शरीर की खरीद-बिक्री रुकी, उसी प्रकार युद्ध की सदा के लिए समाप्ति होगी। इसके लिए लीग आफ नेशन्स, यू० एन० ओ० सदृश संस्थाएं चाहे अब तक बार-बार असफल क्यों न होती रही हों, ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता रहेगी। और यदि अन्त मे भी इस दिशा मे हम सफल न हुए तो? पर मैं तो बड़ा आशावादी व्यक्ति हूं। मैं तो मानव उन्नति कर रहा है, इसे मानने वाला हूं। मुझे संसार का नाश न दिखकर उसका कल्याण दिखता है।

दूसरे दिन हम जिनीवा के प्रेन्शन होकर बर्न तक जाने वाले थे और बर्न से भी आगे कुछ पहाड़ी स्थनों को देखने। प्रेन्शन मे घड़ी के

कारखाने हैं, जो उद्योग स्विट्ज़रलैंड का मुख्य उद्योग है।

हमारी गाड़ी ग्रेन्शन स्टेशन कोई साढ़े ग्यारह बजे पहुंची। विलेंच में ग्रेन्शन जाने के लिए हमें रास्ते में एक स्थान पर गाड़ी बदलनी पड़ी थी। ग्रेन्शन पहुंचते ही जिस घड़ी के कारखाने को हम यहां देखने आए थे उसके मालिक श्री मैक्स स्नीडर को हमने फोन किया। वे तत्काल अपनी मोटर में हमें लेने पहुंचे। श्री स्नीडर ने हमें फैक्टरी दिखाई। इस कारखाने में घड़ियां बनती न थीं, घड़ियों के विविध भाग बाहर से आते और वे इकट्ठे किए जाते थे। यथार्थ में स्विट्ज़रलैंड का घड़ी का उद्योग गृह-उद्योग है। घड़ी के अलग-अलग हिस्से कारीगर अपने घरों में तैयार करते हैं। घड़ी के ये कारखाने उन भिन्न-भिन्न भागों को खरीदते और पूरी घड़ी बना देते हैं। कुछ कारखानों में इनमें से कुछ हिस्से भी बनते हैं, पर ऐसे कारखाने बहुत कम हैं और पूरी घड़ी के समस्त भाग किसी एक कारखाने में बनें, ऐसा तो कोई कारखाना है ही नहीं। घड़ी के भिन्न-भिन्न हिस्सों को इकट्ठा कर पूरी घड़ी बना देना भी कम हुनर का काम नहीं। हमने इस फैक्टरी में देखा कि कितने कारीगर किस बारीकी से यह काम करते हैं। मैग्नीफाइंग कांचों की छोटी-छोटी दूरबीनों और छोटी-छोटी चिमटियों, स्क्रू आदि यन्त्रों की सहायता से इन विविध भागों को एक छोटी-सी हाथ-घड़ी में, और स्त्रियों की तो अत्यन्त ही छोटी हाथघड़ी में ठीक बिठाते हुए इन कारीगरों के काम का निरीक्षण सचमुच एक दर्शनीय दृश्य था। एक ही कारीगर इन सब भागों को न बैठाता, एक कारीगर एक प्रकार के हिस्सों को, दूसरा दूसरे प्रकार के हिस्सों को, और तीसरा तीसरे प्रकार के। इस प्रकार अनेक कारीगरों के हाथों से गुज़रने के बाद घड़ी पूरी घड़ी बनती और घड़ी के पूरी घड़ी बन जाने के पश्चात् वह ठीक समय देती है या नहीं, इसकी कई प्रकार से जांच होती तथा इस जांच में समय की कोई गड़बड़ी निकलती तो वह ठीक की जाती। कारखाने में अनेक प्रकार की घड़ियां बन रही थीं—कोई सादी, केवल घण्टों

ग्रोर सेकण्डों का समय देने वाली, कोई घण्टों ग्रोर सेकण्डों के साथ-साथ तारीख ग्रोर वार बताने वाली, कोई इन सबके साथ चन्द्रमा की बढ़ती ग्रोर घटती हुई कलाएं भी दिखाती ग्रोर कोई तारीख, वार, चन्द्र न बताकर केवल एलार्म देती। कोई ऐसी बनती जिसमें चाबी देने की ग्रावश्यकता न होती, कलाई पर धारण करने के बाद कलाई के हिलने-डुलने से उसकी चाबी भरती जाती। कोई 'शाकप्रूफ' बनाई जाती यानी गिरने से भी बन्द न होने वाली, ऐसे ही पानी पड़ने पर भी चलती रहने वाली। घड़ियां सोने की, स्टील की तथा ग्रोर भी कई धातुग्रों की बन रही थीं। स्त्रियों की तो कोई-कोई घड़ी इतनी छोटी थी कि उसका समय मुझे बिना मैग्नीफाइंग ग्लास क देख सकना ही सम्भव न था।

स्विट्ज़रलैंड में दुनिया की सबसे ग्रच्छी ग्रोर सबसे ग्रधिक घड़ियां बनती हैं। संसार के समस्त देशों को यह छोटा-सा देश घड़ियां देता है। प्रति वर्ष विविध प्रकार की ग्रनेकों घड़ियां तैयार होती हैं। इनमें से स्विट्ज़रलैंड की ग्रावश्यकता के लिए तो थोड़ी ही घड़ियां वहां रखी जाती हैं, शेष संसार के ग्रन्य देशों में बेच दी जाती हैं। घड़ी के उद्योग में काम करने वाले हर कारीगर को मजदूरी भारत के रुपयों में लगभग ग्राठ सौ रुपया महीना पड़ता है।

पहले स्विट्ज़रलैंड में सूत ग्रोर रेशम उद्योग प्रमुख था, किन्तु बीसवीं शताब्दी में मशीन-उद्योग सर्वोच्च हो गया। घड़ी-उद्योग मशीन-उद्योग का ग्रत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंग है। इसके लिए कहीं ग्रधिक कुशल ग्रोर बारीक काम कर सकने वाले कारीगरों की ग्रावश्यकता होती है। स्विट्ज़रलैंड में घड़ी-उद्योग का सूत्रपात सोलहवीं शताब्दी में हुग्रा। जिनीवा ग्रोर ज़्यूरिच इसके प्रमुख केन्द्र थे। धीरे-धीरे यह उद्योग बेसल प्रदेश में भी फैल गया। १९२९ में इस उद्योग में काम करने वाले कर्मचारियों की संख्या ४८,५०३ थी। दस वर्ष पश्चात् यह संख्या घटकर ३३,६३९ हो गई किन्तु द्वितीय युद्ध के पश्चात् संसार-भर में स्विट्ज़रलैंड की घड़ियों की मांग बढ़ जाने के कारण [illegible] कर्म-

बर्न हमारी गाड़ी बिना किसी विशिष्ट घटना के ठीक समय
हुंची। हम रात्रि को ही बर्न देखने निकले। वैसा ही सुन्दर, साफ-
ुथरा, अच्छी इमारतों और सड़कों वाला बिजली की रोशनी से
जगमगाता हुआ तथा रमणीय पहाड़ियों से घिरा हुआ बर्न नगर था,
ैसा जिनीवा। जिस चीज ने यहां हमारा ध्यान सबसे अधिक
आकर्षित किया वह थी वहां की एक अद्भुत घड़ी।

यह घड़ी एक प्राचीन घण्टाघर पर है। पहले यह नगर के
द्वारों में से एक था। जब-जब घड़ी में घण्टा बजता है उसके सुन्दर
डायल के सम्मुख कठपुतलियों का जुलूस-सा निकलता है जिसमें रीछ
तो बराबर ही उपस्थित रहता है, इससे पर्यटकों और बच्चों के लिए
एक प्रमोद की सामग्री मिलती है।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम इण्टरलाकन गए। स्विट्ज़रलैंड के अन्य
छोटे-बड़े नगरों के सदृश इण्टरलाकन एक सुन्दर पहाड़ी नगर है। नगर
के चारों ओर आल्प्स की ऊंची-ऊंची श्रेणियां हैं जिनमें अनेक के
ऊपरी शिखरों पर बरफ जमी रहती है। नीचे के शिखर हरित
तरुओं से व्याप्त हैं, जिनमें चीड़ और देवदारु के वृक्षों की बहुतायत
है। थुन और ब्रीन्ज नामक दो झीलों के बीच में बसे रहने के कारण
इस नगर का नाम इण्टरलाकन है। इण्टरलाकन में अनेक सुन्दर
स्थान हैं। अनेक उद्यान देखते ही बन पड़ते हैं। ऊंचे-ऊंचे सघन वृक्ष
और उनकी गोद में रंग-बिरंगे फूलों से भरी हुई क्यारियां दर्शनीय
हैं। एक बाग के एक ओर एक फूलों की घड़ी बनी है जो चलती
और बजती है।

इण्टरलाकन पहुंचते हुए हम रास्ते में खूब घूमते तथा मार्ग के
छोटे-छोटे गांवों को देखते हुए आए थे। इण्टरलाकन में भी हम खूब
घूमे। यहीं हमने लंच भी खाया और इण्टरलाकन से बर्न लौटते हुए
भी हमने रास्ते में घूमने की कसर नहीं रखी। आज हमने स्विट्ज़र-
लैंड के अनेक गांव और कस्बे देखे। शहरों और कस्बों तथा गांवों में
उनकी छुटाई-बड़ाई के अतिरिक्त और कोई विशेष अन्तर नहीं है।

सागर' वाली जो उक्ति हम कवि बिहारी के लिए काम म लाते उसे क्यों न स्विट्ज़रलैंड के लिए भी काम में लाया जाए।

स्विट्ज़रलैंड के प्राकृतिक दृष्टि से तीन भाग किए जा सकते हैं क्षिण और पूर्वी भाग में गर्वोन्नत आल्प्स पर्वत हैं। उत्तर और श्चिम में नीची जूए श्रेणियां हैं। बीच में उपजाऊ मैदान है, जह भी बड़े-बड़े नगर हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य के सिवा स्विट्ज़रलैंड की जिस विशेषता मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया वह है उसका शान्ति और स्वातन्त्र्य प्रेम। यूरोप में स्विट्ज़रलैंड के निवासियों ने सबसे पहले यह दिखल दिया कि विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों वा लोग सहज सद्भाव से साथ-साथ रह सकते हैं।

स्विट्ज़रलैंड की स्थापना पहली अगस्त, १२९१ को हुई थी स्विट्ज़रलैंड के वर्तमान संविधान की दो विशेषताएं हैं—लोकतं की उपासना और विदेशी संघर्षों में तटस्थता की नीति बरतना। दोनों सिद्धान्त १८४८ में प्रतिपादित किए गए। इन दोनों सिद्धान की रक्षा करना और उन्हें क्रियान्वित करना सरल काम नहीं रहा कई बार स्विट्ज़रलैंड को बड़े-बड़े निर्णय करने पड़े हैं, कई बार उस पांव डगमगाए भी है, किन्तु इन दोनों सिद्धान्तों को स्विट्ज़र आज भी सीने से लगाए हुए है। स्विट्ज़रलैंड में मनुष्य द्वारा स्थापि स्वतन्त्रता भी मौजूद है और ईश्वर-दत्त प्राकृतिक स्वतन्त्रता भी।

स्विट्ज़रलैंड में विभिन्न जाति के लोग निवास करते हैं इ विभिन्न देशों का उसपर शासन रहा है। सोलहवीं शताब्दी से उसका इतिहास शेष मध्य यूरोप के इतिहास की तरह रोमन साम्रा का इतिहास था। १८१५ मे स्विट्ज़रलैंड में कनफेडरेशन की स्था की गई। इसके बाद १८४७-४८ मे एक गृह-युद्ध होने के अतिरि स्विट्ज़रलैंड का इतिहास शान्तिपूर्ण रहा है। १८४८ में स्वी उसके संविधान में थोड़ा-सा परिवर्तन १८७४ में किया गया। सि ... कनफेडरेशन मे बाइस राज्य सम्मिलित हैं। वहां की संस

हो सकते हैं। [illegible] और [illegible]
[illegible] चाहिए।

स्विट्ज़रलैंड में जैसा पहले कहा गया है, एक भाग के [illegible] [illegible] जाते हैं और इस प्रकार से व्यक्ति को दूसरी [illegible]।

भाषा की समस्या को स्विट्ज़रलैंड ने आश्चर्यजनक सफलता से हल किया है। वहाँ के ७२ प्रतिशत लोग जर्मन या इसकी किसी बोली को बोलते हैं, २० प्रतिशत फ्रेंच-भाषी हैं, ६ प्रतिशत इटालियन और एक प्रतिशत रोमान्श-भाषी हैं। चारों ही भाषाएं राष्ट्र की स्वीकृत भाषाएं हैं। चार भाषाओं के रहते हुए भी स्विट्ज़रलैंड एक संयुक्त और समन्वित राष्ट्र है। भारत की भाषा-सम्बन्धी समस्या को सुलझाने में स्विट्ज़रलैंड के उदाहरण से कुछ सहायता प्राप्त मिल सकती है।

स्विट्ज़रलैंड में सदा ही विदेशी बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित रहते हैं। कुछ लोगों का मत है कि स्विट्ज़रलैंड में इस तरह विदेशियों के बने रहने से किसी भी समय राजनीतिक, धार्मिक अथवा किसी प्रकार का सामाजिक संकट उत्पन्न हो सकता है। परन्तु वहाँ की इस विशेषता को हमें नहीं भूलना चाहिए कि लोग बड़ी जल्दी आपस में घुल-मिल जाते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में तटस्थ रहने का मूल्य स्विट्ज़रलैंड को काफ़ी चुकाना पड़ा है। पिछले युद्ध के समय उसकी सीमा से मिले हुए चारों राष्ट्रों में गड़बड़ थी। तटस्थ रहने के नाते स्विट्ज़रलैंड के लिए बड़ी चिन्ताजनक स्थिति उत्पन्न हो गई, क्योंकि स्विट्ज़रलैंड में खाद्यान्न का अभाव रहता है और वह अन्य भी कई साधनों से सम्पन्न नहीं है। इसलिए स्विट्ज़रलैंड को सब तरह का अभाव सहन करना पड़ा। जर्मनी का तो उसके ऊपर बराबर विशेष दबाव रहा। तटस्थता की अपनी नीति को स्विट्ज़रलैंड इसलिए भी निभा पाता है कि १८१५ के समझौते के अनुसार रूस, ब्रिटेन और पुर्तगाल आदि

इस बात का आश्वासन दे चुके हैं कि आक्रमण होने पर वे उसकी रक्षा करेंगे। तटस्थ देश होने की वजह से युद्ध-काल में अनेक लोग वहां जाकर शरण लेते रहे हैं। युद्ध-काल में सभी देशों के हजारों बच्चे वहां पहुंचाए गए। अन्त में कहना न होगा कि स्विट्जरलैंड एक सफल तटस्थ देश रहा है और आज तो स्विट्जरलैंड नाम-मात्र से तटस्थता का बोध होता है। इसीलिए जब कभी मध्यस्थता के लिए किसी तटस्थ देश को चुनने की बात चलती है तो स्विट्जरलैंड का नाम अनिवार्य रूप से लिया जाता है। [illegible] संसार में स्विट्जरलैंड आशा की एक किरण है। [illegible] सोचते हैं कि क्या सभी देश स्विट्जरलैंड की तरह शांतिप्रिय नहीं बन सकते? यदि ऐसा हो सके तो फिर मानवता को त्राण ही मिल जाए।

स्विट्जरलैंड की अपने देश की राजनीति में एक और विशेष बात है। वहां राजनैतिक दल न हों, ऐसा नहीं, परन्तु मन्त्रिमण्डल प्रायः सर्वदलीय बनते हैं और अपनी विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होते हुए भी यदि मंत्रिमण्डल के किसी मत को विधान-सभा स्वीकार नहीं करती तो वे इस्तीफा नहीं देते, वरन् उनके मत के विरुद्ध भी यदि विधान सभा का कोई निर्णय होता है तो सिर झुकाकर स्वीकार कर उस निर्णय को कार्यरूप में परिणत करते हैं। इसीलिए स्विट्जरलैंड में वर्षों से नहीं, पर युगों से वे ही मन्त्री चले आते हैं।

बर्न से जिनीवा हमारी गाड़ी सात बजे के लगभग जाती थी। बर्न से जिनीवा पहुंचने में ट्रेन को लगभग दो घण्टे लगे। जिनीवा स्टेशन से हम उसी होटल में गए जहां इसके पहले ठहरे थे।

जिनीवा से पेरिस जाने का हमारा कार्यक्रम फिर हवाई जहाज से था। हमारा विमान तारीख १५ को तीन बजे के लगभग चलना था। ठीक समय पर हमारा प्लेन जिनीवा से रवाना हो दो घण्टे में पेरिस पहुंच गया।

फ्रांस

जब हमारा हवाई जहाज पेरिस पहुंच रहा था तब बचपन और बचपन के बाद की भी पेरिस के सम्बन्ध में सुनी हुई अनेकों बातें याद आईं। इनमें सबसे पहले एक बात का स्मरण आया, वह थी असहयोग-आन्दोलन के समय की पं० मोतीलाल जी नेहरू के सम्बन्ध में एक चर्चा। पंडित मोतीलाल जी नेहरू का जीवन बड़े शाही ढंग से बीता था। उनकी शौकीनी के कई किस्से प्रचलित थे। जब वे असहयोग-आन्दोलन में सम्मिलित हुए तब उनके त्याग का वर्णन करते हुए प्रायः यह कहा जाता था कि पंडित जी ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके कपड़े पेरिस से धुलकर आते थे। एक बार जब मोतीलाल जी के सामने यह बात निकली, तब वे ठठाकर हंस पड़े और उन्होंने इस विषय में जो कुछ कहा उसका आशय इस प्रकार था। यदि यह बात सही होती तब तो दो धुलाई में उनके कपड़ों पर उतनी ही कीमत और चढ़ जाती, जितने में वे बनवाए गए थे। धुलाई के लिए कपड़ों को पार्सल भारत से पेरिस भेजना, पेरिस की महगी धुलाई देना, फिर पार्सल से कपड़े वापस भारत मंगाना, यह सब हास्यास्पद बात थी। जोश में आदमी किस-किसके लिए क्या-क्या पक्ष और विपक्ष दोनों में कह जाया करता है!

पेरिस संसार का सबसे अधिक सुन्दर, सबसे अधिक कलापूर्ण, सबसे अधिक सभ्य नगर माना जाता है। दो-दो भीषण युद्धों के बाद भी उसकी इस कीर्ति में कोई अन्तर नहीं पड़ा और जब मुझे पेरिस के इस यश का स्मरण आया तब मुझे फ्रांसीसी क्रांति तथा फ्रांस की एक समय की वीरता और दूसरे समय की कायरता भी याद आई। फ्रांसीसी क्रांति के पूर्व जिन महान लेखकों ने अपने साहित्य द्वारा क्रांति का वायुमण्डल बनाया था वे रूसो और वाल्टेयर स्मरण आए। फ्रांसीसी क्रान्ति विश्व के आधुनिक काल की वह क्रान्ति है जिसने पहले आम जनता के हित-सम्बन्धी कुछ विशिष्ट नारे लगाए

थे थे—'स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व'।

रूसो का यह अमर कथन लोगों की नस-नस में समा गया था—"मनुष्य स्वतन्त्र जन्म लेता है पर सर्वत्र परतन्त्र है, इसलिए सभी के मन में परतन्त्रता की बेड़ियां तोड़ डालने की इच्छा प्रबल हो उठी है।"

इन नारों के अनुरूप ही वहां की क्रान्ति हुई थी, जिसका विश्व की क्रान्तियों में एक प्रधान स्थान है।

फ्रांसीसी क्रान्ति और उसके बाद के फ्रांस के इतिहास से यूरोप का इतिहास एक देश का, एक घटना का, एक व्यक्ति का इतिहास बन गया। देश है फ्रांस, घटना है फ्रांसीसी क्रांति, व्यक्ति है नेपोलियन। फ्रांसीसी क्रान्ति से अकेले फ्रांस का ही नहीं, सारे यूरोप का आसन डोल उठा था। संगीनों और तलवारों का युद्ध तो था ही, विचारों का युद्ध भी कम नहीं था। फ्रांसीसी क्रान्ति ने सरकार, समाज और व्यक्ति के अधिकारों के सम्बन्ध में नये विचारों को जन्म दिया था, जिससे सारा यूरोप लहलहा उठा था, और नये विचारों की शक्ति सब जानते ही हैं—वह सैनिक बल से भी अधिक होती है।

फ्रांसीसी क्रान्ति के समय यूरोप में राजसी ठाट-बाट था। निरंकुशता का नग्न नृत्य हो रहा था। जनता राजतन्त्र के अत्याचारों से ऊबने लगी थी। सामन्तवाद की जड़ हिल उठी थी। शासक न केवल मनमानी करते थे, वरन् शासन-व्यवस्था में बेईमानी और भ्रष्टाचार फैले हुए थे। जर्मनी, आस्ट्रिया, प्रशा, इटली, स्पेन आदि निर्बलता के शिकार हो चुके थे, इसलिए किसी विदेशी व्यक्ति ने भी फ्रांसीसी क्रान्ति के मार्ग में कोई अड़चन नहीं डाली। बड़े-बड़े सामन्त और बड़े-बड़े पादरी समाज पर प्रभाव रखने वाले दो शक्तिशाली संगठन थे। जनता कर-भार से दबी जाती थी। लोगों से बेगार कराई जाती थी और निर्धन को पशु से भी नीचा समझकर बर्ताव किया जाता था। यह तो हाल था निम्नवर्ग की जनता का। मध्यवर्ग की जनता के पास धन था और बौद्धिक चेतना भी, किन्तु उच्चवर्ग के निरादर के कारण

निरंकुश बन ही बन बढ़ता रहता था।

१७८९ की राजनीतिक क्रान्ति के पहले बौद्धिक क्रान्ति हुई। कई फ्रांसीसी दार्शनिकों मॉण्टेस्क्यू, वाल्टेयर और रूसो ने इसका सूत्रपात किया। उनकी लेखनियों ने उस अन्धविश्वास और पीड़ा को दूर कर दिया जो जनता के एक वर्ग को छोड़कर बाकी सभी वर्गों के मन में छायी थी। मॉण्टेस्क्यू ने इस सिद्धान्त का खण्डन किया कि राजा को ईश्वर ने अपना दूत बनाकर भेजा है। वह ब्रिटेन के वैधानिक राजतन्त्र का प्रबल समर्थन किया। वाल्टेयर ने धर्म का मजाक उड़ाया और बहु परिहासित किया कि धर्म के नाम किसी भी ढंग पर विश्वास मत करो। उसने सामन्तवर्ग और पादरी वर्ग के काले कारनामों और भ्रष्टाचार का भण्डाफोड़ किया। इन सभी दार्शनिकों ने राज की तत्कालीन व्यवस्था की जड़ों पर कुठाराघात किया और उसके विनाश में सहायता की। रूसो ने पुनर्निर्माण का मानचित्र प्रस्तुत किया। रूसो का उद्देश्य सुधार-मात्र नहीं, समाज को नये सिरे से रचना करना था। कवि पन्त के शब्दों में उनका सिद्धान्त था :

> "गूँजे जय-ध्वनि से आसमान,
> सब मानव मानव हैं समान।"

रूसो का यह विश्वास लोकतन्त्र का मूलमन्त्र था। इससे सिद्ध हुआ कि सत्ता जनता का भारी है, सत्ता जनता की धरोहर है और भविष्य की रूपरेखा बनाना व उसमें कल्पना के अनुसार रंग भरना जनता का ही जन्मसिद्ध अधिकार है।

इन दार्शनिकों के विचारों से वातावरण ही बदल गया। फिर भी केवल उनके लेखों को फ्रांसीसी क्रान्ति का मूल कारण समझना भूल है। उनका महत्त्व इसमें है कि एक जर्जर समाज को तेजी से ढहाने
और नई दिशा का आभास हुआ।

बड़ी बात यह थी कि फ्रांस की आर्थिक
थी, कहना चाहिए कि पुराने और बिगड़े

होगा भर मन ही मन कराहता रहता था।

१७८९ में वास्तविक क्रान्ति से पहले बौद्धिक क्रान्ति हुई। यह कार्य फ्रांसीसी दार्शनिकों मौंटेस्क्यू, वाल्टेयर और रूसो ने सम्पन्न किया। उनकी लेखनियों ने उस असन्तोष और पीड़ा को मुखरित कर दिया जो जनता के एक वर्ग को छोड़कर बाकी सभी वर्गों के मन में व्याप्त थी। मौंटेस्क्यू ने इस सिद्धान्त का खंडन किया कि इस नरेश को विधाता ने अपना दूत बनाकर भेजा है। वह ब्रिटेन के वैधानिक राजतन्त्र का पक्का समर्थक किया। वाल्टेयर ने तर्क को अपना अस्त्र बनाया और यह प्रतिपादित किया कि तर्क से परखे बिना किसी भी बात पर विश्वास मत करो। उसने शासकवर्ग और पादरी वर्ग के काले कारनामों और भ्रष्टाचार का भण्डाफोड़ किया। इन दोनों दार्शनिकों ने फ्रांस की तत्कालीन व्यवस्था की जड़ों पर कुठाराघात किया और उसके विनाश में सहायता की। रूसो ने पुनर्निर्माण का मानचित्र प्रस्तुत किया। रूसो का उद्देश्य सुधार-मात्र नहीं, समाज की नये सिरे से रचना करना था। कवि पन्त के शब्दों में उनका सिद्धान्त था :

> "गूंजे जय-ध्वनि से आसमान,
> सब मानव मानव हैं समान।"

रूसो का यह विश्वास लोकतन्त्र का मूलमन्त्र था। इससे सिद्ध हुआ कि पलड़ा जनता का भारी है, सत्ता जनता की धरोहर है और भविष्य की रूपरेखा बनाना व उसमें कल्पना के अनुसार रंग भरना जनता का ही जन्मसिद्ध अधिकार है।

इन दार्शनिकों के विचारों से वातावरण ही बदल गया। फिर भी केवल उनके लेखों को फ्रांसीसी क्रान्ति का मूल कारण समझना भूल है। उनका महत्त्व इसमें है कि एक जर्जर समाज को तेजी से ढहाने में उनसे सहायता मिली और नई दिशा का आभास हुआ।

क्रान्ति के लिए सबसे बड़ी बात यह थी कि फ्रांस की आर्थिक दिशा अत्यन्त हीनावस्था में थी, यहाँ तक कि [illegible]

... न अब तक कोई सुधार होता दिखाई न देता था। फ्रांस
ई चौदहवें द्वारा लड़े गए युद्धों के कारण ऋण-भार से दबा जा रहा
। लुई पन्द्रहवें के भ्रष्टाचार के कारण यह कर्ज और भी बढ़ ही
या था, घटा न था। इस दीवालियेपन का मूल्य बेचारे लुई सोलहवें
ो चुकाना पड़ा। अमेरिकी उपनिवेशों के विद्रोह का समर्थन करना
ांस के लिए घातक सिद्ध हुआ, क्योंकि ऐसा करने से उसे ब्रिटेन के
ाथ युद्ध में पड़ना पड़ा। जनता का राजतन्त्र मे विश्वास उखड गया
ौर विद्रोह की लपटें फैलने लगीं। इस प्रकार क्रान्ति के कारण
ूलतः आर्थिक थे।

आरम्भ में फ्रांसीसी क्रान्ति को प्रेरणा मध्यवर्ग से मिली थी,
िन्तु बाद में किसान भी विद्रोह कर उठे। और जैसा कि कहा जा
ुका है, फ्रांसीसी लेखकों के नये-नये विचारों से जनशक्ति को एक
ई दिशा मिल रही थी। यद्यपि फ्रांसीसी क्रान्ति के कारण ब्रिटेन
ें भी थोड़ी-बहुत उथल-पुथल हुई, किन्तु उसका स्वरूप केवल राज-
ैतिक था।

लुई सोलहवां, जो फ्रांसीसी क्रान्ति की बलि बना, ईमानदार तथा
भला आदमी था, और जनता की सच्चे हृदय से सेवा करना चाहता
था। अपने समय की आर्थिक कठिनाइयां भी वह दूर करना चाहता
था, किन्तु वह कमजोर आदमी था और दूसरे के प्रभाव में बहुत जल्दी
आ जाता था। अपने दरबार के ऐसे लोगों के कुचक्रों से भी वह नहीं
बच पाता था जो भ्रष्टाचार फैलाते हुए भी अत्यन्त शक्तिशाली थे।
आस्ट्रिया की मेरियाथेरेसा की बेटी मेरी एण्टायनेट, जो उसकी पत्नी
थी, उसपर बड़ा प्रभाव रखती थी। वह अत्यन्त सुन्दरी और स्वेच्छा-
चारिणी थी, किन्तु अपने पति की भांति अनुभव और तीक्ष्ण दृष्टि
की उसमें भी कमी थी। इसलिए पति पर उसके प्रभाव ने पति की
जान ले ली और फ्रांस मे उथल-पुथल भी कर डाली।

बेचारे लुई ने पहले टरगार्ट और बाद में नेकर की सहायता से
आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया था, पर उसे सम्हाला न

भौर हृदय-परिवर्तन तथा मूल्य-परिवर्तन की नींव पर जो क्रान्ति होगी भौर ऐसी क्रान्ति के पश्चात् जो सामाजिक रचना होगी उसमें हिंसा का कोई स्थान नहीं हो सकता। ऐसी ही क्रान्ति के द्वारा समाज-रचना स्थायी हो सकती है।

फ्रांसीसी क्रान्ति के बाद मुझे नेपोलियन के समय की फ्रांसीसि
वीरता का स्मरण माया भौर इस वीरता के पश्चात् गत युद्ध में
फ्रांसीसी कायरता का। जिस फ्रांस ने नेपोलियन के समय यूरोप के
इतिहास में भद्वितीय वीरता दिखाई थी वही गत युद्ध में इतना कायर
कैसे हो गया? भपने सौन्दर्य, भपनी कला, भपनी सभ्यता भौर इसके
फलस्वरूप विलास भौर फैशन में लिप्त फ्रांस को भपनी इन सब चीजों
भौर इनके केन्द्र पेरिस को बचाने के लिए युद्ध में हार मान लेना
स्वीकृत था। स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए मर-मिटने की भपेक्षा पेरिस
के इस सारे वैभव की रक्षा का उसे कैसा मोह हो गया था। इस मोह
में वह ऐसा लड़खड़ाया कि ग्रेट ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री श्री चर्चिल के
इस प्रस्ताव तक को उसने ठुकरा दिया कि फ्रांस भौर इंगलिस्तान के
विशाल साम्राज्य पर फ्रांस का भी वैसा ही भधिकार हो जैसा कि
इंगलिस्तान का है, दोनों के नागरिक एक राज्य के नागरिक समझे
जाएं। श्री चर्चिल के इस प्रस्ताव के समय ब्रिटिश साम्राज्य कोई
छोटी-मोटी वस्तु नहीं थी। ऐसा प्रस्ताव मानव-इतिहास में कभी भी
कदाचित् किसी देश ने किसी देश के सामने न रखा था। पर फ्रांस
तो ऐसा घबड़ा गया था कि उसने दायें-बायें, भागे-पीछे, ऊपर-नीचे
किसी भोर भी न देख जर्मनी की शरण ली। मेरे मन में एकाएक
उठा, सौन्दर्य, कला, सभ्यता भादि यदि एक सीमा के बाहर चले
जाएं तो वे कायरता उत्पन्न करती हैं। पर फ्रांसीसी क्रान्ति भौर
नेपोलियन के समय में क्या फ्रांस सुन्दर, इतना कलापूर्ण भौर इतना
सभ्य नहीं था? जो कुछ हो, गत महायुद्ध में तो इन्हीं वस्तुभों की
रक्षा के मोह ने फ्रांस को कायर बनाया। भौर जब मैं यह सब सोच
रहा था तब मैंने निर्णय किया कि इस समय के फ्रांसीसी जीवन

पहलुओं का मुझे निरीक्षण करने का प्रयत्न करना चाहिए और देखना चाहिए कि आज फांसीसी राष्ट्र की क्या अवस्था है।

ता० १६ से १६ तक ४ दिन हम पेरिस में खूब घूमे—उन बसों जो रात के समय पेरिस की सैर कराती हैं, और उन बसों में जो रिस की सैर दिन में कराती हैं; स्वतन्त्र रूप से टैक्सी में, और दल भी। इन चार दिनों में हमने पेरिस की दर्शनीय इमारतों को खा, वहां के अजायबघरों को देखा, वहां के नाटकों और नाइट-लबों को देखा, वहां के जीवन को देखा। मैं समझता हूं, चार दिनों थोड़े समय में हमने जितना पेरिस देखा उतना कम लोग देख पाते गे।

पेरिस सचमुच बड़ा सुन्दर नगर है। बड़ी ही व्यवस्था से बसाया गया है। सड़कें इस तरह निकाली गई हैं कि जान पड़ता है भारत के जयपुर नगर के सदृश पहले शहर का पूरा नक्शा बनाकर तब शहर बसाया गया है, यद्यपि ऐसा हुआ नहीं है। सुना गया कि शहर धीरे-धीरे बढ़ा है, पर जब-जब बढ़ा तब-तब इस प्रकार बढ़ाया गया कि बसने में अव्यवस्था न होने पाए। इमारतें बहुत सुन्दर हैं, पर पुराने ढंग की। आजकल सीमेण्ट-कान्क्रीट के जैसे मकान बनते हैं, वैसे मुझे पेरिस में नहीं दीखे। मैं समझता हूं कि पुराने ढग के मकान जिनमें कहीं गुम्बजें होती हैं, कहीं विविध प्रकार के स्तम्भ, कहीं झरोखे तथा कहीं महराबें और कहीं नक्काशी, वे वर्तमान समय के सीमेण्ट-कान्क्रीट के सपाचट्ट मकानों से कहीं अधिक सुन्दर होते हैं। एक बार वहां की ऐतिहासिक इमारतों और मूर्तियों आदि को देख मुझे बहुत आश्चर्यजनक मालूम हुई। इनमें से अधिकांश ऐतिहासिक इमारतें और मूर्तियां मैली होकर काली और चितकबरी हो गई हैं औ यह इसलिए कि वे कभी साफ ही नहीं की जातीं। इनके सा न करने का यह कारण बताया जाता है कि इनकी प्राचीनत की रक्षा हो। प्राचीनता की रक्षा मिट्टी, कीचड़ और विवि

र भ्राता है। सीन के पश्चिमी तट पर यूनिवर्सिटी की इमारतें
लेमबर्ग क्वार्टर भी बहुत दूर नहीं है। सीन के दूसरी ओर
जहां विश्वविख्यात कला-कृतियां संगृहीत हैं। सैकड़ों कमरे
टियन, राफेल, टिन टोरट्टो, वैरोनीज, गिम्रोटा, फ्राएंजेलिको,
ली, वान डाइक आदि के स्मरणीय चित्र हैं; पांच शताब्दियों
। के शासकों ने इसकी काफी वृद्धि की है। लोवरे की इमारत भी
आकर्षक है। फ्रांस के गणराज्य बनने से पहले यह स्थान फ्रांसीसी
ों का महल था। नाट्रेडम गिरजाघर को छोड़ पेरिस में ऐसी
कोई इमारत नहीं है जिसकी लोवरे से तुलना भी की जा सके।
रिस बड़े सुन्दर ढंग से बसाया गया है। गोलाकार प्लेस डी
े से बारह मार्ग विभिन्न स्थानों को जाते हैं।
लोवरे के समीप ही बिबलियोथिक नेशनल है जहां लगभग चालीस
पुस्तकें हैं और जो अनुसंधान-विद्यार्थियों के लिए अमूल्य संग्रह-
है। यहां से नजदीक बोर्स की इमारत है जहां पेरिस का शेयर
र है। पेरिस का एक आकर्षक स्थल बेस्टाइल है, जहां प्रसिद्ध
गृह था और जिसे फ्रांसीसी क्रांति के प्रारम्भ काल में नष्ट कर
। गया था। इसके अतिरिक्त लोहे की बनी प्रसिद्ध एफल टावर
। यह मीनार १८८६ से बनाई गई थी। यह ६८४ फुट ऊंची है।
अब प्रसारण के लिए काम में लाया जाता है। वहां जाने पर
ो टाल्स्टाय और महात्मा गांधी के विचार याद आए। दोनों ही
र टावर को मानव की मूर्खता का ज्वलन्त प्रमाण मानते थे।

प्लेस डी ला कानकार्ड पेरिस का ऐसा स्क्वायर है जो अत्यन्त
न्दर और ऐतिहासिक स्मृतियों से भरपूर है। हमने पेरिस में फ्रांसीसी
ओं के विभिन्न कीर्ति-स्तम्भ भी देखे। इनमें 'आर्क दी ट्रायफ'
ामक फाटक प्रमुख है।

किन्तु 'बाइस डी बोल गौन' और उसके चिड़ियाघर, घुड़
ौड़ के मैदान, खुली छत का थियेटर और वर्साइल्स के महल औ
ाग देखे बिना पेरिस की यात्रा अधूरी ही रह जाती है, अतः हम उन्हें

डूब गए। थोड़ी देर बाद बिजली के जलते हुए भवनों की ले के दोनों उस झील में से बाहर निकल आए। यह दृश्य मनमोहक तो था ही, पर साथ ही मन को विस्मय में भी कम न डालता था। हां, नाटक के एक दृश्य का दूसरे से कोई सम्बन्ध न था। हर दृश्य पृथक्-पृथक् था और उसमें कोई कथा न होकर नाच-गाना ही चलता था। इन नाटकों में यदि कोई कथा रहती, साथ ही हृदय को छूने वाला नाटकीय प्रदर्शन होता तो सोने में सुगन्ध हो जाती। फिर भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि ऐसे कलापूर्ण और विस्मयकारी दृश्यों को मैंने रंगमंच पर इसके पहले कभी न देखा था। इन नाटकों में नंगी स्त्रियों के प्रदर्शन की भी मुझे कोई आवश्यकता न जान पड़ी। यदि इन स्त्रियों का प्रदर्शन इसलिए किया जाता हो कि यह प्रदर्शन अधिक लोगों को इन नाटकों के प्रति आकर्षित करता है, तो भी मेरे मतानुसार यह विचार असत्य है। इन नाटकों के प्रति लोगों के आकर्षण का प्रधान कारण इन नाटकों के दृश्य हैं, नंगी औरतें नहीं, वरन् मेरे मतानुसार ऐसे कलात्मक प्रदर्शन में इस प्रकार नंगी औरतों को लाना इन नाटकों के लिए लाछन की बात है। पर एक बात जरूर हुई। रोम की इस प्रकार की नग्नलीला में इससे कम नंगा प्रदर्शन होने पर भी मन में जिस प्रकार के विकार की उत्पत्ति होती थी, वह यहां नहीं हुई। मालूम नहीं इसका कारण यहां के प्रदर्शन के कामुक हाव-भावों का अभाव था, अथवा आंखों का इस तरह के दृश्यों के लिए अभ्यस्त होता जाना। नाइट-क्लब के नृत्य में नाटकों के दृश्यों की कला न थी। स्त्रियों की नग्नता नाटकों के ही समान थी। कामुकता के हाव-भाव भी थे। पर इस प्रदर्शन का भी मन पर ऐसा प्रभाव न पड़ा जैसा रोम के प्रदर्शन का पड़ा था।

पेरिस-निवासियों का जो जीवन हमने देखा उससे हमें गत लड़ाई में उनके जर्मनी की शरण लेने का रहस्य और अधिक समझ में आ गया। हमें इसमें जरा भी सन्देह नहीं रहा कि उनकी इस कायरता का प्रधान कारण उनकी आधिभौतिक जगत की सौंदर्योपासना ...

मैंने वहां और देखी। जनता को नेपोलियन की बड़ी कीर्ति गाते सुना। जान पड़ा, आज भी नेपोलियन के प्रति वहां की जनता की बड़ी श्रद्धा, बड़ी भक्ति है। भारत के कायरों के मुख से भी मैं प्रायः अर्जुन, भीम, प्रताप, शिवाजी, तिलक, गांधी आदि की प्रशंसा सुना करता हूं। ये हैं आध्यात्मिक कायर और फ्रांस वाले हैं आधिभौतिक कायर।

फ्रांस यूरोप का दूसरा सबसे बड़ा देश है। क्षेत्रफल लगभग २,१०,००० वर्गमील है। समस्त यूरोप का फ्रांस आठवां भाग समझिए। आकार में फ्रांस इग्लैंण्ड से चौगुना है। जनसख्या ४,१५,००,००० है। कहते हैं पेरिस ही नहीं पर समूचा फ्रांस सर्वत्र सुन्दर देश है, और यह कहना कठिन है कि फ्रांस के नगर सुन्दर हैं अथवा गाव।

सैर और पर्यटन के लिए फ्रांस की गणना ससार के सर्वोत्तम स्थानों में की जानी चाहिए। फ्रांस की विशेषता यह है कि वहा आप पर्यटन कार से करें, रेलगाड़ी से, बाइसिकिल से अथवा पैदल ही, लुत्फ़ हर तरह आता है। बाद में इग्लैंण्ड जाने पर मुझे जैसा भीड़-भम्भड़ दिखाई दिया उसका फ्रांस में सर्वत्र अभाव था। फ्रांस की खुली खुशनुमा वायु कितनी स्वास्थ्यवर्धक और स्फूर्तिदायक है, इसका अधिक अनुभव तो मुझे इग्लैंण्ड पहुंचने पर ही हुआ।

फ्रांस की स्थिति इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि एटलांटिक समुद्र में भी उसका तट है और भू-मध्यसागर में भी। दूसरी विशेषता यह है कि फ्रांस में एक गहरी एकता है। यद्यपि फ्रांस के विभिन्न विभागों में विभिन्न प्रकार के लोग बसते हैं, किन्तु आने-जाने के सुविधाजनक साधन होने के कारण समूचा फ्रांस एक इकाई है। तीन हजार वर्ष के इतिहास में फ्रांस ने अपने स्वातन्त्र्य-प्रेम से सारे ससार को प्रभावित किया। फ्रांस का स्वातन्त्र्य-प्रेम प्राचीन काल में सचमुच ही उज्ज्वल एव प्रखर था। उसके प्राचीन 'गाल' सरदारों ने रोम तक का सामना किया और स्वतन्त्रता के प्रेम की अमरज्योति जगाई।

पेरिस के इस परिच्छेद को पूर्ण करने के पहले एक मनोरंजक बात और लिख दूं। पेरिस में पानी बरसने के कारण हम यहां अंग्रेजी ढंग के टोप को भी काम में लाए। इन टोपों ने बरसात में हमारी छातों के सदृश ही रक्षा की। जब इस टोप को मैंने लगाया तब मुझे सन् १६२१ की एक घटना याद आ गई। हमारे प्रदेश के एक प्रधान कांग्रेसवादी जो बाद में मन्त्री भी हुए, श्री दुर्गाशंकर मेहता, अंग्रेजी ढंग के टोप के बड़े प्रेमी थे। जब वे असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हुए तब उन्होंने महात्मा गांधी से पूछा कि हाथ के कते और बुने कपड़े का अंग्रेजी ढंग का टोप कांग्रेस वाले उपयोग कर सकते हैं या नहीं? महात्मा जी ने अपने स्वाभाविक विनोदी स्वभाव के अनुरूप उत्तर दिया—"क्यों नहीं, अंग्रेजी ढंग के टोप को मैं बिना मूठ का छाता मानता हूं।"

२० अगस्त को हम वायुयान से लन्दन के लिए रवाना हुए।

इंग्लैंड

ता० २० अगस्त की शाम को हम लन्दन के हवाई अड्डे पर पहुंचे। ज्योंही हमने लन्दन की धरती पर पैर रखा, त्योंही कितनी बातें एकसाथ मेरे मन में उठीं। जब बहुत सी बातें एकसाथ मन में उठती हैं तब उनका कोई सिलसिला नहीं रहता। 'कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा' वाली कहावत रहती है। मुझे याद आया वह समय, जब भारत संस्कृति तथा सभ्यता के शिखर पर पहुंच चुका था और उस समय इंगलिस्तान के लोग जंगली तथा बर्बर थे। कालान्तर में भारत का पतन और इंगलिस्तान के उत्थान तथा भारत पर लगभग पौने दो सौ वर्षों तक अंग्रेजों के राज्य की कारुणिक कथा का मुझे स्मरण आया। किस तरह अंग्रेज भारत में जहांगीर के समय रोज-

गाड़ी के कर में गए थे, किस तरह कहीं गड़-गिड़ाकर, कहीं ... मद्दा-गिड़ाकर, अधिकतर छल-छन्द से उन्होंने अपना आधिपत्य भारत पर जमाया था, भारतीय साम्राज्य के कारण संसार में कैसा उत्कर्ष हुआ था उनका! उनके उत्कर्ष की चरम सीमा पहुंची थी सन् १९११ के दिल्ली दरबार में, कैसे-कैसे दृश्य देखे थे मैंने स्वयं भी उस दरबार के और कैसा पतन हुआ था भारत का इस पराधीनता के काल में। फिर याद आया मुझे स्वराज्य प्राप्त करने का समय-समय पर भारतीय प्रयत्न, सन् १८५७ का स्वतन्त्रता-संग्राम और अंग्रेजों द्वारा इस संग्राम का बदला लेने की भीषण क्रियाएं, सन् १९२०,३०,३२,४० और ४२ के गांधी जी के आन्दोलन, इन आन्दोलनों को कुचलने के लिए अंग्रेजों द्वारा महान दमन। चूंकि सन् २० के बाद के इन समस्त आन्दोलनों में मैंने स्वयं हिस्सा लिया था, इसलिए इन आन्दोलनों के कई दृश्य मुझे स्मरण आए। फिर मुझे याद आई भारत जिस तरह स्वतन्त्र हुआ उसकी तथा उसके बाद की कई घटनाएं। तो जो अंग्रेजी राज्य भारत के वर्तमान सारे क्लेशों का मुख्य कारण था उसी अंग्रेजी राज्य के सन् ४७ के कर्णधारों ने जब हमें बिना किसी झगड़े-झांसे स्वतन्त्रता दे दी, तब पिछली सभी बातें भूल आज हम अंग्रेजी राज्य के सबसे बड़े मित्र हैं। शत्रुता हमारी किसी भी देश से नहीं, हमारी संस्कृति की परम्परा के कारण स्वतन्त्र भारत सभी देशों और राष्ट्रों का मित्र है और मित्र रहना चाहता है, पर अंग्रेजों के हम सबसे बड़े मित्र हैं। उनके अन्तिम उदार आचरण के कारण पुरानी सभी कटु बातों को हम भूल गए। बिना किसी प्रकार के संघर्ष के इस प्रकार हमें स्वराज्य देना अंग्रेजों के स्वयं के इतिहास के प्रतिकूल बात थी। अमेरिका, आयरलैंड, मिस्र—किसीके साथ भी उन्होंने ऐसा उदार व्यवहार नहीं किया था, और अंग्रेजों ने ही क्या, कदाचित् किसी भी राष्ट्र ने अपने अधीन राष्ट्र के साथ मानव-इतिहास में ऐसा व्यवहार नहीं किया। यह कारण तो उनके प्रति हमारी वर्तमान सद्-... का है ही पर इसके सिवा हमारी सांस्कृतिक परम्परा और

गाधी जी का दर्शन भी इसका बहुत बड़ा कारण है । कुछ लोगों का मत है कि हमें स्वतन्त्रता अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के कारण मिली, न अंग्रेजों की उदारता के कारण और न गांधी जी तथा हमारे देश-वासियों के उनके अनुसरण के कारण । अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति भी हमारी स्वतन्त्रता का कारण है इसे मैं अस्वीकार नहीं करता, परन्तु अंग्रेजों की उदारता और गांधी जी के प्रयत्न तथा हमारे देशवासियों का उनका अनुसरण, ये बातें न होतीं तो अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति भारत को स्वतन्त्र न कर सकती थी । अंग्रेज अभी बहुत समय तक हमें दबोचे रह सकते थे । गांधी जी ने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक हमारे देशवासियों के मन में जो राष्ट्रीय भावनाए भरीं और उन भावनाओं के कारण हमारे देशवासियों ने उनका जो अनुसरण किया उसकी वजह से हमारे देश को परतन्त्र रखना असम्भव हो गया था । और अंग्रेजों ने अन्त में कोई झगडा-झासा न कर हमारे साथ उदार व्यवहार किया, हमें स्वराज्य दे दिया । यदि ये दोनों बातें न होतीं तब तो वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में हम और भी बुरी तरह कुचले जाते । तो जिन अंग्रेजों से गत दो शताब्दियों तक हमारे नाना प्रकार के सम्बन्ध रह चुके थे उन्हींकी राजधानी लन्दन में मैं आज खड़ा हुआ था । किसी समय अंग्रेजी साम्राज्य संसार का सबसे बड़ा राज्य रहा था । कहा जाता था कि अंग्रेजी राज्य में कभी सूर्य नहीं डूबता था । लन्दन दुनिया का सबसे बड़ा शहर था । आज अंग्रेजी साम्राज्य 'कामनवेल्थ' में परिणत हो गया, यद्यपि सच्चा कामनवेल्थ बनने में उसमें अभी अनेक कमियां हैं; फिर भी इस रूप में आज भी संसार की वह सबसे बड़ी चीज है । लन्दन आज चाहे आबादी में न्यूयार्क और टोकियो से छोटा हो, पर क्षेत्रफल में दुनिया का सबसे बड़ा नगर है । पर सुना जाता है कि गत युद्ध में जीतने पर भी आज इंगलिस्तान के निवासी आर्थिक दृष्टि से बड़े कष्ट में हैं, उन्हें खाने तक को पूरा नहीं मिलता । मैं यूरोप का बहुत-सा भाग देखकर लन्दन पहुंचा था । इंगलिस्तान को छोड़ रारानिंग यूरोप में कहीं भी न था ।

लन्दन के अभी भी दुनिया के सबसे बड़े शहर होने पर भी सुना था कि गत युद्ध में लन्दन पर जो बम बरसे थे और उनसे जो नाश हुआ था उसमें से बहुत-से भाग को अब तक भी नहीं सुधारा जा सका है। फिर आज अमेरिका और रूस की ताकत दुनिया में अंग्रेजों से बढ़ गयी है। किसी भी दृष्टि से आज अंग्रेजों का संसार में वह स्थान नहीं जो कभी रह चुका था। पर संसार में सदा किसीका भी एक-सा समय रहा है, मुझे याद आया तुलसीदास जी का एक छन्द—

धरा को प्रमान यही तुलसी
जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना।

अंग्रेजों और उनके राज्य की पूर्वावस्था न रहने पर भी अभी भी उनका, उनके राज्य का, और लन्दन का दुनिया में बहुत बड़ा महत्त्व है। लन्दन की भूमि पर उतर उपर्युक्त अनेक बातें सोचते हुए मैंने हर दृष्टि से लन्दन का निरीक्षण करने का निश्चय किया।

हवाई अड्डे पर मुझे लेने के लिए भारतीय दूतावास के प्रतिनिधि आए थे और एक मोटर भी लाए थे। जहां भारतीय दूतावास ने हम लोगों के ठहराने की व्यवस्था की थी यह क्लब भारतीय सरकार का है और इसे लन्दन का भारतीय दूतावास चलाता है। लन्दन में हमारी अनेक इमारतें और संस्थाएं हैं। भारतीय दूतावास का भवन इण्डिया हाउस, भारतीय राजदूत का निवास-स्थान, इण्डियन सर्विसेज क्लब, ये भारत सरकार की मुख्य जायदादें हैं। भारत सरकार के अतिरिक्त यहां भारतीयों की कई गैरसरकारी संस्थाएं भी चलती हैं जिनमें मुख्य हैं इण्डिया क्लब, और विद्यार्थियों की कई संस्थाएं। इंगलिस्तान का हमारे साथ इतने लम्बे समय से सम्बन्ध रहने के कारण लन्दन में भारत की इस तरह की संस्थाएं रहना स्वाभाविक है।

जिस इण्डियन सर्विसेज क्लब में हम ठहराए गए वहां भारत की ओर से होटल चलता है और भारत से आनेवाले प्रतिष्ठित खासकर सरकारी अफसर, ठहरते हैं। श्री बैनर्जी नामक एक

...रते हैं। हमें काफी अच्छे कमरे मिले। खाना वहां भारतीय ढंग का भी मिल सकता है, यह सुनकर हमें बड़ा हर्ष हुआ।

कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसिएशन की कैनेडा की राजधानी ओटावा में होने वाली परिषद् के प्रतिनिधियों को लेकर एक विशेष प्लेन ता० २९ अगस्त को लन्दन से कैनेडा जाने वाला था। आज २० तारीख थी। २९ तारीख को ओटावा जाने तक मैं अन्य किसी स्थान को नहीं जाना चाहता था। बीस दिन तक लगातार घूमते रहने के कारण कुछ थकावट भी हो गई और लन्दन में मैं कुछ अधिक रहना भी चाहता था। अतः अगले आठ-नौ दिन मे लन्दन में क्या-क्या करना है, इसका कार्यक्रम बनाया गया। हमने देखा कि इस कार्यक्रम में और अब तक के हमारे पर्यटन के कार्यक्रमों में अन्तर है। इसका कारण था अन्य स्थानों को हम वहा के विशिष्ट स्थल और वहां का जीवन देखने गए थे। लन्दन में इन दो बातों के सिवा अन्य अनेक काम भी थे, जैसे मेरे आगमन की खबर सुन वहां के भारतीय विद्यार्थियों की दो संस्थाओं ने दो दिन तक मेरे भाषण रखे थे। रायटर के प्रतिनिधि मेरी एक मुलाकात चाहते थे। लन्दन की आकाशवाणी बी० बी० सी० वाले भी मेरे वक्तव्य के लिए उत्सुक थे। लन्दन की कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसिएशन की शाखा ने हमारे सम्मान मे एक पार्टी रखी थी। वहां के कई राजनैतिक व्यक्तियों से हमारी मुलाकातें तय हुई थीं, इत्यादि।

लन्दन का मेरा सारा कार्यक्रम निम्नलिखित विभागों में विभक्त किया जा सकता है :

(१) लन्दन के दर्शनीय स्थानों और वहां के जीवन का निरीक्षण।

(२) सार्वजनिक भाषण, पत्र-प्रतिनिधियों से मुलाकातें आदि।

(३) वहां के अनुदार दल, मजदूर दल के दफ्तरों को जा, उन दलों के संगठन पर उनके मन्त्रियों से, टाइम्स के लिटरेरी सप्लीमेण्ट के सम्पादकों से तथा अन्य लोगों से मुलाकातें आदि।

लन्दन-यात्रा करने वालों को सिटी (नगर), लन्दन काउं
कौंसिल और ग्रेटर लन्दन के तीन सम्बोधन बहुधा उलझन में डा
देते हैं। वास्तव में इनसे केवल यही प्रकट होता है कि लन्दन स
का विकास किस प्रकार हुआ। सिटी अर्थात् नगर शब्द का प्र
केवल एक वर्ग मील इलाके के लिए होता है जो कहना चाहिए लन्
का अन्तःपुर है। किसी समय बस यही लन्दन था। आज सिटी
शब्द का प्रयोग लन्दन के 'वाल स्ट्रीट' प्रदेश के लिए किया ज
है। यह स्थान बिल और साहूकारों का केन्द्र है। बैंक आफ इंग
स्टाक एक्सचेंज और मानहूस आदि इसी प्रदेश में है। प्रबन्ध
दृष्टि से यह सिटी कारपोरेशन के अधीन है।

सिटी के चारों ओर घनी आबादी वाला इलाका है, जिसका
काउण्टी कौंसिल अथवा उसके संक्षिप्त रूप एन०सी०सी० कहते

लन्दन काउण्टी के आसपास ही बाहरी बस्तियां हैं। ति
एल०सी०सी० और बाहरी बस्तियों को मिलाकर ग्रेटर लन्दन अ
बृहत्तर लन्दन कहा जाता है।

प्रारम्भ में लन्दन टेम्स नदी के किनारे-किनारे बसना शुरू
था। लन्दन नगर सचमुच बहुत बड़ा नगर है, परन्तु पेरिस के स
सुन्दर नहीं। कलकत्ते से यह शहर बहुत मिलता है। चूंकि ल
कलकत्ते से पुराना है, और चूंकि कलकत्ते का निर्माण ब्रिटिश र
में ही हुआ, इसलिए मैं समझता हूं कि कलकत्ते की इमारतें ल
लन्दन के सदृश बनें इसका ध्यान रखा गया होगा। लन्दन की इमा
भी पुराने ढंग की हैं और वहां की ऐतिहासिक इमारतें भी पेरिस
ऐतिहासिक इमारतों के सदृश ही साफ नहीं की जातीं। सड़कें प्र
चौड़ी और स्वच्छ हैं। यहां की ट्राम बन्द कर उसकी पटरियां स
पर से निकाल दी गई हैं, जिसके कारण सड़कें और अच्छी हो
हैं। अब लन्दन में ट्राम नहीं चलती, बिजली से चलने वाली
चलती हैं। किसी सड़क के दोनों ओर और कहीं एक ओर प
चलने के रास्ते हैं, जिनमें कुछ के दोनों ओर दरख्तों की क

है, पर पेरिस के सदृश नहीं। बहुत कम सड़कों की वैसी शोभा है। अनेक स्थानों पर पिछली लड़ाई की बमबारी के कारण खण्डहर बन गए हैं जो अब तक भी ठीक नहीं कराए जा सके। लन्दन के मुख्य-मुख्य स्थानों के बीच एक बहुत बड़ी खुली जगह है, जिसे हाइड पार्क कहते हैं। इस हाइड पार्क का क्षेत्रफल ३६१ एकड़ है, किन्तु किंग्स्टन गार्डन को मिलाकर ६,०० एकड़ हो जाता है। लन्दन के सदृश घने बसे हुए तथा रोजगार-धन्धे वाले नगर के बीच इतनी बड़ी खुली जगह इस पार्क की सबसे बड़ी विशेषता है। फिर इसकी दूसरी विशेषता है वहां लन्दन-निवासियों का जमघट। नागरिकों का यह जमाव यों तो रोज ही सन्ध्या को रहता है, पर शनिवार की सन्ध्या और रविवार की दोपहर से सन्ध्या तक तो यह जमाव एक बड़े भारी मेले का रूप ले लेता है। लाखों नर-नारी, बच्चे दोनों दिन यहां आते, खेलते-कूदते, खाते-पीते तथा छोटी-छोटी टुकड़ियों में विविध प्रकार के *भाषण, बैण्ड आदि सुनते हैं। पार्क में हजारों कुर्सियां पड़ी रहती हैं।* एक तरफ बैण्ड बजता है, एक तरफ सरपेण्टाइन नामक झील में नौका-विहार होता है और ऊंचे-ऊंचे टिपायों पर खड़े हो-होकर भाषण तो न जाने कितने लोग दिया करते हैं। सुना यह गया कि लन्दन में बड़ी-बड़ी सार्वजनिक सभाएं कभी भी नहीं होतीं, चुनाव आदि के अवसरों पर भी नहीं। वहां शायद ही कोई ऐसी सभा हुई हो जिसमें दो-तीन सौ मनुष्यों से अधिक जमा हुए हों। वहां के लोग इस बात पर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया करते हैं कि भारत में सार्वजनिक सभाओं में हजारों और लाखों की संख्या में लोग कैसे इकट्ठे होते हैं। शनिवार और इतवार को ऐसी सभाओं के लिए हाइड पार्क बड़ा प्रसिद्ध है। *भिन्न-भिन्न विषयों पर भिन्न-भिन्न वक्ता बोलते, लोग सुनते और उनसे* नाना प्रकार के प्रश्न करते हैं। भाषण के बाद प्रश्नों की झड़ी लन्दन की एक पद्धति है। सुना कि श्री कृष्ण मेनन वर्षों तक इस प्रकार की सभाओं में बोलते रहे हैं। लन्दन का और भी हर प्रकार का जीवन इस पार्क में शनिवार और रविवार को दृष्टिगोचर होता

है। सौभाग्य से हम लोग लन्दन में शनिवार और रविवार को ठहरे। हाइड पार्क का मेला हमने खूब देखा। कहीं भाषण सुने, कहीं बैंड, सरपेन्टाइन भील का नौका-विहार देखा और लोगों का विविध प्रकार का जीवन, कहीं खाना-पीना, कहीं खेलना-कूदना और कहीं प्रेमकेलि भी। हाइड पार्क के सिवा टेम्स नदी के किनारे ट्रैफल्गर स्क्वायर में जनरल नेल्सन की मूर्ति और उसके फव्वारे, जो रात्रि को बिजली के प्रकाश के कारण और सुन्दर दीखते हैं, पिकेडली स्ट्रीट की रात की रोशनी आदि-आदि लन्दन के अनेक दर्शनीय स्थान हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से वहां के वेस्ट मिन्स्टर एबी, सेन्ट पाल गिरजाघर, हाउस आफ कामन्स, हाउस आफ लार्ड्स और वेस्ट मिन्स्टर हाल, तीन प्रधान भागों वाला पार्लियामेंट हाउस, लन्दन टावर, बकिंघम पैलेस, ब्रिटिश म्यूजियम तथा एलबर्ट ऐण्ड विक्टोरिया म्यूजियम, नेशनल पिक्चर गैलरी तथा टेट पिक्चर गैलरी दर्शनीय स्थान हैं। इनका यहां कुछ वर्णन कर देना अनुपयुक्त न होगा।

सबसे पहले हम ट्रैफल्गर देखने गए। यह स्क्वायर १८०१ के ट्रैफल्गर-युद्ध के स्मारक के रूप में बनाया गया है। राबर्ट पील कहा करते थे कि यूरोप-भर में यह सर्वोत्तम स्थान है। इसके दक्षिण ओर पर ट्रैफल्गर-युद्ध के विजेता लार्ड नेल्सन की मूर्ति का १८५ फुट ऊंचा स्तम्भ है। ऊपर लार्ड नेल्सन की विशाल मूर्ति है। स्तम्भ के नीचे चारों ओर कांसे के चार बड़े सिंह हैं।

समीप ही नेशनल गैलरी और टेट गैलरी है। नेशनल गैलरी की इमारत ट्रैफल्गर स्क्वायर के सारे उत्तरी बाजू के सहारे-सहारे अत्यन्त भव्य है। इसका मध्य भाग यूनानी ढंग का है जो १८३२-३८ में बना था। युद्धकाल में नेशनल गैलरी को काफी क्षति पहुंची। नेशनल गैलरी की इस इमारत की चित्रावली की स्थापना १८३८ ई० में हुई थी। आपको आश्चर्य होगा कि आज यह यद्यपि इतना बड़ा संग्रहालय है, किन्तु इसका आरम्भ केवल ३८ चित्रों से हुआ था। नेशनल गैलरी में चित्र सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाए गए हैं और प्रत्येक कला-शैली के चित्र

अलग-अलग रखे गए हैं।

टेट गैलरी की इमारत इसके पीछे है। इसमें ३,००० व्यक्तियों के चित्र और मूर्तियां आदि हैं। इसका अत्यन्त ऐतिहासिक महत्त्व है। इसमे राजवंश को छोड़ अन्य किसी जीवित व्यक्ति की तस्वीर आदि नही रखी जा सकती।

अठारहवीं शताब्दी तक चारिंग क्रास, वर्तमान वेस्ट मिन्स्टर ब्रिज और टेम्स नदी तथा सेण्ट जेम्स पार्क के बीच का प्रदेश प्राचीन व्हाइट हाल नामक महल से घिरा हुआ था जिसका आज केवल नाम बाकी है और जिसकी केवल एक इमारत शेष है। आज तो नैलसन-स्तम्भ से वेस्ट मिन्स्टर के आधे मील के रास्ते पर दूर-दूर तक फैले ब्रिटिश साम्राज्य का राजनीतिक मर्मस्थल है क्योंकि यहीं पर वे सब इमारतें है जहा से साम्राज्य का शासन चलाया जाता है। व्हाइट हाल ट्रैफल्गर से वेस्ट मिन्स्टर तक जाने वाले प्रशस्त राजमार्ग का नाम है। यहा सरकारी दफ्तरों की कतार की कतार बनी हुई है।

व्हाइट हाल मे प्रवेश करते ही दायें हाथ व्हाइट हाल थियेटर है। सम्मुख स्काटलैण्ड यार्ड है। यह नाम उस इमारत के नाम पर पड़ा है जहा लन्दन-प्रवास के समय स्काटलैण्ड के राजा और उनके राजदूत रहा करते थे। १६४६-५२ तक, जिन दिनो जान मिल्टन कौंसिल आफ स्टेट के लेटिन सेक्रेटरी थे, वे भी इसी स्थान पर रहते थे। पिछले दिनो मे यह स्थान राजधानी की पुलिस के नाम के साथ सम्बद्ध होकर अत्यन्त विख्यात हो गया है।

वैसे तो वेस्ट मिन्स्टर नाम का प्रयोग उस सारे प्रदेश के लिए होता है, जिसे वेस्ट एण्ड कहा जाता है किन्तु प्रतिदिन के व्यवहार मे लन्दन-निवासी इस सबोधन का प्रयोग इससे काफी छोटे इलाके के लिए करते हैं, जिसमे वेस्ट मिन्स्टर एबी और ससद्-भवन आदि आते हैं। वेस्ट मिन्स्टर का महत्त्व सबसे अधिक इसलिए है कि इंग्लैंड के सम्राटों एव सम्राज्ञियों का राजतिलक इसी स्थान पर होता है। वेस्ट मिन्स्टर एबी की इमारत प्रारम्भिक ब्रिटिश वास्तुकला का अद्भुत नमूना है।

ब्रिटेन के अधिकांश प्रसिद्ध व्यक्ति इसी जगह दफनाए गए हैं। ए
और जोड़ाए जाते हैं वहां प्रसिद्ध धार्मिक दफनाए गए हैं।

द्वितीय महायुद्ध में वेस्टमिन्स्टर एबी को भी बमों के धमाके
से काफी क्षति हुई थी।

संसद्-भवन की इमारत उत्तरकाल की गोथिक कला-शैली
बनी है। इस इमारत को वेस्ट मिन्स्टर का नया राजमहल भी क
है। इस इमारत का डिज़ाइन सर चार्ल्स बैरी ने तैयार किया
और इसका निर्माण १८४० से १८५० के बीच हुआ। यह इमा
टेम्स नदी के किनारे कुछ नीची भूमि में बनी हुई है इसलिए इस
भाग में कुछ कमी आ गई है। यह इमारत आठ एकड़ के क्षेत्र
में बनी है। इसमें ग्यारह आंगन और विभिन्न स्थानों पर सीढ़ि
बनी हैं। इसके कमरों की संख्या १,१०० है। हाउस आफ काम
अर्थात् लोकसभा की स्थापना उत्तरी भाग में की गई है। हा
आफ लार्ड्स अथवा लार्ड-सभा दक्षिणी भाग में है। इसके अतिरि
संसद के उच्चाधिकारियों के निवास का भी इसमें प्रबन्ध है। ब्रि
की लोकसभा के अध्यक्ष यहीं रहते हैं।

इस इमारत की एक विशेषता यह है कि ब्रिटेन के शासकों
मूर्तियां यहां स्थापित हैं, जो अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होती हैं। इ
अतिरिक्त इसकी तीन मीनारें हैं जो इस सुन्दरता को और बढ़ा
हैं। सबसे ऊंची और सबसे अधिक मोहक विक्टोरिया टावर है।
३३६ फुट ऊंची है और इसकी एक-एक भुजा ७५ फुट की है। ऐ
चौकोर सुडौल मीनार दूसरी कदाचित् ही हो। क्लाक टावर
ऊंचाई ३२० फुट है। यहां संसार-प्रसिद्ध घड़ी बिगबेन लगी हुई
यह घड़ी चारों ओर दिखाई पड़ती है। घड़ी का आकार चौकोर
है—डायल तेईस फुट लम्बा और तेईस फुट चौड़ा। दो-दो फुट के
अक्षर हैं और मिनट की सुई १४ फुट लम्बी है। समय का बोध एक
के बजने से होता जो साढ़े तेरह टन का है। दिन को विक्टोरिया
के झण्डे से और रात को क्लाक टावर के प्रकाश से इस बात

का सकेत मिलता रहता है कि संसद् का अधिवेशन हो रहा है अथवा नहीं।

हाउस ग्राफ लार्ड्स गौथिक कला-शैली के अनुसार बना हुआ है और पूरी तरह सजाया गया है। इसकी लम्बाई ६० फुट, चौड़ाई ४५ फुट और ऊंचाई भी ४५ फुट है। १६४१ मे आग से हाउस ग्राफ कामन्स के हाल को क्षति पहुचने के बाद से १६५० में उसके ठीक-ठाक हो जाने तक यह हाउस ग्राफ कामन्स अर्थात् लोकसभा के उपयोग में आता रहा।

हाउस ग्राफ कामन्स का हाल १० मई, १६४१ को आग से जलकर नष्ट हो गया था। नया भवन सर गाइल्स स्काट के डिजाइन के आधार पर तैयार किया गया है। इसकी लम्बाई १३० फुट, चौड़ाई ४८ फुट और ऊंचाई ४३ फुट है। ब्रिटेन की लोकसभा के अध्यक्ष का आसन आस्ट्रेलिया से प्राप्त हुआ है। सदन की मेज कैनेडा से आई है। अध्यक्ष के आसन के ऊपर प्रेस गैलरी है, जिसमें १६० लोगों के लिए स्थान है। अध्यक्ष के ठीक सामने विशेष और साधारण दर्शकों के बैठने की गैलरी है। सदन के दायें-बायें डिवीजन लाबी है। मत-विभाजन के समय समर्थन करने वाले सदस्य दायीं तरफ की लाबी में और विरोध करने वाले सदस्य बायी तरफ की लाबी में चले जाते हैं।

समीप ही वेस्ट मिन्स्टर हाल है। १३४६ मे सम्राट चार्ल्स प्रथम को मृत्यु-दण्ड यहीं पर दिया गया था। जिस समय सम्राट चार्ल्स का मुकदमा हो रहा था उस समय वे जिस स्थल पर बैठे थे उसे आज भी पहचाना जा सकता है। उस स्थल पर पीतल की छोटी-सी चौकी रखी है। यह सुन्दर हाल १०६७ में विलियम द्वितीय ने तैयार कराया था। इसकी लम्बाई २६० फुट, चौड़ाई ६८ फुट और ऊंचाई ६२ फुट है। इसकी सुन्दर छत १३६६ में रिचार्ड द्वितीय ने तैयार कराई थी। कई अन्य ऐतिहासिक संस्मरण इस हाल के साथ जुड़े हुए हैं। यहीं १३२७ मे एडवर्ड द्वितीय ने गद्दी का त्याग किया। १६५३ में

क्रामवेल को यहीं पर लार्ड प्रोटेक्टर घोषित किया गया। १५३५
यहीं पर सर टामस मूर को मृत्यु दण्ड मिला।

सेन्ट जेम्स पार्क और पार्लामेंट स्क्वेयर के एक सिरे पर बंक
ब्रिटेन के राजवंश का निवास-स्थान बकिंघम पैलेस है। जिस दि
सम्राट अथवा सम्राज्ञी महल में होते हैं, शाही झण्डा लहराता रह
है। इस महल का नाम बकिंघम हाउस के नाम पर पड़ा है, जो
स्थान पर १७०३ में ड्यूक आफ बकिंघम ने बनवाया था। ज
तृतीय ने इसे १७६२ में खरीद लिया और १७६७ में इसीमें डा
जानसन के साथ उनकी प्रसिद्ध भेंट हुई थी। १८२५ में जार्ज च
ने इसमें परिवर्तन करा इसे नये सिरे से बनवाया, किन्तु सरक
तौर पर सम्राट के निवास-स्थान का दर्जा इसे सम्राज्ञी विक्टोरि
के समय से प्राप्त हुआ। १९४०-४४ में हवाई आक्रमणों में म
को कई बार क्षति पहुंची। दर्शकों को महल के भीतर जाने
इजाजत नहीं है।

पिकिडली सर्कस लन्दन का सबसे व्यस्त स्थान है। नई दि
के कनाट सर्कस जैसा सुरुचिपूर्ण और सुन्दर तो यह स्थान नहीं
किन्तु आमोद-प्रमोद का केन्द्र होने के नाते शाम को यहां की
बहुत बढ़ जाती है। सायंकाल के समय साफ़-सुथरे और रंग-बि
पोशाक वाले लोग यहां आते हैं और रेस्तरां व थियेटर आदि की
जाते दिखाई देते हैं। तरह-तरह की दमकती हुई बत्तियों से स
वातावरण जगमगा उठता है। कोई आधा दर्जन महत्वपूर्ण स
यहां आकर मिलती हैं। दिन में कोई ऐसा क्षण ही नहीं होता
यहां बहुत अधिक भीड़ न रहती हो।

चेलसिया टेम्स नदी के किनारे-किनारे डेढ़ मील लम्बी
सुन्दर बस्ती है। सोलहवीं शताब्दी के बाद से यह कुछ प्रमुख लोगों
रहने का स्थान रही है। यहां पर सर टामस मूर और टामस कार
ईल के निवास-स्थान सुरक्षित हैं, बल्कि स्मरण रहे कि टामस कार
ईल तो चेलसिया के सन्त के नाम से विख्यात भी हो गए थे।

ब्रिटिश म्यूजियम की गणना ससार के सर्वोत्तम और सम्पन्न अजायबघरों मे की जानी चाहिए। इसकी स्थापना १७५३ में हुई थी। इसमे लगभग ससार के सभी देशों की वस्तुएं संगृहीत हैं। इसमे पाण्डुलिपियों का एक अलग भाग है। उधर लन्दन म्यूजियम से ब्रिटेन के ही सामाजिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

स्वयं पत्रकारी से अनुराग होने के कारण फ्लीट स्ट्रीट ने मुझे विशेष आकर्षित किया, किन्तु वहा पहुंचने पर मैंने उसमे कोई विशेषता नही देखी। ब्रिटेन के अधिकाश समाचारपत्र इसी स्थान पर प्रकाशित होते हैं और यद्यपि वे प्रकाशित इसी जगह होते हैं, पर उनका मुद्रण आदि पिछवाड़े की सडको, स्क्वायरों आदि मे होता है। सायंकाल छः बजे से रात के बारह-एक बजे तक यहा बडी चहल-पहल रहती है। आधी रात को बाहर भेजे जाने वाले समाचारपत्रों को रेलगाड़ियों तक पहुंचाने की धुन रहती है। पत्रों के लन्दन सस्करण सवेरे तीन बजे तक छपते रहते हैं। कुछ काल पश्चात् सायंकाल के सस्करणों के लिए काम-धाम आरम्भ हो जाता है।

यों तो ब्रिटेन की प्रत्येक वस्तु का कुछ न कुछ ऐतिहासिक महत्त्व है, पर यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि वेस्ट मिन्स्टर एबी में एक प्रकार से इग्लैण्ड का सारा इतिहास सुरक्षित है।

लन्दन की अन्य कोई वस्तु मुझे विशेष दर्शनीय नहीं जान पड़ी। इग्लैंड के गिरजाघर रोम के गिरजाघरों के सामने तुच्छ जान पड़ते हैं। वहां का पार्लियामेण्ट भवन केवल इसलिए विशेषता रखता है कि आधुनिक काल के प्रजातन्त्रों मे शायद इग्लैंड की प्रजातन्त्रात्मक संस्थाएं सबसे पुरानी हैं और वे यहां बैठती हैं। बकिंघम पैलेस मे भी कम से कम बाहर से मुझे कोई विशेषता नहीं दिखी। भारत के पुराने नरेशों के कुछ महल बकिंघम पैलेस से कहीं अच्छे दिखते हैं। अजायबघरों के यहां के संग्रहों की अपेक्षा वाहिरा, रोम के वैटिकन और फ्रांस के अजायबघरों के संग्रह कहीं बड़े हैं और इग्लैंड की चित्रशालाओं से रोम के वैटिकन, तथा फ्लारेंस की चित्रशालाएं कही

ब्रिटिश म्यूजियम की गणना संसार के सर्वोत्तम और सम्पन्न अजायबघरों में की जानी चाहिए। इसकी स्थापना १७५३ में हुई थी। इसमें लगभग संसार के सभी देशों की वस्तुएं संगृहीत हैं। इसमें पाण्डुलिपियों का एक अलग भाग है। उधर लन्दन म्यूजियम से ब्रिटेन के ही सामाजिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

स्वयं पत्रकारी से अनुराग होने के कारण फ्लीट स्ट्रीट ने मुझे विशेष आकर्षित किया, किन्तु वहां पहुंचने पर मैंने उसमें कोई विशेषता नहीं देखी। ब्रिटेन के अधिकांश समाचारपत्र इसी स्थान पर प्रकाशित होते हैं और यद्यपि वे प्रकाशित इसी जगह होते हैं, पर उनका मुद्रण आदि पिछवाड़े की सड़कों, स्क्वायरों आदि में होता है। सायंकाल छः बजे से रात के बारह-एक बजे तक यहां बड़ी चहल-पहल रहती है। आधी रात को बाहर भेजे जाने वाले समाचारपत्रों को रेलगाड़ियों तक पहुंचाने की धुन रहती है। पत्रों के लन्दन संस्करण सवेरे तीन बजे तक छपते रहते हैं। कुछ काल पश्चात् सायंकाल के संस्करणों के लिए काम-धाम आरम्भ हो जाता है।

यों तो ब्रिटेन की प्रत्येक वस्तु का कुछ न कुछ ऐतिहासिक महत्त्व है, पर यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि वेस्ट मिन्स्टर एबी में एक प्रकार से इंग्लैण्ड का सारा इतिहास सुरक्षित है।

लन्दन की अन्य कोई वस्तु मुझे विशेष दर्शनीय नहीं जान पड़ी। इंग्लैंड के गिरजाघर रोम के गिरजाघरों के सामने तुच्छ जान पड़ते हैं। वहां का पार्लियामेण्ट भवन केवल इसलिए विशेषता रखता है कि आधुनिक काल के प्रजातन्त्रों में शायद इंग्लैंड की प्रजातन्त्रात्मक संस्थाएं सबसे पुरानी हैं और वे यहां बैठती हैं। बकिंघम पैलेस में भी कम से कम बाहर से मुझे कोई विशेषता नहीं दिखी। भारत के पुराने नरेशों के कुछ महल बकिंघम पैलेस से कहीं अच्छे दिखते हैं। अजायबघरों के यहां के संग्रहों की अपेक्षा काहिरा, रोम के वैटिकन और फ्रांस के अजायबघरों के संग्रह कहीं बड़े हैं और इंग्लैंड की चित्रशालाओं से रोम के वैटिकन, तथा फ्लारेंस की चित्रशालाएं कहीं

नाम कई बार आने का कष्ट उठाया। 'आज' हिन्दी का सबसे पु
दैनिक है और 'आज' के लिए यह गौरव की बात है कि विदेश
भी उसका प्रतिनिधि है।

बी० बी० सी० से मेरा एक लम्बा भाषण प्रसारित हु
लन्दन के कई प्रधान व्यक्तियों से भी हमारी मुलाकातें हुईं।

अनुदार दल और मजदूर दल के दफ्तरों में जाकर हमने
संगठन को समझने का खूब प्रयत्न किया। राजनीति में अनुराग
वालों को इन दलों के संगठन को अच्छी तरह समझने का अवसर प्र
करना चाहिए। जगमोहनदास ने इस विषय में काफी मेहनत क

ब्रिटेन की तीन प्रमुख पार्टियां हैं—लिबरल पार्टी, कञ्जरवेटिव
और लेबर पार्टी। उन दिनों ब्रिटेन की कञ्जरवेटिव पार्टी की सर
थी। लिबरल पार्टी का युग एक तरह से बीत चुका है। पार्टी
उदार दृष्टिकोण कोरा राजनीतिक सिद्धान्तवाद नहीं, सजीव जी
दर्शन है। लिबरल नेताओं का मूलमन्त्र यह था कि राज्य मनुष्
लिए है न कि मनुष्य राज्य के लिए। पार्टी की स्थापना करने
श्रेय जान पिम को दिया जा सकता है। उन्होंने शाही सत्ता को चुन
दी और स्टुआर्ट शासकों की बजाय संसद् की प्रभुसत्ता की मा
उठाई। धीरे-धीरे 'ह्विग' शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए
लगा जो ताज को संसद् से नीचा दर्जा देते थे। उन्नीसवीं शताब्
लगभग 'ह्विग' शब्द का प्रयोग परिवर्तन चाहने वालों के लिए
लगा। टोरी परिवर्तन के विरोधी माने जाते थे। मध्य उन्नी
शताब्दी के लगभग लिबरल शब्द का प्रयोग होने लगा, और १८
में ग्लेडस्टन के नेतृत्व में पहली लिबरल सरकार बनी। हर्बर्ट हे
एसक्विथ, डेविड लायड जार्ज, क्लीमेण्ट डेवीज, फ्रैंक बायर्स भ
पार्टी के अन्य प्रमुख व्यक्ति हुए।

लेबर पार्टी ब्रिटेन की यथार्थ में समाजवादी पार्टी है और उस
लक्ष्य ब्रिटेन में समाजवादी व्यवस्था कायम करना है। पार्टी
संविधान के अनुसार पार्टी का उद्देश्य यह है कि श्रमिक वर्ग को उ

से होने वाली भाय का उचित भाग प्राप्त हो, समाज में वितरण न्यायपूर्ण हो, भौर उत्पादन के साधन राष्ट्र के पास हों। समाजवाद के जिन चार सिद्धान्तों मे पार्टी की ग्रास्था है वे इस प्रकार हैं—सभी को विकास के बराबर अवसर मिले, धन का उचित बटवारा हो, लोकतन्त्र के द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति पर जनता का ही नियन्त्रण हो भौर राष्ट्र की उत्पादनशक्ति का जनता के हित मे अधिक मे अधिक उपयोग किया जाए। समाजवाद शब्द का अर्थ एक विशेष जीवन-व्यवस्था के सूचक के रूप मे राबर्ट ओवन ने किया था। लेबर पार्टी के विचार मे सच्चे लोकतन्त्र का अर्थ है कि ससद के द्वारा जनता का देश की अर्थ-व्यवस्था पर अधिक से अधिक नियन्त्रण हो। लेबर पार्टी का प्रधान कार्यालय ट्रासपोर्ट हाउस, लन्दन मे है। इमारत की मालिक ट्रासपोर्ट ऐण्ड जनरल वर्कर्स यूनियन है, जिससे पार्टी ने किराये पर जगह ले रखी है। पार्टी का प्रधान कार्यालय बहुत बड़ा नही है। एक सेक्रेटरी होता है जो प्रति वर्ष पार्टी के सम्मेलन मे चुना जाता है। पार्टी के सदस्यो की सख्या पचास लाख से अधिक है। कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सम्बन्ध रखने से लेबर पार्टी सदा इन्कार करती रही है। १९४६ में पार्टी के सविधान मे ऐसा सशोधन किया गया कि कम्युनिस्ट पार्टी के साथ किसी प्रकार का सहयोग असम्भव हो गया है। लेबर पार्टी से ८० ट्रेड यूनियन सस्थाए सबद्ध हैं। पार्टी के प्रत्येक सदस्य को कम से कम ६ शिलिंग वार्षिक शुल्क देना होता है। श्रम-आन्दोलन के तीनों अंगो लेबर पार्टी, ट्रेड यूनियन कांग्रेस भौर को-ओपरेटिव यूनियन के बीच तालमेल रखने के लिए नेशनल कौंसिल भ्राफ लेबर की एन०सी० एल० की स्थापना की गई। कौसिल में लेबर पार्टी, ट्रेड यूनियन कांग्रेस भौर कोआपरेटिव यूनियन के आठ सदस्य रहते हैं। लेबर पार्टी का जन्म १९०० में हुआ। रेम्से मैकडोनल्ड पार्टी के संस्थापको में थे। लेबर पार्टी के पास धन तो कभी अधिक नहीं रहा, किन्तु आरम्भ में वह अत्यन्त निर्धन थी। पार्टी की स्थापना के बाद सात वर्ष में ही पार्टी के सदस्यों की सख्या दस लाख से ऊपर पहुच गई। १९०० में

राजभक्त कहे जाते थे। हार्ले, बोलिंग ब्रोक और नाटिंघम के समय टोरी पार्टी शिखर पर थी। यद्यपि विलियम पिट (बड़े) बोलिंग ब्रोक से प्रभावित हुए थे और ब्रिटेन की नौशक्ति को सबल बनाकर प्रतिष्ठा को प्राप्त कर उन्होंने भावी टोरी नेताओं को साम्राज्यवादी नीति का मार्ग दिखलाया, फिर भी उन्हें किसी पार्टी-विशेष के साथ आबद्ध करना उचित नहीं। राजनीतिक दृष्टि से यद्यपि एडवर्ड बर्क चैथम की तरह ही मंजे हुए व्हिग थे, पर यथार्थ रूप में वे एक कञ्जरवेटिव विचारक थे। लड़खड़ाती हुई टोरी पार्टी का अन्त करके कञ्जरवेटिव पार्टी की नींव डालना सर रॉबर्ट पील काम था, यद्यपि उन्होंने यह शब्द जे० एम० क्रोकर से लिया था, जो संसद् के कम बोलने वाले सदस्यों में से थे, किन्तु प्रतिभाशाली एवं प्रभावशाली लेख लिखा करते थे। बाद में ३३ वर्ष के संधि-काल के पश्चात् डिज़रायली के समय में संसद में कञ्जरवेटिव पार्टी का बहुमत हुआ। डिज़रायली का कथन था कि हम अपनी संस्थाओं की रक्षा करेंगे, साम्राज्य को सगठित रखेंगे और जनता का रहन-सहन सुधारेंगे। स्मरण रहे कि डिज़रायली ने ही देश में ब्रिटेन के प्रभाव की स्थापना की थी। डिज़रायली के पश्चात् लॉर्ड सालिसबरी का युग आया, जिसमें उन्होंने "देश में प्रगति और विदेश में शान्ति" की स्थापना की। आधुनिक कञ्जरवेटिव सिद्धान्तों की नींव डाली जेजेफ चेम्बरलेन ने। वे साम्राज्य के विभिन्न अंगों को विशेष रियायतें देने के पक्षपाती थे। पहले और दूसरे महायुद्ध के बीच स्टेनले बाल्डविन ने, जो तीन बार प्रधान मन्त्री रहे थे, यह नीति स्थिर की कि उद्योग में पारस्परिक सहयोग न केवल समृद्धि के लिए अनिवार्य है बल्कि संयमित जीवन-व्यवस्था के लिए भी आवश्यक है। कञ्जरवेटिव पार्टी की नीति सदा ही व्यापारियों में न्यायपूर्ण होड़ को प्रोत्साहन देने की रही है। उद्योगों के और अधिक राष्ट्रीयकरण को कञ्जरवेटिव नेता रोक देने का विचार करते रहे हैं। लोहा और इस्पात उद्योग के सम्बन्ध में तो उन्होंने लेबर सरकार द्वारा किए गए राष्ट्रीयकरण को ही समाप्त कर

किया था। विश्वशान्ति की नीति पर चलते हुए सार्वजनिक स्वास्थ्य और समाज-कल्याण की योजनाओं के प्रसार का पार्टी बहुत महत्त्व देती है। इसी दिशा में बहुत अधिक काम तो मजदूरदल के अधिकार में हुआ, क्योंकि ब्रिटेन की अर्थ-व्यवस्था काफी भारग्रस्त थी। वर्तमान समय में पार्टी की नीति है कि साम्राज्य और कामनवेल्थ के देशों के साथ सहयोग करने से शान्ति और समृद्धि का अधिक से अधिक अवसर मिलेगा। कंजरवेटिव नेताओं का विचार है कि साम्राज्य में सहयोग न होने से ब्रिटेन उत्पादन-स्तर, सामाजिक सेवाएं, रोजगारों का स्तर ऊंचा रह ही नहीं सकता। इसलिए अब इससे भी अधिक निर्भर करने पर जोर दिया जाता है। राष्ट्रीय हितों की वृद्धि, अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता की रक्षा और शान्ति का समर्थन इस पार्टी के मूल सिद्धान्त हैं कई बार सुझाव दिया जाता है कि कंजरवेटिव और लेबर सरकारों की नीतियों में बहुत बड़ा अन्तर नहीं, किन्तु कंजरवेटिव नेताओं का कहना है कि यह धारणा भ्रामक है। व्यक्ति को सर्वाधिक महत्त्व देने के कारण कंजरवेटिव पार्टी के सिद्धान्त मूलतः समाजवादियों के विरुद्ध हैं। राज्य की सार्वभौमिक सत्ता से कंजरवेटिव पक्ष की दुश्मनी है। इसीलिए कंजरवेटिव पार्टी रूसी ढंग के एकाधिकार-वादी राज्य और साम्यवादी सिद्धान्तों का इतना कड़ा विरोध करती है। वर्ग-युद्ध और साम्यवाद के विरुद्ध कंजरवेटिव पार्टी मसीही सिद्धान्तों की रक्षा, राजतन्त्र, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, सम्पत्ति अधिकार, कामनवेल्थ और ऐसे साम्राज्य का समर्थन करती है जिसमें शान्ति और सहयोग हो। जीवन की विविधता को बनाए रखना और सबकी भलाई के लिए शासन-व्यवस्था को दृढ़ बनाना ही उसका लक्ष्य है।

नाटक हमने लन्दन में तीन देखे। एक श्री एन० सी० हंटर का 'वाटर्स आफ दि मून', दूसरा बर्नार्ड शा का 'मिलियनेरेस' और ... शेक्सपियर का 'रोमियो जूलियट'। नाटकों का ऐक्टिंग

सुन्दर और स्वाभाविक था। लन्दन के इस काल के अच्छे से अच्छे कलाकारों ने इन नाटकों में भाग लिया था। [illegible] सबसे अच्छा जान पड़ा। बर्नार्ड शा का नाटक [illegible] हुआ। उनके कई नाटक इससे कहीं अच्छे हैं। शेक्सपियर का 'रोमियो जूलियट' साहित्यिक वर्णनों के सिवा प्रदर्शन मे इस समय के योग्य [illegible] जान पड़ा। भारत मे पौराणिक और ऐतिहासिक नाटक आज भी सफलतापूर्वक खेले जाते हैं, फिर इस नाटक को [illegible] क्यों हुई, यह कहना कठिन है। जो कुछ हो, जब [illegible] दास और मेरा तीनों का ही यह मत हुआ तब इसमें (मत में) [illegible] नहीं है, यह कहना कठिन है। एक बात और हुई। पूरा का पूरा नाटक एक ही दृश्य पर खेला गया, इससे भी इसके सौन्दर्य में कमी रही।

संसार के मानचित्र में ब्रिटेन छोटा प्रतीत होता है और सचमुच संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन और भारत आदि महान देशों की तुलना में ब्रिटेन एक अत्यन्त छोटा देश है, किन्तु वह एक बहुत बड़े साम्राज्य का केन्द्र-बिन्दु रहा और कुछ दूर तक अभी भी है। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल और साम्राज्य मे डोमीनियन, उपनिवेश, संरक्षित प्रदेश, ट्रस्टीशिप प्रदेश आदि हैं। किसी समय संसार की जनसंख्या का पांचवां भाग ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल और साम्राज्य का निवासी था जो समूचे संसार मे फैला था। इसलिए कहावत चली आती थी कि ब्रिटिश साम्राज्य मे सूर्य नहीं डूबता।

इसमें कोई अत्युक्ति नहीं कि एक तरह से ब्रिटिश साम्राज्य का इतिहास पिछली तीन-चार शताब्दियों का इतिहास है। इन शताब्दियो में ब्रिटेन जैसे छोटे द्वीप का प्रभाव संसार के कोने-कोने मे फैला और वह सारी दुनिया पर छा गया। जीवन का कोई क्षेत्र शेष न रहा, जिसमें किसी न किसी रूप में ब्रिटेन का प्रभाव विद्यमान न हो। दो महायुद्धों की भीषण ज्वाला का सामना करके भी आज ब्रिटेन यदि

पहली श्रेणी का नहीं तो भी दूसरी श्रेणी का शक्तिशाली देश
प्रथम विश्व युद्ध के बाद इसकी शक्ति का उतना ह्रास नहीं हुआ
जितना कि द्वितीय युद्ध के पश्चात्। विश्व के राजनीतिक क्षेत्र
ब्रिटेन का पहले जितना महत्त्व न रहने के तीन प्रधान कारण हैं
एक तो यह कि ब्रिटेन के पास इतना बड़ा देश नहीं है जिसमें
अपनी सैनिक शक्ति को एक स्थान पर संगठित कर सके जैसा
अमेरिका, रूस और चीन आदि विशाल [illegible] के बाद का
हैं, दूसरे हवाई शक्ति का विकास हो जाने के बाद दूर-दूर फैले
सामरिक महत्त्व के ठिकानों का अब पहले जितना महत्त्व नहीं रहा
और तीसरे यदि यह मान लिया जाए कि ब्रिटिश कामनवेल्थ
साधारण एक संगठित राजनीतिक इकाई के रूप में विकसित हो
सकेगा तो यह भी कम सम्भव प्रतीत होता है, क्योंकि देश-देश
राष्ट्रीयता की लहर बल पकड़ती जा रही है।

ब्रिटेन यूरोप के उत्तर-पश्चिमी सिरे पर स्थित है। बीच के समुद्र
का न तो विस्तार ही अधिक है और न गहराई ही। भौगोलिक दृष्टि
से अलग होते हुए भी जलवायु, वनस्पति और संस्कृति आदि को
देखते हुए ब्रिटेन यूरोप का ही अंग है। इंग्लैंड, वेल्स, स्काटलैंड,
उत्तरी आयरलैंड, आइल आफ मान और चैनल आइलैंड को मिलाकर
यूनाइटेड किंगडम अथवा संक्षिप्त रूप में यू० के० कहा जाता है।
इसका क्षेत्रफल ६४,२३६ वर्गमील और जनसंख्या—५,००,३३,०००
है। देश का अधिकतर भाग पठारी है, किन्तु जंगलों की बहुलता है।
खनिज-साधन सम्पन्न होने के कारण उद्योगों के विकास में इस देश
को बड़ी सहायता मिली है।

ब्रिटेन वैधानिक राजतन्त्र है और आधुनिक काल की संसदीय
ढंग की लोकतन्त्र सरकार व्यवस्था का जन्मदाता है। शासनाधिकार
एक शासक और संसद् के पास है। ब्रिटेन का शासक अंगूठी के हीरे
की तरह केवल चमक-दमक के लिए है। वास्तव में सत्ता जनता में,
जनता के द्वारा संसद् में और संसद् के द्वारा मन्त्रिमण्डल में निहित

रहती है। कर्ता-धर्ता प्रधानमन्त्री होता है। ब्रिटेन की संसद् में दो सदन हैं—लॉर्ड-सभा और लोकसभा। इन दोनों में लोकसभा का महत्त्व अधिक है, यद्यपि प्रारम्भ में लार्ड-सभा ही अधिक महत्त्वपूर्ण ी। ब्रिटेन का संविधान समय के परिवर्तन के साथ-साथ जनता की च्छाओं और उमगों के अनुसार बदलता गया है। महिलाएं भी लोकसभा की सदस्य हो सकती हैं, और १६२८ से उनको भी पुरुषों के समान मताधिकार प्राप्त हैं।

अब लीजिए ब्रिटेन के वाणिज्य और उद्योग को। यद्यपि ब्रिटेन के अधिक भाग में खेती होती है, किन्तु कारखानों का उत्पादन, खनिज-पदार्थों को खोदना और व्यापार ही ब्रिटेन के मुख्य जीवन-सचार-साधन हैं। ब्रिटेन का सबसे बहुमूल्य खनिज पदार्थ कोयला है। इसके अतिरिक्त वहां सूती, ऊनी, रेशमी, लिनन और नकली रेशमी कपड़ा बड़ी मात्रा में तैयार होता है। मशीनों और बिजली के सामान का उत्पादन भी बड़े पैमाने पर होता है। ब्रिटेन कोयला और तैयार माल का निर्यात करता है और कपास, ऊन, इमारती लकड़ी, पेट्रोलियम, तेल, खाद्य पदार्थ, शराब, तम्बाकू आदि का आयात करता है।

जहां तक शिक्षा का सम्बन्ध है, १६४५ के शिक्षा-कानून के अधीन शिक्षा-व्यवस्था को प्रगतिशील ढग पर पुनर्गठित किया गया है। देश में टेक्नीकल स्कूल, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कालेज और कृषि-कालेज, पॉलीटेक्निक कालेज आदि भी समुचित सख्या में हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा स्वतन्त्र है और अनिवार्य भी। ग्यारह विश्वविद्यालय हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—आक्सफर्ड, कैम्ब्रिज, डरहम, लन्दन, मैंचेस्टर, बरमिंघम, लिवरपूल, लीड्स, शेफील्ड, ब्रिस्टल और रीडिंग। आक्सफार्ड और कैम्ब्रिज विश्वविदित हैं। जैसी ख्याति इन दो नगरों की ज्ञान के लिए है, वैसी ही सौन्दर्य के लिए भी है।

विगत शताब्दियों में ब्रिटेन की आश्चर्यजनक सफलता का कारण उसकी विदेश-नीति थी। ब्रिटेन ने यह बात अच्छी तरह समझ ली थी कि यूरोप में उसके लिए कोई भविष्य नहीं है, इसलिए वह यूरोपीय

संघर्षों में बिलकुल अलग रहा, जिसके बड़े अच्छे परिणाम नि॰ और दुनिया के कम उन्नत इलाकों में प्रभाव जमाने में ब्रिटेन दु॰ के अन्य सभी देशों से बाजी ले गया। मोटे तौर पर ब्रिटेन की विदे॰ नीति की आधारभूत बातें इस प्रकार हैं—

(१) विभिन्न शक्तिशाली देशों के बीच शक्ति सन्तुलन बना रखना।

(२) हालैंड, बेलजियम, लक्सेमबर्ग आदि यूरोप के निचले दे॰ की स्वतन्त्रता बनाए रखना। इसका परिणाम यह रहा कि लन्द॰ प्रदेश को, जोकि ब्रिटेन का मर्मस्थल है, कोई खतरा उत्पन्न नहीं हुआ।

(३) समुद्री शक्ति में सर्वोपरि बने रहना, जिससे ब्रिटेन को व्यापार की पूरी सुविधा रही।

इन सिद्धान्तों पर आधारित ब्रिटेन की विदेश-नीति अत्यन्त सफ॰ सिद्ध हुई।

आज ब्रिटेन को अपने भविष्य की चिन्ता ने घेर रखा है और उसकी यह चिन्ता स्वाभाविक है। अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति-सन्तुलन में उसका पलड़ा काफी हलका बैठता है। अमेरिका और रूस के शक्तिशाली समुद्री बेड़ों के कारण ब्रिटेन की समुद्र पर एकछत्र सत्ता नहीं रही। हवाई शक्ति के विकास से समुद्री शक्ति का वैसे भी पहले जितना महत्त्व नहीं रहा है। फिर व्यापार में ब्रिटेन को अमेरिका, कैनेडा, जापान आदि देशों का कड़ा मुकाबला करना पड़ रहा है। ब्रिटेन के लिए व्यापार का महत्त्व इसलिए और भी अधिक है कि बिना व्यापार के उसका निर्वाह ही कठिन है। ब्रिटेन की अर्थ-व्यवस्था की सबसे बड़ी कमजोरी ही यही है कि उसके जीवन का स्रोत व्यापार है—कच्चे माल और खनिज पदार्थों के लिए उसे दूसरे देशों का मुख ताकना पड़ता है।

ब्रिटेन के इन चार शताब्दियों के उत्कर्ष-काल में हमें ब्रिटेन की राजनीति में दो विरोधी बातें दृष्टिगोचर होती हैं—व्यक्तियों को

ाधिक से अधिक स्वतन्त्रता और अपने अधीन देशों को अधिक से अधिक काल तक परतन्त्र रखने का यत्न। पहली बात के दृष्टान्त —(१) ब्रिटेन में इतनी अधिक आबादी रहते हुए भी वहा यदि कोई बसना चाहे तो उसके मार्ग मे कोई रुकावट नहीं। ससार में शायद ब्रिटेन और भारत ही ऐसे देश हैं जहां इमीग्रेशन का कोई बंधन नहीं हैं। (२) कितने ऐसे लोगों को ब्रिटेन ने आश्रय दिया जो अपने देश से निर्वासित किए गए। कार्ल मार्क्स कदाचित् इनमें सबसे प्रधान थे। (३) ब्रिटेन के निवासियो को अपने मत व्यक्त करने की भी सदा स्वाधीनता रही। दूसरी बात के दृष्टान्त हैं—अमेरिका, मिस्र, आयरलैण्ड, भारत आदि देशों को परतन्त्र रखने के नाना प्रकार के प्रयत्न। भारत को जिस प्रकार ब्रिटेन ने स्वाधीन किया वह तो उसकी परम्परा के विरुद्ध एक घटना हुई। जान पड़ता है कि ब्रिटेन ने अपनी इस नीति में अब परिवर्तन किया है अथवा उसे विवश हो यह परिवर्तन करना पड़ा है। जो कुछ हो, अपने इस अध्याय के अन्त मे मैं यह कहे बिना नही रह सकता कि आधुनिक युग को ब्रिटेन ने बहुत कुछ दिया है। जिस प्रकार प्राचीन समय मे भारत और चीन, मिस्र और अरब देशों एवं यूनान और रोम ने संसार की ज्ञान-वृद्धि की थी उसी तरह आधुनिक ससार को ब्रिटेन का ऋण मानना होगा। अंग्रेज जाति के चरित्र में ऐसी अनेक विशेषताएं हैं, जिन्होंने ब्रिटेन को यह गौरव प्रदान किया है।

लन्दन से हम कामनवेल्थ पार्लियामेण्ट कान्फ्रेंस के प्रतिनिधि एक विशेष (चार्टर्ड) प्लेन मे उन्नीस अगस्त की सन्ध्या को कैनेडा के लिए रवाना हुए।

कैनेडा

उत्तरी अमेरिका के उत्तर का देश कैनेडा के नाम से प्रसिद्ध है। छोटी-बड़ी जितनी झीलें इस देश में हैं उतनी अन्यत्र कहीं नहीं। इन झीलों की इस बहुतायत का कारण यह बताया जाता है कि यहां जाड़ों में जितनी बरफ गिरती है उतनी उत्तरी ध्रुव और उसके अत्यन्त समीप स्थल को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं गिरती। कहीं-कहीं और कहीं-कहीं तो इस बरफ की मुटाई पन्द्रह-पन्द्रह, बीस-बीस फुट तक हो जाती है। इस बरफ के गलकर पानी बनने तथा उसके भूमि के गढ़ों में भरने के कारण अपने-आप इतनी अधिक झीलों का निर्माण हो गया है। इन झीलों से अनेक बड़ी-बड़ी नदियां निकली हैं जिनमें से कुछ प्रशान्त महासागर और कुछ एटलांटिक महासागर को और वह इन समुद्रों में मिली हैं, जो समुद्र कैनेडा के पूर्वी और पश्चिमी भागों को स्पर्श करते हुए लहराया करते हैं। इस देश के उत्तरी भू-भाग में अनेक द्वीप हैं। कैनेडा बहुत बड़ा देश है। सारे देश का क्षेत्रफल ३८, ४५, १४४ वर्गमील है, जोकि समूचे यूरोप के क्षेत्रफल से भी अधिक है। पर्वत-श्रेणियां बहुत अधिक और फैली हुई नहीं हैं फिर भी ऊंचे से ऊंचे पर्वत माउण्ट लोगान की ऊंचाई है १९,८५० फुट। देश की धरती अधिकतर सम है। जंगलों की खूब भरमार है और जंगलों में देवदारु, चीड़, भोजपत्र आदि के वृक्षों की बहुतायत है। वनों में सिंह, व्याघ्रादि हिंसक पशुओं का निवास नहीं है, हिंसक पशुओं में केवल भालू और भेड़िये हैं। अन्य पशु-पक्षी भी कम ही हैं। देश खूब हरा-भरा है। झीलों, नदियों, पर्वतों, वनों और समुद्रों ने सारे देश पर प्राकृतिक सौन्दर्य की वर्षा-सी कर दी है।

कैनेडा के इतने बड़े देश होने पर भी यहां की आबादी कुल एक . चालीस लाख है, अर्थात् ग्रेट ब्रिटेन, भारत, पकिस्तान, चीन, . . आदि देशों में जहां वर्गमील पीछे पांच सौ से अधिक मनुष्य

रहते हैं, वहां कैनेडा में केवल चार। इसीलिए यहां प्राकृतिक साधनों का पूरा उपयोग नहीं हो रहा है। जमीन को ही लीजिए। समूचे देश की केवल बारह प्रतिशत जमीन में खेती होती है। यह इलाका लगभग १७, ५०, ००, ००० एकड़ है इसमें से भी विकसित ६, २०, ००, ००० एकड़ हैं। शेष भूमि या तो जंगल है या परती पड़ी है।

आबादी की कमी के कारण इस देश में बड़े-बड़े नगर नहीं हैं। बड़े से बड़ा शहर मांट्रियल है, जहां की आबादी साढ़े बारह लाख से कुछ अधिक है। एक लाख के ऊपर की जनसंख्या के दस नगर हैं। इनके नाम हैं मांट्रियल, टोरैंटो, वैंकूवर, विन्नीपेग, क्यूबेक, हैमिल्टन, ओटावा, एटमोण्टन, विंडसर और कालगरी। ओटावा कैनेडा की राजधानी है। ओटावा की आबादी एक लाख साठ हजार के लगभग है। इन शहरों को छोड़ देश में शेष छोटे-छोटे नगर और कस्बे हैं। जिस प्रकार यहां बहुत बड़े शहर नहीं उसी प्रकार बहुत छोटे गांव भी नहीं। सभी नगर, कस्बे आदि में बिजली तथा सब प्रकार की आधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं। सभी खूब साफ-सुथरे और अत्यन्त सम्पन्न दीख पड़ते हैं। सारा देश दस प्रान्तों में विभाजित है।

देश प्रजातान्त्रिक शासन से शासित होता है। केन्द्र की धारा-सभा है और दसों प्रान्तों की दस धारासभाएं हैं। केन्द्र और दसों प्रान्तों में मन्त्रिमण्डल हैं, जो धारासभाओं के प्रति जिम्मेदार हैं। परन्तु हर प्रान्त में प्रजातान्त्रिक शासन होते हुए भी हर प्रान्त का शासन-विधान एक-सा नहीं है। केन्द्र और प्रान्त में अनेक राजनैतिक दल हैं और विशेषता यह है कि सब प्रान्तों में एक-से नहीं। कैनेडा की प्रमुख राजनैतिक पार्टियां दो हैं—(१) लिबरल पार्टी और (२) कंजरवेटिव पार्टी, जो अब अपने को प्रगतिशील कंजरवेटिव पार्टी कहती है। संयुक्त कैनेडा की स्थापना के बाद से शासन की बागडोर इन्हीं दो पार्टियों के हाथ में रहती आई है। अब दो नई पार्टियों की स्थापना की गई है। इन पार्टियों के नाम हैं कोआपरेटिव

कामनवेल्थ पेट्रोलियम (सी० सी० एफ०) ग्रोर मॉनमन फ्रंटिड पार्टी।

लोगों के व्यवसाय भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं, पर अधिकांश लोग खेती और पशुपालन से गुजर-बसर करते हैं। यद्यपि भूमि के वितरण के सम्बन्ध में इस प्रकार का कोई कानून नहीं है कि कोई व्यक्ति इससे अधिक भूमि नहीं रख सकता, क्योंकि भूमि की कोई कमी नहीं है, पर अधिकांश फार्म सौ से डेढ़ सौ एकड़ के हैं, कोई-कोई तीन सौ से चार सौ एकड़ के भी हैं, परन्तु ऐसे कम हैं। इन फार्मों में हर प्रकार की खेती होती है। अनाज, साग-भाजी आदि सब उत्पन्न होते हैं, इसके सिवा घास होती है। गायें रहती हैं। कहीं-कहीं गायों के साथ भेड़ें, सुग्रर, मुर्गी और स्त्रियों के फरकोट जिनके चमड़े से बनते हैं वे सोमड़िया और 'मिंक' नामक जानवर। गायों का दूध फी दिन औसत दस से पन्द्रह सेर है, पर किसी-किसीका सवा मन तक। गायें दिन में तीन बार दुही जाती हैं।

इन फार्मों के सिवा कैनेडा में अन्य उद्योगों का भी काफी विकास हुआ है। कैनेडा वालों ने अपने देश में सबसे पहले बिजली पैदा की है, जो सारे उद्योगों की जड़ है। इसके बाद एल्यूमीनियम, अखबारी कागज, इस्पात इत्यादि के कारखाने हैं। सौभाग्य से कैनेडा में तेल भी मिल गया है और लोहा भी।

संसार का आठ प्रतिशत अखबारी कागज कैनेडा में तैयार होता है। संसार में सबसे अधिक निकिल, प्लेटिनम और एसबेस्टस कैनेडा में पाया जाता है। लकड़ी का गूदा तैयार करने और एल्यूमीनियम व सोना निकालने में उसका दूसरा नम्बर है।

कैनेडा इस समय संसार का सबसे सम्पन्न देश है। चाहे अभी देश में और व्यक्तियों के पास अमेरिका के सदृश धन जमा न हुआ हो, पर यहां के डालर का मूल्य अमेरिका के डालर से भी थोड़ा अधिक है।

देश-निवासियों का जीवन-स्तर बहुत ऊंचा है। बहुत अधिक धनवान यहां नहीं हैं, गरीब तो कोई है ही नहीं। मध्यम श्रेणी के लोग

हो अधिक हैं। औसत आमदनी है लगभग नौ सौ डालर यानी पैंतालीस सौ रुपया माहवारी। इसीलिए यहा की पालियामेण्ट के सदस्यों का वेतन दुनिया के हर देश की धारासभा के सदस्यों से अधिक है। वे दस हजार डालर माने पचास हजार रुपया प्रति वर्ष पाते हैं। मन्त्रियों का वेतन सदस्यों के वेतन से केवल दुगुना है। कैनेडा में सभी सम्पन्न हैं, शिक्षित हैं, सुखी हैं, सन्तुष्ट हैं, इसीलिए नीरोग और दीर्घजीवी भी हैं। नये देशों की नई आबादी के सदृश जोशीले हैं। कैनेडा के श्वेतों ने आस्ट्रेलिया के श्वेतों के समान वहा के मूल निवासियों का संहार किया है और इन मूल निवासियों की संख्या इतने बड़े कैनेडा देश में केवल सवा लाख रह गई है।

हमने इन झीलों वाले देश मे प्रवेश किया यहां के सबसे बड़े नगर माट्रियल से। हम वहा पहुंचे तारीख तीस की रात को।

दूसरे दिन प्रात.काल ग्यारह बजे से हमारी घुमाई शुरू हुई जो तारीख सात सितम्बर को मध्याह्न मे ओटावा पहुचने तक कहीं बसों में, कहीं ट्रेन मे और कहीं मोटरों पर बराबर चलती रही।

तारीख इकत्तीस को हमने बसों में कोई अस्सी मील का चक्कर लगाया। इस प्रथम दिन की घुमाई से ही हमें कैनेडा देश के सौन्दर्य का पता लग गया। होटल से रवाना हो, पहले हम कुछ देर माट्रियल शहर मे घूमे। सर्वथा आधुनिक नया शहर। विशाल मकान, चौड़ी सड़कें। यहां के जिन दर्शनीय स्थानों को हमने देखा वे निम्नलिखित थे—

स्टेट जोजेफ का स्मारक—यह इमारत अत्यन्त भव्य है और उस समय तक पूरी नहीं बन पाई थी।

नात्रेडाम—यह माट्रियल का मुख्य गिरजाघर है।

सेंट जेम्स गिरजाघर—यह रोम के सेंट पीटर गिरजाघर के नमूने पर बना हुआ है। पर आकार में उसका आधा है।

कोई छः बजे सन्ध्या को हम माट्रियल के विण्डसर स्टेशन से रेल द्वारा क्यूबेक शहर को रवाना हुए। रेलवे लाइन की चौड़ाई मुझे

भारतीय रेलों से कुछ कम जान पड़ी। रेल में दिन की यात्रा करने के डब्बे थे। अच्छी ट्रेन थी, पर ट्रेन में कोई खास बात न थी। सन्ध्या का हमारा भोजन रेल में हुआ और क्यूबेक हम लगभग दस बजे रात को पहुंचे।

ता० १ सितम्बर को हम बसों पर कोई तीन सौ मील घूमे। आज हमने क्यूबेक नगर देखा और सिमसा नदी का बिजली उत्पन्न करने का कारखाना तथा अरविदा की संसार की सबसे बड़ी एल्युमीनियम की फैक्टरी में से एक फैक्टरी। यात्रियों के लिए कैनेडा में क्यूबेक अपना एक विशेष स्थान रखता है। नवीन संसार की बजाय यहां कुछ प्राचीनता की झलक दिखती है। क्यूबेक पुल, जो नगर से कुछ ही मील दूर सेंट लारेंस पर बना है, संसार में अपने ढंग का सबसे बड़ा पुल है।

ता० २ को प्रातःकाल ६ बजे क्यूबेक के प्रान्तीय पार्लियामेंट हाउस में हमारा वहां के प्रधानमन्त्री और धारासभा के अध्यक्ष की ओर से स्वागत था। ३ बजे क्यूबेक प्रान्त के गवर्नर के यहां हमारा स्वागत हुआ। और इसके बाद हम सब प्रतिनिधियों की दो टुकड़ियां बना दी गईं, एक गई हैलीफैक्स नामक नगर को और दूसरी चारलोटी टाउन को।

ता० ३ की शाम को हम क्यूबेक से रवाना हुए थे। ता० ४ के तीसरे पहर ४ बजे हम बोरडन पहुंचे। बोरडन से चारलोटी टाउन जाने के लिए हमें समुद्र का ६ मील का मार्ग पार करना पड़ता था। यह हिस्सा एक नाव पार करती है, जिसमें इंगलिश चैनल के सदृश पूरी ट्रेन के डब्बे लद जाते हैं। इस नाव में १६ मालगाड़ी के डब्बे, ८ सवारी गाड़ी की बोगियां, ६० मोटरें और ६५० मुसाफिर एक-साथ समुद्र के एक पार से दूसरे पार पर उतारे जाते हैं।

इंगलिश चैनल की ट्रेन नाव द्वारा किस प्रकार उतरती है यह देखने की मेरी बड़ी इच्छा थी, पर पेरिस से लन्दन वायुयान से जाने के कारण मैं उसे न देख सका था। यहां उसे देख लिया। और जब

उसे मैं देख रहा था तब मुझे याद आई हिन्दी की एक कहावत—'कभी नाव गाड़ी पर और कभी गाड़ी नाव पर।' यहां तो पूरी रेल गाड़ी ही नाव पर लदकर जा रही थी।

लगभग ६ बजे पूरे चौबीस घण्टे की रेल की यात्रा कर हम चारलोटी टाउन स्टेशन पर पहुंचे। चारलोटी टाउन स्टेशन पर उस प्रान्त के प्रधानमन्त्री तथा अन्य मन्त्रियों ने हम लोगों का स्वागत किया।

दूसरे दिन प्रिंस एडवर्ड आइलेंड तथा वहां की कुछ चीजें हमें दिखाई गईं। प्रिंस एडवर्ड आइलेंड कैनेडा का उद्यान-द्वीप माना जाता है।

ता० ५ की प्रातःकाल ७ बजे की रेल से हमें सेंट जान नगर को रवाना होना था। अतः ४ बजे से ही लोगों ने उठकर तैयार होना आरम्भ किया और ठीक समय हम लोग चारलोटी टाउन से रवाना हो गए। प्रिंस एडवर्ड द्वीप से लौटते हुए आज हमने फिर समुद्र को उसी प्रकार नाव में पार किया जिस प्रकार प्रिंस एडवर्ड आइलेंड जाते हुए किया था। लगभग १० बजे हम केप्टार मेटायून पहुंचे और वहां से बस पर बैठ सैकविली का आकाशवाणी-केन्द्र देखा, जो कैनेडा की आकाशवाणी का सबसे बड़ा शार्टवेव केन्द्र है और जहां से अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका आदि देशों को चौदह भाषाओं में ब्राडकास्ट किया जाता है।

भोजन के बाद बस से ही हम काकटन स्टेशन पर पहुंचे और करीब ४॥ बजे वहां से रवाना हो ६॥ बजे सेंट जान नगर पहुंच गए।

कुछ देर बाद हैलीफैक्स गई हुई हमारी टुकड़ी भी यहां पहुंच गई। रात को इसी होटल में सेंट जान नगर के मेयर द्वारा हमें भोज दिया गया।

हमारी जो टुकड़ी हैलीफैक्स गई थी वह सेंट जान से ता० ५ की ही रात को, रात के भोजन के बाद, फ्रेडरिक्शन नामक नगर को चली गई, पर हमारी टुकड़ी रात को सेंट जान नगर में ही ठहरी।

अधिक थी।

साढ़े पांच बजे हम होटल लौटे और सन्ध्या के भोजन के बाद स्टेशन चल दिए जहां से हमारी स्पेशल ट्रेन साढ़े आठ बजे रात को ओटावा रवाना होती थी।

ता० ३० अगस्त की रात को हमने इस झीलों वाले देश में पैर रखा था। इस एक सप्ताह में हम इस देश के ओंटारियो, क्यूबेक और प्रिंस एडवर्ड आइलैंड इन तीन प्रान्तों मे घूमे। इस यात्रा में हमने इस हरे-भरे देश के कितने नगर, कितने कस्बे, कितनी चीजें, कितना जीवन देखा!

ओटावा पहुंचते ही सबसे पहले मेरा ध्यान जिन दो वस्तुओं ने आकर्षित किया उनमें पहली थी वह होटल जिसमें ओटावा मे हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी। इस होटल का नाम था शेट्ट लारियट। होटल की विशालता, भव्यता, सफाई आदि चीजें तो दर्शनीय थी ही, इस दौरे मे हम जितने होटलों में ठहरे उन सबसे इन सभी बातों मे यह होटल शायद आगे था, पर सबसे बड़ी बात जिसपर ध्यान गया, वह थी इस होटल का रेलवे स्टेशन से सम्बन्ध। ओटावा के मुख्य स्टेशन और इस होटल के बीच केवल एक सड़क थी और इस सड़क के नीचे से सुरंग के रूप में स्टेशन से होटल तक एक रास्ता आया था। स्टेशन से बिना किसी सडक आदि को पार किए यात्री मय बड़े से बड़े सामान के इस होटल मे आ सकते थे। मालूम हुआ कि यह होटल तथा कैनेडा के सभी मुख्य स्थानो के होटल रेलवे के हैं और रेलवे के प्रबन्ध में ही चलते हैं। दूसरी बात जिसपर ध्यान पहुंचा, वह थी तारो की दर। यहा के तारो मे जहां तार भेजा जाता है उस स्थान का पता चाहे कितना ही बडा क्यो न हो, उस पते के शब्दों और भेजने वाले के नाम के दाम नहीं लगते।

आगे चलकर हमने अमेरिका में भी इसी प्रकार के होटल देखे।

कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी परिषद्

कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी परिषद् का अधिवेशन ता० ८ सितम्बर से १३ सितम्बर तक होने वाला था।

कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी परिषद् का यह अधिवेशन प्रत्येक दो वर्षों के अन्तर से होता है। न्यूजीलैंड का अधिवेशन सन् ५० के २१ नवम्बर से १ दिसम्बर तक ६ दिन चला था। यह अधिवेशन भी उतने ही दिन के लिए रखा गया था। परन्तु अन्तर यह था कि न्यूजीलैण्ड के अधिवेशन में पहले दिन को छोड़ शेष पांच दिनों में पांच विषयों पर विचार हुआ था, यहां हुआ तीन विषयों पर। न्यूजीलैंड में जिन पांच विषयों पर विचार किया गया था वे थे—(१) कामनवेल्थ देशों का आर्थिक सम्बन्ध और विकास, (२) पार्लियामेंट द्वारा के अनुसार चलने वाली सरकारें, (३) प्रशान्त महासागर के देशों का सम्बन्ध और सुरक्षा, (४) कामनवेल्थ देशों में एक देश से दूसरे देश में जनसंख्या का उतारना और (५) वैदेशिक नीति। कैनेडा में होने वाली परिषद् के तीन विषय थे—(१) आबादी का उतारना, (२) आर्थिक सम्बन्ध, और (३) अन्तर्राष्ट्रीय विषय तथा सुरक्षा।

भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल समेत इस परिषद् में १०८ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

परिषद् के इस अधिवेशन की कार्रवाई ता० ८ सितम्बर को कैनेडा के पार्लियामेंट हाउस के सीनेट चैम्बर में आरम्भ हुई। एसोसियेशन के सभापति आजकल आस्ट्रेलिया के मन्त्री हैरोल्ड होल्ट थे। उन्होंने सभापति का आसन ग्रहण कर अपने भाषण में गत दो वर्षों के कार्य का सिंहावलोकन कराया।

न्यूजीलैण्ड की परिषद् के सदृश ही यहां भी हर दिन के अधिवेशन के भिन्न-भिन्न अध्यक्ष होने वाले थे और बहस की भी वैसी ही व्यवस्था रहने वाली थी अर्थात् हर दिन की बहस का प्रातःकाल एक महाशय और भोजन के बाद तीसरे पहर एक अन्य महाशय उद्घाटन करें। वे आधा घण्टा बोलें। इन दो वक्ताओं के अतिरिक्त

यथासम्भव हर प्रतिनिधि-मण्डल की ओर से एक-एक वक्ता बोले। इन्हें पन्द्रह मिनट का समय मिले। अन्त में जिन सज्जन ने प्रातःकाल उद्घाटन-भाषण दिया हो उनके संक्षिप्त भाषण के पश्चात् उस दिन की कार्रवाई समाप्त हो। इन परिषदों में केवल विचार-विनिमय होता है, कोई प्रस्ताव आदि नहीं।

पहले दिन आबादी के तबादले पर बहस निश्चित की गई थी। प्रातःकाल का उद्घाटन-भाषण न्यूज़ीलैंण्ड के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता श्री विलफ्रेड हेनरी फौरचून देने वाले थे और तीसरे पहर का उद्घाटन-भाषण भारत के श्री मावलंकर जी। आबादी के तबादले पर ही न्यूज़ीलैंण्ड में मैं बोला था। वर्षों से मेरा यह विषय रहा था अतः आज भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल की ओर से मैं भी बोलने वाला था।

श्री फौरचून ने कहा कि ब्रिटेन का पुनर्निर्माण होना चाहिए। उन्होंने अपने सारे भाषण में न्यूज़ीलैण्ड की सफलताओं के ही पुल बाँधे।

इसके बाद दोपहर के भोजन के लिए उठने तक छः भाषण और हुए और भोजनोपरान्त श्री मावलंकर का उद्घाटन-भाषण हुआ।

श्री मावलंकर का भाषण बड़े ऊंचे स्तर पर भारतीय परम्परा के सर्वथा अनुरूप हुआ।

श्री मावलंकर के पश्चात् श्री होल्ट बोले। श्री होल्ट ने न्यूज़ीलैंड-परिषद् की इस विषय की कार्यवाही का उद्घाटन किया था। परन्तु उनके वहां के और यहां के भाषण में काफी अन्तर था। न्यूज़ीलैंड में श्री होल्ट के भाषण के पश्चात् तीसरे पहर का उद्घाटन भाषण भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल के नेता की हैसियत से मैंने दिया था और मेरे उस भाषण का श्री होल्ट तथा अन्यों पर ऐसा प्रभाव-सा पड़ा था कि कार्यवाही के अन्त में श्री होल्ट ने जो कुछ कहा था उस सिलसिले में वे निम्नलिखित बातें भी कह गए थे—

"सबसे पहले मैं भारत के सेठ गोविन्ददास के भाषण की चर्चा

कम था, जिन्होंने अपना मत अत्यधिक स्पष्ट, बलशाली और प्रभावोत्पादक ढंग से रखा है। मैं यह कहना चाहता हूं और मेरे कथन से चाहे आश्चर्य ही क्यों न हो कि यह जरूरी है कि सेठ गोविन्ददास ने जो विषय इतनी योग्यता के साथ उठाई है उसपर मुझे विस्तार के साथ विचार करना चाहिए। यदि मुझे ज्ञात होता कि सेठ गोविन्ददास द्वारा उठाए गए विषय पर लोगों की इतनी अधिक दिलचस्पी होगी तो मैं इस विषय पर आस्ट्रेलिया के दृष्टिकोण के सम्बन्ध में आज अधिक समय लेता, फिर चाहे मुझे इस सम्मेलन के सामने कुछ अन्य बहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत करने का समय भले ही न मिलता, पर मैं स्वीकार करता हू कि मैं गुमराह हो गया।"

आज भी मैं मौजूद था और श्री होल्ट के बाद ही मैं बोलने वाला था अतः आज वे न्यूजीलैण्ड की अपेक्षा बहुत अधिक सतर्क थे, साथ ही बहुत ही मुलायम।

श्री होल्ट के बाद मेरा भाषण हुआ। अपने भाषण के भी मैं उसी भाग के सम्बन्ध में कुछ कह सकता हूं जो प्रकाशित हो चुका है। न्यूजीलैंड में तो जिस दिन आबादी के तबादले पर विचार-विनिमय हुआ था, वह दिन अखबार वालो के लिए खुला हुआ था अतः न्यूजीलैण्ड के मेरे भाषण की चर्चा भी बहुत हुई थी और उस विषय पर मैं अपनी सुदूर दक्षिण-पूर्व की पुस्तक में काफी लिख भी सका था। कैनेडा की कार्यवाही अखबार वालों के लिए खुली न रहने के कारण यह सम्भव नहीं है।

मैंने अपने भाषण में आबादी के तबादले के सवाल को अत्यन्त विवाद-ग्रस्त बता यह कहा कि सच्चा कामनवेल्थ तो तभी हो सकता है जब कामनवेल्थ में रहने वाले देशों के निवासियों को एक देश से जाकर दूसरे देश में बसने का समान रूप से अधिकार हो और इस सम्बन्ध में जाति-भेद और रंग-भेद की नीति की समाप्ति हो। मैंने [illegible] पाकिस्तान, ग्रेट ब्रिटेन आदि देशों का एक ओर तथा कैनेडा, [illegible], न्यूजीलैण्ड आदि देशों का दूसरी ओर उदाहरण दे यह

था कि यहां प्रथम प्रकार के देशों में प्रतिमील पीछे तीन सौ से पांच सौ आदमी रहते हैं, वहां दूसरे प्रकार के देशों में चार से पांच। यदि अधिक आबादी वाले देशों को अपनी आबादी अन्य देशों में भेजने की आवश्यकता है तो कम आबादी वाले देशों को अधिक आबादी की, क्योंकि बिना अधिक आबादी के न तो इन देशों के नैसर्गिक धन का उपयोग हो सकता है और न इन देशों की सुरक्षा। और अन्त में मैंने यह कहा कि जब तक जाति-भेद और रंग-भेद का अन्त न होगा तब तक यह प्रश्न हल नहीं हो सकता, जो प्रश्न मैं संसार के इस काल के सब प्रश्नों से अधिक महत्त्व का मानता हूं। जाति-भेद और रंग-भेद का कितना कुत्सित रूप हो गया है, इसके लिए मैंने दक्षिण अफ्रीका का दृष्टान्त दिया और कहा कि वहां के जो लोग इस भेद को मिटाने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह कर रहे हैं उन्हें बेंत और कोड़ों की सजा दी जा रही है। इस बर्बर सजा की व्यवस्था की है अपने को सभ्य और सुसंस्कृत कहने वाले श्वेतों ने। बर्बर शब्द मेरे मुंह से निकलते ही दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों के क्रोध का कोई पार ही न रहा। न्यूजीलैण्ड के समान इस बार यद्यपि किसीने 'वाक आउट' का प्रदर्शन नहीं किया, पर इसके बाद जो भाषण दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि का हुआ उसमें ऐसी कोई बात बाकी नहीं रही जो उसने भारत के विरुद्ध न कही हो। अन्त में यहा तक कह डाला कि अस्पृश्यता मानने वाले भारतीयों को अन्य लोगों के लिए 'बर्बर' शब्द का उपयोग न करना चाहिए। मैंने तत्काल बीच में बोलकर कहा कि 'अस्पृश्यता' को हम अपने संविधान में जुर्म बना चुके हैं। आज की बहस का अन्त हुआ भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल की एक सदस्या श्रीमती अनसूयाबाई काले के भाषण से। सुन्दर भाषण था उनका भी।

मुझे आज एक नयी बात जान पड़ी। पश्चिमी सभ्यता के अनुयायी अपने को सबसे अधिक सभ्य और सुसंस्कृत मानते हैं। पश्चिमी सभ्यता का जितना फैलाव हुआ है उतना शायद किसी भी सभ्यता

कक था, जिन्होंने अपना मत अत्यधिक स्पष्ट, बनवानी
स्पादक ढग से रखा है। मैं यह कहना चाहता हूं और मेरे कल
चाहे आश्चर्य ही क्यों न हो कि यह जरूरी है कि सेठ गोविन्द
जो विषय इतनी योग्यता के साथ उठाई है उसपर मुझे कि
के साथ विचार करना चाहिए। यदि मुझे ज्ञात होता कि सेठ गो
दास द्वारा उठाए गए विषय पर लोगों की इतनी अधिक दिलच
होगी तो मैं इस विषय पर आस्ट्रेलिया के दृष्टिकोण के सम्बन्ध
आज अधिक समय लेना, फिर चाहे मुझे इस सम्मेलन के सामने
अन्य बहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत करने का समय भले ही न मिलता, स
स्वीकार करता हू कि मैं गुमराह हो गया।"

आज भी मैं मौजूद था और श्री होल्ट के बाद ही मैं बोल
वाला था अतः आज वे न्यूज़ीलैण्ड की अपेक्षा बहुत अधिक सतर्क थे
साथ ही बहुत ही मुलायम।

श्री होल्ट के बाद मेरा भाषण हुआ। अपने भाषण के भी मैं उसी
भाग के सम्बन्ध मे कुछ कह सकता हूं जो प्रकाशित हो चुका है।
न्यूज़ीलैंड में तो जिस दिन आबादी के तबादले पर विचार-विनिमय
हुआ था, वह दिन अखबार वालो के लिए खुला हुआ था अतः न्यूज़ी-
लैण्ड के मेरे भाषण की चर्चा भी बहुत हुई थी और उस विषय पर
मैं अपनी सुदूर दक्षिण-पूर्व की पुस्तक में काफी लिख भी सका था।
कैनेडा की कार्यवाही अखबार वालों के लिए खुली न रहने के कारण
यह सम्भव नही है।

मैंने अपने भाषण मे आबादी के तबादले के सवाल को अत्यन्त
विवाद-ग्रस्त बता यह कहा कि सच्चा कामनवेल्थ तो तभी हो सकता
जब कामनवेल्थ मे रहने वाले देशो के निवासियों को एक देश से
दूसरे देश में बसने का समान रूप से अधिकार हो और इस
जाति-भेद और रग-भेद की नीति की समाप्ति हो। मैंने
ब्रिटेन आदि देशों का एक ओर तथा कैनेडा,
आदि देशों का दूसरी ओर उदाहरण दे यह

ो प्रथम प्रकार के देशों में वर्गमील पीछे तीन सौ से
ज़्यादा भी रहते हैं, वहां दूसरे प्रकार के देशों में चार से
अधिक आबादी वाले देशों को अपनी आबादी अन्य देशों
आवश्यकता है तो कम आबादी वाले देशों को अधिक
क्योंकि बिना अधिक आबादी के न तो इन देशों के
का उपयोग हो सकता है और न इन देशों की सुरक्षा।
मैंने यह कहा कि जब तक जाति-भेद और रंग-भेद का
ा तब तक यह प्रश्न हल नहीं हो सकता, जो प्रश्न मैं
इस काल के सब प्रश्नों से अधिक महत्व का मानता हूं।
और रंग-भेद का कितना कुत्सित रूप हो गया है, इसके
क्षिण अफ्रीका का दृष्टान्त दिया और कहा कि वहां के
स भेद को मिटाने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह कर रहे हैं
और कोड़ों की सजा दी जा रही है। इस बर्बर सजा की
ती है अपने को सभ्य और सुसंस्कृत कहने वाले श्वेतों ने।
मेरे मुंह से निकलते ही दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों
ा कोई पार ही न रहा। न्यूजीलैंड के समान इस बार
सीने 'वाक आउट' का प्रदर्शन नहीं किया, पर इसके
भाषण दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि का हुआ उसमें ऐसी
त बाकी नहीं रही जो उसने भारत के विरुद्ध न कही हो।
यहां तक कह डाला कि अस्पृश्यता मानने वाले भारतीयों
ा लोगों के लिए 'बर्बर' शब्द का उपयोग न करना चाहिए।
काल बीच में बोलकर कहा कि 'अस्पृश्यता' को हम अपने
न' में जुर्म बना चुके हैं। आज की बहस का अन्त हुआ
य प्रतिनिधि-मण्डल की एक सदस्या श्रीमती अनसूयाबाई
के भाषण से। सुन्दर भाषण था उनका भी।

मुझे आज एक नयी बात जान पड़ी। पश्चिमी सभ्यता के अनु-
अपने को सबसे अधिक सभ्य और सुसंस्कृत मानते हैं। पश्चिमी
ता का जितना फैलाव हुआ है उतना शायद किसी भी सभ्यता

के बारे में विचारों का [illegible]

रोचक ढंग से रखा है। मैं यह कहना चाहता हूँ और मेरा ख्याल है आप मानेंगे भी यदि न हो कि यह सचाई है कि मेरे मंत्रिमण्डल को जितने उलझे मामलों में काम करना है उसके मुझे जितने से अपना विचार करना चाहिए। यदि मुझे पता होता कि मेरे यहाँ आने द्वारा अपने गत विषय पर लोगों को इतनी अधिक दिलचस्पी होगी तो मैं इस विषय पर भारतीय जिलों के दृष्टिकोण से अध्ययन करके अधिक समय लेता, फिर चाहे मुझे इस सम्मेलन में भाग लेने अपने अनुभव का सामग्री प्रस्तुत करने का समय भले ही न मिलता, पर स्वीकार करता हूँ कि मैं गुमराह हो गया।"

आज भी मैं मौजूद था और श्री होल्ट के बाद ही मैं बोलने वाला था पर आज के न्यूजीलैंड की अपेक्षा बहुत अधिक नरमी के साथ ही बहुत ही मुलायम।

श्री होल्ट के बाद मेरा भाषण हुआ। अपने भाषण के जो मैं उसी भाग के सम्बन्ध में कुछ कह सकता हूँ जो प्रकाशित हो चुका है। न्यूजीलैंड में तो जिस दिन आबादी के तबादले पर विचार-विनिमय हुआ था, वह दिन अखबार वालों के लिए खुला हुआ था अतः न्यूजीलैंड के मेरे भाषण की चर्चा भी बहुत हुई थी और उस विषय पर मैं अपनी पुस्तक दक्षिण-पूर्व की पुस्तक में काफी लिख भी सका था। कैनेडा की कार्यवाही अखबार वालों के लिए खुली न रहने के कारण यह सम्भव नहीं है।

मैंने अपने भाषण में आबादी के तबादले के सवाल को अत्यन्त विवाद-ग्रस्त बता यह कहा कि सच्चा कामनवेल्थ तो तभी हो सकता है जब कामनवेल्थ में रहने वाले देशों के निवासियों को एक देश से जाकर दूसरे देश में बसने का समान रूप से अधिकार हो और इस सम्बन्ध में जाति-भेद और रंग-भेद की नीति की समाप्ति हो। मैंने भारत, पाकिस्तान, ग्रेट ब्रिटेन आदि देशों का एक ओर तथा कैनेडा, [illegible]लिया, न्यूज़ी[illegible] देशों का दूसरी ओर उदाहरण दे यह

बताया कि जहां प्रथम प्रकार के देशों में वर्गमील पीछे तीन सौ से पांच सौ आदमी रहते हैं, वहां दूसरे प्रकार के देशों में चार से आठ। यदि अधिक आबादी वाले देशों को अपनी आबादी अन्य देशों में भेजने की आवश्यकता है तो कम आबादी वाले देशों को अधिक आबादी की, क्योंकि बिना अधिक आबादी के न तो इन देशों के नैसर्गिक धन का उपयोग हो सकता है और न इन देशों की सुरक्षा। और अन्त में मैंने यह कहा कि जब तक जाति-भेद और रंग-भेद का अन्त न होगा तब तक यह प्रश्न हल नहीं हो सकता, जो प्रश्न मैं संसार के इस काल के सब प्रश्नों से अधिक महत्त्व का मानता हूं। जाति-भेद और रंग-भेद का कितना कुत्सित रूप हो गया है, इसके लिए मैंने दक्षिण अफ्रीका का दृष्टान्त दिया और कहा कि वहां के जो लोग इस भेद को मिटाने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह कर रहे हैं उन्हें बेंत और कोड़ों की सजा दी जा रही है। इस बर्बर सजा की व्यवस्था की है अपने को सभ्य और सुसंस्कृत कहने वाले श्वेतों ने। बर्बर शब्द मेरे मुह से निकलते ही दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों के क्रोध का कोई पार ही न रहा। न्यूजीलैण्ड के समान इस बार यद्यपि किसीने 'वाक आउट' का प्रदर्शन नहीं किया, पर इसके बाद जो भाषण दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि का हुआ उसमें ऐसी कोई बात बाकी नहीं रही जो उसने भारत के विरुद्ध न कही हो। अन्त में यहां तक कह डाला कि अस्पृश्यता मानने वाले भारतीयों को अन्य लोगों के लिए 'बर्बर' शब्द का उपयोग न करना चाहिए। मैंने तत्काल बीच में बोलकर कहा कि 'अस्पृश्यता' को हम अपने संविधान में जुर्म बना चुके हैं। आज की बहस का अन्त हुआ भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल की एक सदस्या श्रीमती अनसूयाबाई काले के भाषण से। सुन्दर भाषण था उनका भी।

मुझे आज एक नयी बात जान पड़ी। पश्चिमी सभ्यता के अनुयायी अपने को सबसे अधिक सभ्य और सुसंस्कृत मानते हैं। पश्चिमी सभ्यता का जितना फैलाव हुआ है उतना शायद किसी भी सभ्यता

भौतिक विकास के कार्य अभी प्रारम्भ ही हुए हैं, जहाँ ये दोनों दे
इस दिशा में कहीं आगे बढ़ चुके हैं। और संसार के आधुनिक काल
अमेरिका तथा रूस इन दो सबसे प्रधान देशों में भी अमेरिका का स्था
रूस से आगे था। इसका प्रधान कारण यह था कि आविर्भौति
जगत् में जो कुछ था, जाना जा चुका था, उसके हर क्षेत्र का अमेरिक
में पूर्ण विकास हो चुका था, रूस में उस समय यह हो रहा था
पूर्णता को नहीं पहुँच पाया था।

न्यूयार्क में हमारे कार्यक्रम के प्रधान भाग थे—(१) न्यूयार्क के
प्रधान-प्रधान स्थानों को देखना, (२) न्यूयार्क के मुख्य-मुख्य लोगों
से मिलना, (३) सार्वजनिक भाषण आदि। कार्यक्रम की विविधता
तथा न्यूयार्क की महानता के कारण तय हुआ कि हम लोगों को कम
से कम दो सप्ताह वहाँ ठहरना होगा, समय पर दो दिन इधर-उधर
भी हो सकते हैं। पर ता० ३ के प्रातः काल के पहले मेरा न्यूयार्क छोड़ना
नहीं हो सकता था क्योंकि ता० २ अक्तूबर की रात को गांधी जी
के जन्म-दिवस की जो सार्वजनिक सभा अमेरिका की इंडिया लीग
ने रखी थी उस सभा का प्रथम वक्ता मैं नियुक्त किया गया था।

दूसरे दिन प्रातःकाल से हमारा न्यूयार्क का कार्यक्रम आरम्भ
हुआ और इस कार्यक्रम के प्रारम्भ होने के पश्चात् न्यूयार्क छोड़ने
तक हम सभी कितने व्यस्त रहे! कार्यक्रम की इस व्यस्तता के कारण
ही हमें न्यूयार्क ता० ७ अक्तूबर तक ठहरना पड़ा। इन १८ दिनों
में हमने न्यूयार्क में क्या-क्या देखा, क्या-क्या किया, किस-किससे
मिले। मेरे जीवन में सदा व्यस्तता रहते हुए भी इन १८ दिनों में
जितनी व्यस्तता रही उतनी कम बार ही रही थी।

बम्बई के सदृश न्यूयार्क एक द्वीप पर बसा है। इस द्वीप का
नाम है मनहटन। यह द्वीप बहुत बड़ा नहीं है। इसकी लम्बाई है
साढ़े बारह मील और चौड़ाई है ढाई मील। बम्बई में जिस प्रकार भूमि
है उसी प्रकार न्यूयार्क में भी है। इसीलिए यहाँ की इमारतें
ऊंची हैं। फैलाव का काम यहाँ ऊंचाई करती है। मैं

...। न्यूयार्क में सबसे अधिक ध्यान को आकर्षित करती है।
...ों का न्यूयार्क आना हम कनेडा के मांट्रियल और टोरेंटो में
...ख चुके थे, पर मांट्रियल और टोरेंटो की इमारतों से यहाँ की
...तें कहीं अधिक ऊंची थीं। इनकी ऊंचाई के कारण इन्हें अंग्रेजी-
... में एक नया नाम दिया गया है—स्काई स्क्रैपर्स। पर इससे यह
...मझा जाए कि न्यूयार्क में नीचे मकान हैं ही नहीं, वरन् सब
...लाकर तो शायद नीचे मकान ही अधिक हैं, कम से कम बहुत
...क ऊंचे तो गिनती के ही हैं। बहुत ऊंची इमारतें इनके अनुपात
...बहुत अधिक नीची इमारतों से घिरे रहने के कारण मीनारों के
...ा दिखती हैं, इसके कारण चाहे बहुत ऊंची इमारतों की भव्यता बढ़
... हो, पर बहुत ऊंची और बहुत नीची इमारतों के इस सम्मिश्रण से
...र की शोभा मेरे मतानुसार कम हो गई है। यद्यपि कहीं-कहीं इस
...्कार का मिश्रण सुषमा लाता है, वस्तु-विशेष में विशिष्ट रूप से,
...ई जगह, कम से कम जहां वस्तुएं सामूहिक रूप से दृष्टिगोचर होती
... वहां, यह मिश्रण सुषमा में समतल न रह सकने के कारण दृष्टि में
...ारकिरापन पैदा कर देता है। मेरे मत से न्यूयार्क में इस मिश्रण
...ी वजह से ऊंची इमारतों को जो मीनार का-सा रूप मिला है उसके
...ारण सौन्दर्य की कमी हुई है। फिर भी इतनी ऊंची इमारतें दुनिया
... किसी अन्य स्थान में नहीं और ये इमारतें ही न्यूयार्क की सबसे
...ड़ी विशेषता हैं।

इमारतों के बाद जो दूसरी चीज इस नगर में ध्यान को आकर्षित करती है वह हैं यहां की सड़कें। चौड़ी और लम्बी सड़कों को यहां एवेन्यू कहते हैं और इन एवेन्युओं को इन एवेन्युओं से कम लम्बी और कम चौड़ी सड़कें जो समानान्तर से काटती हुई चलती हैं उन्हें कहते हैं स्ट्रीट। सारा न्यूयार्क नगर इन एवेन्युओं और स्ट्रीटों का समानान्तर की चौकड़ी वाला जाल-सा है। चौकड़ियों के जाल के बीच में इमारतें हैं और चौकड़ियों के जाल की डोरियां हैं ये एवेन्यू तथा स्ट्रीट। कैसा व्यावहारिक ताना-बाना-सा बुना हुआ है!

सुना यह गया कि पहले यह नगर ऐसे व्यवस्थित रूप से बसा हु
नहीं था। नगर के कुछ पुराने विभागों में अभी भी यह व्यवस्था न
है, पर धीरे-धीरे शहर को व्यवस्थित बनाने की योजना बनी प
अब तो नगर के कुछ थोड़े-से विभागों को छोड़ सारा का सारा न
एक योजना बनाकर बसाया हुआ नगर जान पड़ता है। स्काई स्के
के बाद इस प्रकार की सड़कें इस नगर की सबसे बड़ी विशेषता
और पेरिस, जयपुर तथा अमेरिका के ही कुछ अन्य नगरों को छो
जो न्यूयार्क के पश्चात् न्यूयार्क के समान ही बनाए गए हैं, संसार
किसी अन्य देश के नगरों की बसावट में ऐसी व्यवस्था नहीं है।

तीसरी आकर्षक वस्तु यहां के यातायात के साधन हैं। मोट
जितनी यहां हैं उतनी संसार के किसी देश के किसी नगर में नहीं
मोटरों के सिवा हैं ट्राम, बसें और सबवे। ट्राम और बसें तो सब
जगह हैं, पर सबवे लन्दन की ट्यूब रेलों के समान ही बिजली की
रेलें हैं, जो न्यूयार्क और लन्दन को छोड़ बहुत कम स्थानों में हैं
लन्दन में ट्यूब रेलें जमीन के अन्दर तलघरों में चलती हैं, न्यूया
की सबवे जमीन के भीतर और ऊपर दोनों जगह, जहां जैसी सुविध
हो। लन्दन की ट्यूब रेलें न्यूयार्क की सबवे से अच्छी हैं, पर किराय
सबवे का जितना कम है उतना संसार की किसी सवारी का नहीं
दस सेंट अर्थात् लगभग आठ आने पैसे में आप न्यूयार्क के सुदूर
सुदूर स्थान की यात्रा कर सकते हैं। इन सबवे रेलों के प्लेटफार्म पर
इस प्रकार के फाटक लगे हुए हैं कि उनके एक छेद में आपके दस सेंट
का सिक्का डालते ही वह फाटक खुल जाता है। फाटक के भीतर
जाकर आप सुदूर से सुदूर स्थान को रेलें बदलते हुए चले जाए।
हां, एक बार जहां आप फाटक से निकले वहां फिर से घुसने के लिए
आपको पुनः वह सिक्का डालना होगा। इसका अर्थ हुआ कि यदि
कोई सबवे से कहीं जाना चाहे तो वह स्थान निकट हो या दूर उसे दस
सेंट लगेंगे। अर्थात् एक देश में चिट्ठी या तार भेजने में, चाहे वह
किसी निकटवर्ती स्थान को भेजा गया हो चाहे दूरस्थ स्थान को, जिस

है एक वर्ण, एक संस्कृति तथा एकभाषी अंग्रेज और अमेरिकन जाति में। और यह अन्तर उनकी एक भाषा रहते हुए भी उस भाषा में भी आ गया है। अंग्रेज कभी अतिशयोक्तियों का उपयोग नहीं करता और अमेरिकन बिना अतिशयोक्तियों के बोल ही नहीं सकता। और भाषा के साथ ही उनकी वेश-भूषा भी इंग्लैण्ड ही नहीं, पुराने यूरोपीय देशों से भी भिन्न है। यूरोपीय ढग के कपड़े पहनते हुए भी उनकी टाई प्रायः बड़ी चमकदार रहती है। रंग-बिरंगी बुशशर्ट एक नई वस्तु निकली है, अरे, कोट तक कभी कभी दो रंग का होता है, आस्तीनें एक रंग की और आमना-सामना दूसरे रंग का।

न्यूयार्क, वहां की इमारतें, वहां की सड़कें, वहां की सवारियां, वहां की रोशनी, वहां के मानव, उनकी चहल-पहल, उनका धन, उनका वैभव, सारा दृश्य देखकर आदमी दंग-सा रह जाता है, उसकी दृष्टि चकाचौंध-सी हो जाती है, और यदि वह इस चित्र के एक पहलू की ओर ही दृष्टिपात करे तो उसे यह नगर पृथ्वी का स्वर्ग दिखाई देता है, जैसा मेरे कुछ मित्रों ने मुझे कहा था। पर किसी भी चित्र का एक रुख ही नहीं होता, उसके अन्य रुख भी होते हैं और कोई भी अवलोकन तब तक पूर्ण नहीं होता, जब तक सब रुखों को देखने का यत्न न किया जाए। न्यूयार्क में अपनी अद्‌भुत विशेषताएं हैं इसमें सन्देह नहीं, पर इन विशेषताओं के साथ ही उसकी कुछ भयानक कमियां भी हैं। न्यूयार्क के जीवन को जो वस्तुएं चलाती हैं वे एक-दूसरे पर इतनी अधिक दूर तक अवलम्बित हैं कि यदि किसी एक छोटी-सी बात में व्यतिक्रम हो जाए तो वहां के जीवन का सारा प्रवाह एक क्षण में स्थगित हो जाता है। वहां इस प्रकार की कुछ घटनाएं हुई भी हैं। एक बार वहां के पानी का एक बड़ा नल फट गया। इसके कारण जिस एयर कंडीशन प्लाण्ट से नगर के मकान ठंडे रहते थे उसका काम रुक गया। गरमी का मौसम था, अतः नतीजा यह निकला कि दफ्तरों में काम होना कठिन हो गया, क्योंकि मकान इस तरह के बनाए गए हैं कि गर्मियों में बिना एयर कंडीशनिंग मशीनरी चले उनमें बैठकर काम करना असम्भव

है। अब सब लोग दफ्तर और घर छोड़कर सड़क पर बाहर नि
तब ऐसी भीड़ हुई कि मोटर, ट्राम, बसें चलना ही बन्द न हो ग
परन्तु लोगों का पैदल चलना भी कठिन हो गया और घरों में
नहीं पर बाहर भी लोगों का दम घुटने लगा। एक बार बिज
लिफ्ट चलानेवालों ने हड़ताल कर दी। बीसों-पचासों और सं
मंजिल की इमारतों पर चढ़ना और उनपर से उतरना कठि
नहीं असम्भव हो गया। ये दो घटनाएं तो न्यूयार्क में हो चुकी
इसी प्रकार की अन्य कोई भी घटना वहां हो सकती है और
घटना वहां के सारे जीवन को स्थगित कर सकती है। यद्यपि इ
निक सभ्यता वाले सभी नगरों के सम्बन्ध में थोड़ी-बहुत दूरी
यह बात कही जा सकती है, पर न्यूयार्क के सम्बन्ध में जितनी
तक उतनी दूर तक अन्य नगरों के विषय में नहीं।

वस्तुओं के परस्पर निर्भर रहने की इस पराकाष्ठा पर इन दि
विशेष रूप से ध्यान जाता है, क्योंकि चारों ओर लड़ाई की तैया
हो रही है जिसे बचाव की तैयारी कहा जाता है। न्यूयार्क नगर
तो बीच-बीच में हवाई हमले की कल्पना कर उससे बचने के उपा
को जनसाधारण को सिखाने के आयोजन होते हैं। हम लोगों
सामने भी एक इसी प्रकार का आयोजन किया गया। लड़ाई क
दृष्टि से देखने पर तो न्यूयार्क नगर बहुत कमजोर मालूम होता है
चारों ओर अत्यधिक ऊंची इमारतें, जिनमें अधिकतर काच के बड़े
बड़े वातायन हैं। अत्यन्त आधुनिक इमारतों में तो काच का अत्यधि
उपयोग किया जाने लगा है। दीवालें भी काच की और कमरों को
एक-दूसरे से अलग करने के लिए बीच में भी काच का प्रयोग होने
लगा है। फिर मकानों के अन्दर जितनी भी सुविधाएं हैं वे बाहर
की दो वस्तुओं पर निर्भर हैं—पानी का नल और बिजली का तार।
कहीं-कहीं गैस का नल और भाप का नल एवं सभीमें सैप्टिक नाली।
यदि पानी का नल बन्द हुआ तो जैसा कहा जा चुका है एयर कंडी-
शनिंग प्लान्ट और पीने तथा हाथ धोने का पानी बन्द। एयर-

परिश्रम से अधिक से अधिक जुटाने के लिए साधनों यन्त्रों का उपयोग भी करना होगा। वास्तव में प्रारम्भ से ही मनुष्य ने सदैव इस बात का प्रयत्न किया कि इन साधनों को जुटाने के लिए उन्हें कम से कम श्रम करना पड़े। यथार्थ में इसी प्रयत्न से सभ्यता का निर्माण हुआ। भारत में ऐसा न हुआ हो ऐसी बात नहीं। प्रत्येक क्षेत्र में श्रम बचाने वाली वस्तुओं का प्रयोग हुआ है। हाँ, यन्त्रीकरण के युग में भारत पराधीन था और इस समय जो भी यन्त्रीकरण हुआ वह भारत की इच्छा से पूरी तौर पर नहीं हुआ। यदि भारत स्वाधीन होता तो कहाँ तक और कितनी शीघ्रता से यन्त्रीकरण होता यह कहा नहीं जा सकता। यदि हमें सभ्यता का विकास करना है तो यन्त्रीकरण अवश्य करना होगा, इसमें सन्देह नहीं। हाँ, हमें यह अपनी परिस्थितियाँ देखकर करना है, नये ढंग से करना है, उन गलतियों को न करते हुए करना है जिन्हें अधिकांश पश्चात्य देशों ने किया है। विद्युत्-शक्ति ने ऐसा अवसर प्रदान किया है जिससे गावों में अच्छे, स्वस्थ और साफ वातावरण में यन्त्रीकरण हो सकता है। फिर हमें अपनी जनसंख्या की ओर दृष्टि रख उसका पूरा-पूरा उपयोग करते हुए यन्त्रीकरण करना है और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि हमें मानव के विकास के लिए यन्त्रों का उपयोग करना है, यन्त्रों के विकास के लिए मानव का नहीं। फिर केवल भौतिक विकास ही पर्याप्त नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या केवल भौतिक वस्तुओं से मनुष्य को पूर्ण सन्तोष हो सकता है? मेरे मतानुसार कभी नहीं। न्यूयार्क में मैंने सुना कि वहाँ के अनेक व्यक्ति जिन्हें सब प्रकार के भौतिक सुख उत्कृष्ट से उत्कृष्ट रूप में प्राप्त हैं वे भी सुखी नहीं। जब मैं न्यूयार्क के सार्वजनिक पुस्तकालय को देखने गया तब मुझे मालूम हुआ कि भारत के वेदान्त दर्शन का वहाँ न जाने कितने लोग बड़े चाव से अध्ययन करते हैं। और जब मैंने यह सुना तब मुझे मालूम हुआ कि स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ का अमेरिका में इतना आदर क्यों हुआ था। आज भी अमेरिका वाले विविध प्रकार के

भाषणों को, विशेषकर दार्शनिक भाषणों को, सुनने के लिए क्यों इतने आतुर रहते हैं और जिस न्यूयार्क में आधिभौतिकता चरम सीमा को पहुच चुकी है वहां आध्यात्मिकता की भी कितनी अधिक आवश्यकता है !

न्यूयार्क ऐसा वैभवशाली नगर रहते हुए भी अभी वहां मजदूरों की चाल (स्लम्स) मौजूद हैं। हमने इन्हे भी देखा। यद्यपि इन चालो का हमारे देश की चालो से मुकाबला नही हो सकता, परन्तु चाल तो चाल ही हैं। सुना गया, इन चालो मे ऐसे लोग रहते हैं जो बड़े आलसी हैं और जो अपनी कमाई का अधिकाश भाग शराबखोरी तथा अन्य शरारत-भरे कुकर्मों मे खर्च कर देते है। हमने इन चालों में रहने वालो को भी देखा और उन्हे न्यूयार्क की अन्य आबादी से कुछ पृथक रूप मे अवश्य पाया—बढी हुई हजामतें, मैले-कुचैले कपड़े, नशे मे चूर सूरतें और सारी चेष्टाओ मे आलस्य के लक्षण। इन चालो के सम्बन्ध मे हम लोगो ने और भी कुछ जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा की, क्योंकि हमे ये स्थल अमेरिकन सभ्यता के लिए एक कलक-स्वरूप प्रतीत हुए। जिस देश मे न्यूनतम वेतन निश्चित हो और वह इतना काफी हो कि लोग साधारणतया सम्मानपूर्वक और बहुत आराम से रह सकें, जहा बेकारी कम से कम इन दिनो मे कोई बहुत बडी समस्या न हो, वहा इन चालो और इन विचित्र तरह से रहने वालो की क्या आवश्यकता है और वे क्यो हैं ? अमेरिका की जीवन-व्यवस्था स्वतन्त्र रूप से बिना किसी रोकथाम के कार्य होने देने और उद्योगो पर कम से कम नियत्रण पर आधारित है। यद्यपि समय-समय पर कई कानून ऐसे बनाए गए हैं जिनसे थोड़ा-बहुत नियत्रण रहता है जैसे 'एण्ट्रीट्रस्ट' कानून।

सब मिलकर भौतिक दृष्टि से न्यूयार्क का जीवन अत्यन्त सुखी जीवन कहा जा सकता है। गरीबी, अशिक्षा, बीमारी आदि का वहां समूल नाश हो गया है, यह तो नहीं कहा जा सकता, पर ये सब भौतिक दुःख वहा न्यून से न्यून हैं। कुछ लोग बहुत अमीर हैं, इतने

की मूर्ति देखी।

संयुक्त राष्ट्र का भवन

सयुक्त राष्ट्र के भवन के निर्माण में अनेक देशों के आर्कीटेक्टों ने सम्मिलित प्रयत्न किया। जिस लगन और उत्साह से इस इमारत का निर्माण हुआ वह सयुक्त राष्ट्र की सफलता का द्योतक भी है। यह इमारत ५४४ फुट ऊची और २८७ फुट चौडी है। अमेरिका के सबसे बडे नगर की अन्य इमारतों से इसकी वास्तुकला कहीं भिन्न है। इस भवन के निर्माण में विभिन्न देशों के बारह आर्कीटेक्ट एक-दूसरे के सहयोग से काम करते रहे थे।

ठीक ही कहा गया है कि यह भवन वह कारखाना है जहां संसार के भावी रूप की रचना होती है।

एम्पायर स्टेट बिल्डिंग

ससार की सबसे ऊंची एक सौ दो मजिल की एम्पायर स्टेट इमारत है। इस इमारत की ऊचाई, १,४७२ फुट है। इसकी ८६वी और १०२वीं मजिलो मे वेधशालाए बनी हुई हैं। सडक से इस इमारत को देखने पर दर्शक को एक तरह का रोमाच हो आता है, लेकिन वेधशालाओ से नगर को देखने का अनुभव ऐसा अपूर्व होता है कि ससार मे अन्यत्र कहीं भी ऐसा अनुभव होने की सम्भावना नहीं। यह इमारत १९३१ मे बनकर तैयार हुई। बीसवीं शताब्दी का यह एक आश्चर्य है और मनुष्य को इजीनियरी कुशलता का द्योतक है।

इस इमारत मे दर्शकों को ऊपर ले जाने वाला एक ऐसा यन्त्र लगा हुआ है जो ६० सेकण्ड के भीतर मनुष्य को १,००० फुट की ऊचाई पर पहुचा देता है। ८६ वीं मंजिल मे वेधशाला पर पहुचने के बाद, जो कि सडक से १,०५० फुट की ऊचाई पर बनी हुई है, दर्शक को चारों ओर तीस-तीस चालीस-चालीस मील तक ऐसे प्रदेश का दर्शन होता है जिसमे लगभग डेढ करोड़ व्यक्ति बसे हुए हैं। ८६ वीं मजिल से दर्शकों

को एक और यन्त्र १०२ वीं मंजिल पर पहुंचा देता है यहां परद
संसार में सबसे अधिक ऊंचे भवन पर पहुंच जाता है। एम्पायर
की इमारत ऐसी है जिसे एक बार देख लेने पर कोई भी व्यक्ति
जीवनपर्यन्त नहीं भुला सकता।

लीवर ब्रदर्स की इमारत

न्यूयार्क नगर की नवीनतम और अत्यन्त आकर्षक कार्याल
इमारत लीवर ब्रदर्स की है। यह इमारत कांच और धवल इस्प
की बनी हुई है।

न्यूयार्क के अन्य गगनचुम्बी प्रासादों की तुलना में लीवर ब्र
की इमारत काफी नीची है, किन्तु सुन्दरता में यह अपूर्व है।

सार्वजनिक पुस्तकालय

इस महान पुस्तकालय में सबसे बड़ी बात यह है कि यहां १
लाख से अधिक सूचना प्राप्त करने की (रेफ़ेंस बुक्स) पुस्तकें औ
३६,४३३ प्रकाशनों की सूचियां हैं जिससे सही सूचना पाने के इच्छु
व्यक्ति लाभ उठा सकते हैं। इस पुस्तकालय की स्थापना १८६५
बड़े-बड़े निजी पुस्तकालयों के विलयन के परिणामस्वरूप हुई थी
इसकी तीन मंजिली इमारत १६११ में ६० लाख डालर के मूल्य प
बनी थी। सब मिलाकर पुस्तकालय के कर्मचारियों की संख्या २,६०
है। कुल पुस्तक-संख्या ४७ लाख है। इसके वाचनालय में ८००
व्यक्तियों के बैठने का स्थान है।

कोलम्बिया विश्वविद्यालय

कोलम्बिया विश्वविद्यालय विश्व-विख्यात है। विदेशी विद्यार्थी
अमेरिका में सबसे अधिक इसी विद्यालय में अध्ययन करते हैं।
इनकी संख्या १८०० से अधिक ही रहती है। अनुमान है कि ५६
देशों के विद्यार्थी यहां आकर विद्याध्ययन करते हैं।

राक फलर सेण्टर

राक फेलर सेंटर के १२ गगनचुम्बी प्रासादों से एक पूरा नगर बन गया है। यह नगर इस प्रकार विभक्त है—कार्यालय खण्ड, प्रदर्शनी खण्ड और रेडियो एवं मनोरंजन खण्ड। राक फेलर सेंटर के पश्चिमी भाग मे रेडियो-व्यवस्था का केन्द्रीकरण है। वहां भार० के० भो० की इमारत है, रेडियो-सिटी का संगीत-भवन है, थियेटर-मंच है और नेशनल ब्राडकास्टिंग कम्पनी की इमारत, भार० सी० ए० इमारत का विस्तार खण्ड है। बहुधा रेडियो-सिटी शब्द का प्रयोग समूचे राक फेलर सेंटर के लिए किया जाता है, पर यह भूल है। रेडियो-सिटी राक फेलर सेंटर के पश्चिमी खण्ड को ही कहते हैं।

राक फेलर सेंटर की वास्तुकला अत्यन्त सराहनीय है। उसमें भित्तिचित्र, मूर्तिकला और धातुकला आदि का मिश्रण है। आर० सी० ए० अर्थात् रेडियो कार्पोरेशन आफ अमेरिका की इमारत भी बड़ी आकर्षक है।

यहां पर राक फेलर फाउण्डेशन की भी कुछ चर्चा करना अनुपयुक्त न होगा। राक फेलर फाउण्डेशन की स्थापना १९१३ में हुई थी। इसका उद्देश्य ससार मे मानव-कल्याण को प्रोत्साहन देना है। पिछले चालीस वर्ष के समय में इस सस्था ने साढ़े सैंतालीस करोड़ डालर के लगभग की सहायताएं और अनुदान दिए हैं। यह सस्था भौतिक, बौद्धिक, कलात्मक, आध्यात्मिक और आरोग्य-सम्बन्धी कार्यों के लिए सहायता देती है। इस फाउण्डेशन की स्थापना से पहले इसके सस्थापक जान राक फेलर ने तीन लोक-कार्य प्रारम्भ किए थे। इनके अनुभव से उनको यह आश्वासन हो गया कि समाज-कल्याण के लिए धार्मिक सस्थाओं की स्थापना आवश्यक है, जो सत्कार्य के लिए अनुदान दे सकें। प्रारम्भ मे राक फेलर फाउण्डेशन की स्थापना २४ करोड़ १० लाख डालर से हुई थी।

कार्नेगी निधि

अमेरिका की एक और महत्त्वपूर्ण दर्शनीय संस्था है कार्नेगी-निधि। कार्नेगी इन्टरनेशनल शान्ति निधि की स्थापना १६१० में अमेरिका के एक प्रसिद्ध इस्पात-उद्योगपति एण्ड्रयू कार्नेगी की एक करोड़ डालर की भेंट के फलस्वरूप की गई थी। संस्था का उद्देश्य कार्नेगी की इच्छानुसार शान्ति-कार्य को प्रोत्साहन देना है। कार्नेगी का विश्वास यह था कि युद्ध का अन्तर्राष्ट्रीय उन्मूलन किया जाए, जो कि हमारी सभ्यता पर सबसे बड़ा धब्बा है।

अजायबघर

न्यूयार्क में चालीस अजायबघर हैं। इतने अधिक अजायबघर कदाचित् ही संसार के किसी अन्य नगर में होंगे। इन चालीस अजायबघरों के अतिरिक्त गैरसरकारी संस्थाओं और कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के अजायबघर अलग हैं।

प्लेनेटेरियम

अमेरिका के हर प्रधान नगर में अब प्लेनेटेरियम अर्थात् ग्रह-दर्शन-भवन की इमारत बन गई है। यहां अन्धकार में किरणों के प्रकाश द्वारा भिन्न-भिन्न ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति और चाल का बड़े मनोरंजक ढंग से प्रदर्शन किया जाता है।

न्यूयार्क के नाटक

न्यूयार्क में हमने तीन नाटक देखे। इनके नाम थे—'गून इज न्यू,' 'पाइण्ट आफ नो रिटर्न' और 'साउथ पेसेफिक'। पहला नाटक अमेरिका के वर्तमान जीवन का एक चलता-सा सुखान्त नाटक था और दूसरा भी वहीं के जीवन का कुछ गम्भीर-सा सुखान्त नाटक। इन दोनों नाटकों में मुझे कोई विशेषता न जान पड़ी। हाल ही में मैं लन्दन के . नाटक देखकर आया था और उनमें भी मुझे कोई विशेषता

न दिखी थी। अंग्रेजी नाटक मैंने शिमले मे भी देखे थे और उनमें से कई मुझे बहुत पसन्द आए थे। मुझे ऐसा जान पड़ा जैसे अंग्रेजी भाषा के रंगमच का पतन हो गया है, पर जब मैंने तीसरा नाटक 'साउथ पेसेफिक' देखा तब मैंने अपनी यह राय बदल दी। 'साउथ पेसेफिक' नाटक के सदृश नाटक मैंने इसके पहले कभी न देखा था। यह नाटक एक सर्वांग सुन्दर नाटक था, एक नही अनेक विशेषताओ से भरा हुआ। इसके दृश्यों की महानता और भव्यता का मिलान केवल पेरिस के नाटको से हो सकता था। फिर यदि पेरिस के उन नाटको के दृश्य इससे भी अच्छे थे तो उनमें जो नाटकीय कथा का अभाव था उस अभाव की इसमे पूर्ति हो गई थी। सुन्दर नाटकीय कथा थी, बड़ा अच्छा चरित्र-चित्रण, साथ ही उत्कृष्ट अभिनय, ऊचे दर्जे के गान और एक गान गाने वाली महिला के साथ एक बालिका के मूक अभिनय ने तो कला के इस रुख को पराकाष्ठा को पहुचा दिया था। सारे नाटक में किसी प्रकार की अश्लीलता का नामोनिशान न था। रस का भी नाटक मे अच्छा परिपाक हुआ था। पर नाटक की कथा जिस प्रकार चली थी उसे देखते हुए नाटक को दुखान्त होना चाहिए था। ऐसे नाटक को सुखान्त करने के प्रयत्न को मैं तो आधुनिक अमेरिकनिज्म कहूगा। इस प्रयत्न ने नाटक का स्वाभाविक अन्त नही होने दिया। पर जो कुछ हो, मैंने 'साउथ पेसेफिक' एक ऐसा नाटक देखा जिसके दृश्यों, उनके परिवर्तन के ढग और उन दृश्यों के प्रकाश की व्यवस्था अनुकरणीय थी।

सार्वजनिक भाषण

सार्वजनिक भाषण न्यूयार्क मे मेरे दो हुए—एक कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के इटर नेशनल हाउस मे भारतीय संस्कृति पर और दूसरा गांधी जयन्ती के दिन गांधी जी पर कम्युनिटी चर्च में। लन्दन के सदृश यहां भी भाषण के अन्त मे प्रश्न पूछने की प्रथा है। पहले भाषण के पश्चात् प्रश्न भी पूछे गए। दोनो भाषण और पहले भाषण के पश्चात्

के सानोन्दर मन भरने की मात्रा में ही हुए। मैंने पूछा कि वे अ
और उनमें के ऊपर लोगों का ग्रन्थ पाए।

न्यूयार्क का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व

न्यूयार्क नगर बराबर दुनिया का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय के
है। यहाँ अनेक देश और अनेक जाति के लोग रहते हैं और अ
आते-जाते रहते हैं। यूनाइटेड नेशन्स का केन्द्र यहीं स्थापित होने
इस नगर का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व और भी बढ़ गया है।

यूनाइटेड नेशन्स

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के विषय में सबसे पहले डम्बार्टन ओक्स
वाशिंगटन में २१ अगस्त से ७ अक्तूबर, १९४४ तक चर्चा की गई।
फिर पचास मित्रराष्ट्रों ने २५ अप्रैल से २६ जून, १९४५ तक सैनफ्रान्
सिस्को में संयुक्त राष्ट्र को पूर्ण कर दिया। पचास देशों ने संयुक्त राष्ट्र
के उद्देश्य-पत्र पर हस्ताक्षर किए।

संयुक्त राष्ट्र के चार उद्देश्य हैं—

(१) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को बनाए रखना।
(२) समान अधिकारों और राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का सम्मान करते हुए विभिन्न देशों के बीच मित्र-सम्बन्धों को प्रोत्साहन देना।
(३) आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानव-जाति-सम्बन्धी सभी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सहयोग द्वारा निबटाना और मानव-अधिकारों के लिए और सबकी मूल स्वतन्त्रताओं के लिए सम्मान बढ़ाना।
(४) समान उद्देश्यों के लिए राष्ट्रों की कार्यवाहियों को संगठित करना।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना २४ अक्तूबर, १९४५ को हुई। तब से यह दिन प्रति वर्ष संयुक्त राष्ट्र-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

१) संस्था के सभी सदस्य समान हैं।
२) संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य-पत्र के अधीन राष्ट्र अपने कर्तव्य ईमानदारी से पूरे करें।
३) अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े शान्ति के साथ निपटाए जाए।
४) संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों के विरुद्ध न तो किसी तरह के बल-प्रयोग की धमकी दी जाए और न बल-प्रयोग किया ही जाए।
(५) उद्देश्य-पत्र के अधीन संयुक्त राष्ट्र जो कार्यवाही करे सदस्य-देश उसमें भरसक सहायता दें।
(६) संयुक्त राष्ट्र किसी भी राज्य के घरेलू मामले में दखल न दे, किन्तु जहां शान्ति को खतरा हो वहां यह व्यवस्था स्वीकार नहीं की जाएगी।

संयुक्त राष्ट्र के लिए पूंजी सभी राष्ट्र जुटाते हैं। इस सम्बन्ध में निर्णय जनरल असेम्बली प्रति वर्ष करती है।

संयुक्त राष्ट्र के सदस्य-देशों के नाम इस प्रकार हैं—

अफगानिस्तान, अर्जेंटाइना, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, बोलिविया, ब्राजील, बाइलोरुस, बर्मा, कैनेडा, चाइल, चाइना, कोलम्बिया, कोस्टारिका, क्यूबा, चेकोस्लोवाकिया, डेनमार्क, डोमीनिकन रिपब्लिक, इक्वेडोर, मिस्र, इथिओपिया, फ्रांस, यूनान, गाटेमाला, हैटी, होंडुरास, आइसलैंड, इसरायल, लेबनान, भारत, ईरान, ईराक, लाइबीरिया, लक्सेमबर्ग, मेक्सिको, नीदरलैंड्स, न्यूज़ीलैण्ड, निकारगुआ, नार्वे, पाकिस्तान, पनामा, परगुवेस्ट, फ़िलीपीन्स, पोलैण्ड, सलवेडोर, सउदी अरब, स्वीडन, सीरिया, थाइलैण्ड, टर्की, यूक्रेन, दक्षिण अफ्रीका यूनियन, रूस, ब्रिटेन, अफ्रीका, उरुगुए, वेनेजुएला, और युगोस्लाविया।

संयुक्त राष्ट्र का झंडा नीला है, जिसपर सफेद ग्लोब-चित्र अंकित रहता है। इस चित्र में उत्तर ध्रुव दिखाई देता है और ग्लोब के दोनों ओर पत्तियों की दो बाहें-सी घिरी रहती हैं।

संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख अंग इस प्रकार हैं—

(१) जनरल असेम्बली अर्थात् महासभा,
(२) सिक्योरिटी कौंसिल अर्थात् सुरक्षा परिषद्,
(३) इकोनोमिक एंड सोशल कौंसिल अर्थात् आर्थिक और परिषद्,
(४) ट्रस्टीशिप कौंसिल अर्थात् संरक्षा परिषद्,
(५) इंटरनेशनल कोर्ट आफ जस्टिस अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय और
(६) संयुक्त राष्ट्र का प्रधान कार्यालय जो न्यूयार्क में है।

संयुक्त राष्ट्र की महासभा संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख संस्था सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं, किसी भी देश से अधिक प्रतिनिधियों की संख्या ५ हो सकती है, लेकिन प्रत्ये को एक ही वोट प्राप्त है। महासभा की वर्ष में एक बार यानी में बैठक होती है। इसके अतिरिक्त उसका विशेष अधिवेश बुलाया जा सकता है। महत्त्वपूर्ण मामलों पर निर्णय दो-तिहाई से होते हैं। साधारण महत्त्व के मामलों पर केवल सामान्य ब यथेष्ट होता है।

सुरक्षा परिषद् के ग्यारह सदस्य हैं, जिनमें से ५ स्थायी हैं शेष ६ महासभा द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। इसका काम शांति सुरक्षा बनाए रखना है। परिषद् ऐसे सभी मामलों की जांच है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष होने की आशंका हो। सुरक्षा प का अधिवेशन सारे वर्ष रहता है और दो सप्ताह में इसकी एक हो जाती है। सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य-देशों के नाम प्रकार हैं—चीन, फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका, रूस।

आर्थिक और सामाजिक परिषद् के अठारह सदस्य हैं। इ उद्देश्य है अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक समस्याओं सुलझाना।

सुरक्षा परिषद् ने उन प्रदेशों के विकास का काम अपने ऊप रखा है जो पहले राष्ट्रसंघ अर्थात् लीग आफ नेशन्स के संरक्ष

थे अथवा जो द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त शत्रुदेशों से प्राप्त किए गए।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में है। इसमें पन्द्रह जज होते हैं, जिन्हें महासभा और सुरक्षा परिषद् में स्वतन्त्र मतदान द्वारा चुना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र की विशिष्ट संस्थाएं इस प्रकार हैं—

(१) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सस्था,
(२) खाद्य और कृषि सस्था,
(३) शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति सस्था,
(४) अन्तर्राष्ट्रीय विमान सचालन संस्था,
(५) विश्व बैंक,
(६) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष,
(७) विश्व स्वास्थ्य सस्था,
(८) अन्तर्राष्ट्रीय डाक सघ,
(९) अन्तर्राष्ट्रीय सुदूर सचार सघ,
(१०) अन्तर्राष्ट्रीय शरणार्थी सस्था,
(११) विश्व वेधशाला,
(१२) अन्तर राज्य नौ-परिवहन परामर्श सस्था और
(१३) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सस्था।

न्यूयार्क अमेरिकन पूंजी का सबसे बडा केन्द्र है। अमेरिका के सबसे प्रसिद्ध बैंक, उद्योग और व्यापार के अधिकांश कार्यालय न्यूयार्क के वाल स्ट्रीट और उसके आसपास के हिस्से मे स्थित हैं।

न्यूयार्क मे जिन लोगो से भेंट हुई उनमें कई तरह के लोग थे, जिनका जीवन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध था। अमेरिकन पूंजी के प्रतिनिधियों से भेंट करने का मेरा कोई इरादा नहीं था, किन्तु जगमोहनदास को अमेरिकन पूंजी के भारत में उपयोग से कुछ दिलचस्पी थी और इसीलिए उन्होंने प्रसिद्ध अमेरिकन बैंकों के कुछ प्रतिनिधियों से मुलाकात की। वाल स्ट्रीट पर ही अधिकांश बैंकों के

कार्यालय हैं। प्रत्यधिक ऊंची और भव्य इमारतों में
कुछ इमारतें तो पचास से भी अधिक मंजिलों की हैं। प्र
एक छोटा-मोटा मुहल्ला मालूम होती है। उसमें नीचे क
कुछ दुकानें भी रहती हैं, जिनमें आवश्यकता का सारा
हैं। अनेकों लिफ्ट रहती हैं। कुछ विश्राम करने की जगह,
टेलीफोन, टायलेट-रूम इत्यादि सभी की व्यवस्था रहती है।
रतों में अमेरिका के व्यापारिक और औद्योगिक जीवन का मु
होता है। इन इमारतों के एयर कंडीशण्ड भव्य और सजे
में अमेरिकन जीवन के अधिकांश उत्पादन और व्यापारिक
योजना बनती है और उसे कार्य रूप में परिणत करने के
निरीक्षण होता है। यहां जो लोग कार्य करते हैं अधिकांश
भावनाओं का अभाव रहता है, यदि अभाव न भी रहता हो
से कम भावनाएं उनके कार्यों को प्रभावित नहीं करतीं। अ
पूंजी लगाने का प्रश्न आएगा तो उसे यहां केवल उसकी ला
की दृष्टि से देखा जाएगा। सर्वप्रथम तो उसे संयुक्त राज्य में
का प्रयत्न होगा फिर यदि किन्हीं कारणों से संयुक्त राज्य में
सम्भव न हो तो फिर दुनिया के किसी ऐसे देश में वह लगाई
जहां से वह अधिक से अधिक कमाई कर सके। केवल इसी दृष्टि
से पूंजी लगाई जाती है और किसी भी दृष्टिकोण से नहीं। य
लोगों का यह विश्वास है कि संसार की आर्थिक उन्नति निजी उ
के द्वारा ही हो सकती है। निजी उद्योगों पर किसी तरह का
नियन्त्रण नहीं होना चाहिए। नियंत्रण से उद्योगों की कुशलत
अन्तर पड़ जाता है। किसी भी उद्योग की ठीक सफलता और
ाधारण के लिए उसका सच्चा उपयोग तभी हो सकता है जब अ
उद्योगों की एक ही दिशा में होड़ हो। बिना होड़ के उद्योगों
ा से जन-साधारण की अच्छी सेवा नहीं हो सकती। अमेरि
ा औद्योगिक जीवन इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशन के प्रारम्भिक सिद्धान्
ो [illegible] प्रधान महत्त्व देता है और उन्हींकी भित्ति प

आधारित है। ग्राडम स्मिथ ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन 'वेल्थ ग्राफ नेशन्स' में किया था, अमेरिका के उच्चकोटि के उद्योगपति उन सिद्धान्तों को अब तक मानते हैं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में वेलफेयर स्टेट के सिद्धान्तों को अमेरिकन व्यवस्था में कुछ थोड़ी-बहुत मान्यता मिली है, किन्तु यह मान्यता आधारभूत सिद्धान्तों के रूप में न होकर केवल जनसाधारण को कुछ सहूलियतें देने के दृष्टि-कोण से मिली है।

न्यूयार्क से रवाना होने के पहले हमने न्यूयार्क की वाशिंगटन की और रूजवेल्ट की यादगार में जाकर उन दोनों महापुरुषों को नमन किया।

तारीख ८ के तीसरे पहर से ही हमारा वाशिंगटन का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया।

वाशिंगटन और न्यूयार्क में उतना ही अन्तर है जितना कलकत्ता, बम्बई और नई दिल्ली में। चूंकि हम अभी १८ दिन न्यूयार्क के महान हो-हल्ले में रहकर आए थे इसलिए हमें वाशिंगटन और न्यूयार्क का यह अन्तर बहुत अधिक जान पड़ा। न्यूयार्क की अपेक्षा वाशिंगटन कितना अधिक शान्त था! फिर न्यूयार्क के गगन-चुम्बी प्रासादों के सदृश ऊंचे-ऊंचे न यहां मकान थे और न वैसी सड़कें। कुछ सुन्दर और भव्य सरकारी इमारतें, अमेरिका के राष्ट्रकर्मी नेताओं की यादगार आदि ही यहां की सबसे आकर्षक वस्तुएं हैं। वाशिंगटन का रूप और वहां का वायुमण्डल नई दिल्ली से बहुत कुछ मिलता है।

हमने वहां क्या-क्या देखा

(१) अमेरिका की धारासभा के भवन,
(२) कुछ सरकारी दफ्तर,
(३) कांग्रेस लाइब्रेरी,
(४) व्हाइट हाउस, जहां अमेरिका के राष्ट्रपति रहते हैं,

(२) वाशिंगटन का स्मारक,
(३) अब्राहम लिंकन का स्मारक,
(४) जेफर्सन का स्मारक, और
(५) गुमनाम सैनिक की समाधि।

इनमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है —

(१) अमेरिका के संसद्-भवन का नाम कैपीटल है। इस भ
निर्माण के सम्बन्ध में सर्वोत्तम नमूना तैयार करने वाले के
अमेरिकन संसद् अर्थात् कांग्रेस ने प्रतियोगिता की थी। यह
योगिता डाक्टर विलियम थोर्नटन ने जीती। १७९३ में यह इ
बननी आरम्भ हो गई थी। नवम्बर १८०० को इस इमारत के उ
भाग में अमेरिका की संसद की पहली सभा हुई। यह इमारत
फुट लम्बी और १७५ फुट चौड़ी है। इमारत साढ़े तीन एकड़ भ
पर बनी हुई है। इमारत और मैदानों का इलाका ५८.८ एकड़
संसद्-भवन की गुम्बद लोहे व इस्पात की बनी हुई है और ऊ
सफेदी पोत दी गई है। गुम्बद की ऊंचाई २८५ फुट है। इसके ऊ
१९ फुट ऊंची स्वतन्त्रता-देवी की मूर्ति बनी हुई है। संसद्-भ
दर्शनीय भवन है। अमेरिका की धारासभा का हाल संसार में स
बड़ा है। इसकी लम्बाई १३९ फुट, चौड़ाई ९३ फुट और ऊं
१० फुट है। इसकी नींव ४ जुलाई, १८५१ को प्रेसीडेंट फिलमोर
रखी थी और १६ दिसम्बर, १८५७ को यह तैयार हो गई थी
अध्यक्ष के बैठने का आसन संगमरमर का बना है। इसके एक ओ
वाशिंगटन का चित्र टंगा हुआ है और दूसरी ओर लफायत का
अध्यक्ष के आसन के सामने प्रतिनिधियों की कुर्सियां हैं जिनके साम
डेस्क नहीं है। सीनेट का नया हाल १८५९ में बना। सीनेट का अध्यक्ष
उपराष्ट्रपति होता है। यह हाल ११३ फुट लम्बा, ५० फुट चौड़
और ३६ फुट ऊंचा है।

(२) सुप्रीम कोर्ट का दफ्तर—रोम के न्याय-मन्दिर की तरह
कोर्ट की इमारत है। यह इमारत कैपीटल के

मैदान के सामने ही बनी हुई है। इसे १६३५ में पूरा किया गया है। इसकी लम्बाई ३८५ फुट है। इमारत यूनानी ढंग की कला पर बनी हुई है। अमेरिका के राष्ट्रपति सीनेट की सलाह और अनुमति से सुप्रीम कोर्ट के नौ न्यायाधीश, एक मुख्य न्यायाधीश और आठ सयुक्त न्यायाधीश नियुक्त करते हैं। ये आजीवन इन पदों पर काम करते रहते हैं। अमेरिका के न्याय-विभाग की इमारत को फेडरल ब्यूरो आफ इन्वेस्टिगेशन कहा जाता है। यहा पर लोगों को अगुलियों के निशान आदि पहचानने की और अपराधियों को ढूंढने के लिए अन्य कुशल उपायो की शिक्षा दी जाती है। यहा पर एक प्रयोग-शाला भी है। विदेश विभाग की इमारत इक्कीसवी स्ट्रीट और वर्जीनिया एवेन्यू पर बनी हुई है। इसके निर्माण पर २३ करोड़ डालर खर्च हुआ था। पहले इसे युद्ध विभाग के अधिकारियों का निवास-स्थान बनाने के उद्देश्य से बनाया गया था। यह इमारत अमेरिका की राजनैतिक हलचल का केन्द्र है। ससार में होने वाली अनेक घटनाओ को अमेरिका के विदेश मन्त्री और उनके कर्मचारी यहा बैठे हुए प्रभावित करते हैं। अमेरिका के वित्त विभाग की इमारत चार मजिली है। इसमें यूनानी ढग के स्तम्भ हैं। इमारत के उत्तरी ओर एलबर्ट गेलाटिन की मूर्ति बनी हुई है। कैपीटल और व्हाइट हाउस को छोड वाशिंगटन की यह सबसे प्राचीन इमारत है।

(३) अमेरिकी ससद् की लाइब्रेरी ससार के सर्वोत्तम पुस्तकालयों में से है। यहा ८५ लाख से अधिक पुस्तकें सगृहीत हैं और एक करोड़ दस लाख से अधिक हस्तलेख हैं। अमेरिकी इसे अपनी राष्ट्रीय लाइब्रेरी मानते हैं। संसद् लाइब्रेरी की स्थापना १८०० में हुई थी। १८१२ के अग्निकांड में लाइब्रेरी लगभग स्वाहा हो गई थी। १८५१ में फिर आग लगने से उस समय की कुल ५५,००० पुस्तकों में से दो-तिहाई जलकर राख हो गईं। नई ससद् लाइब्रेरी की इमारत १८८६ में बननी आरम्भ हुई और १८६७ में तैयार हुई। इसके निर्माण-कार्य पर एक करोड़ अस्सी लाख डालर से अधिक खर्च हुआ।

(४) अमेरिका के राष्ट्रपति का निवास-स्थान व्हाइट हाउस अमेरिका की संसद् की इमारत के उत्तर-पश्चिम में कोई डेढ़ मील दूर है। वहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा मनोहर है और लगभग अस्सी प्रकार के वृक्षों से सुशोभित है। व्हाइट हाउस का डिज़ाइन अमेरिका के राष्ट्रपति बलार्ड पालमोर ने तैयार करवाया था। राष्ट्रपति-भवन की लम्बाई १७० फुट है और चौड़ाई ८५ फुट। यह एक दोमंज़िली इमारत है। कहा जाता है कि इस इमारत के निर्माण का पत्थर राष्ट्रपति वाशिंगटन ने रखा था, किन्तु इतिहास के अनुसार वाशिंगटन उस समय अन्य कार्यों में व्यस्त थे। १८०० में इस भवन में निवास करने वाले सबसे पहले राष्ट्रपति श्री जान एडम्स थे। उसके बाद से तो यह भवन बराबर ही अमेरिका के राष्ट्रपतियों का निवास-स्थान रहता चला आया है। अनुमान है कि इस इमारत को देखने के लिए प्रतिवर्ष लगभग दस लाख दर्शक पहुंचते हैं। इस भवन में ईस्ट रूम नामक हाल सबसे बड़ा है। उसकी लम्बाई ८७॥ फुट और चौड़ाई ४५ फुट है। छत पर पलस्तर हो रहा था। उसकी ऊंचाई ५२ फुट है। जलपान-गृह राष्ट्रपति-भवन का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा कमरा है। राष्ट्रपति के भेंट करने का नीला कमरा सारे व्हाइट हाउस में सबसे अधिक सुन्दर है। यह अण्डाकार बना हुआ है। यहां पर अधिकांश नीले रंग के कपड़े और पर्दे आदि का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त वहां के हरे और लाल कमरे भी दर्शनीय हैं।

(५) वाशिंगटन-स्मारक का उच्च स्तम्भ मीलों दूर से संसद्-भवन के शिखर और लिंकन-स्मारक के बीच आकाश में उठा हुआ दिखाई देता है। इसकी ऊंचाई ५५५ फुट ५½ इंच है। यह स्मारक सफेद पत्थर का शहतीर जैसा है, जिसके ऊपरी छोर पर एल्यूमीनियम की नोक बनी है। भूमि पर इसकी दोनों भुजाएं ५५ फुट की हैं और आकार चौकोर है। दीवारों की मोटाई १५-१५ फुट है। ५३४ फुट ५½ इंच की रह गई हैं और दीवार की मोटाई

देढ़ फुट रह गई है। यद्यपि इस स्मारक को बनाने का सुझाव वाशिंगटन के जीवन-काल में ही रखा गया था, किन्तु उन्होंने कहा कि मेरे जीवन-काल में ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए। यद्यपि इस स्मारक का निर्माण-कार्य जुलाई १८४८ में प्रारम्भ हुआ, किन्तु १८८४ से पहले इसे पूर्ण न किया जा सका। वाशिंगटन की मृत्यु १७९९ में हुई थी और अब तक उसे ८५ वर्ष हो चुके थे।

(६) लिंकन के स्मारक के साथ दुनिया के किसी भी स्मारक की तुलना नहीं की जा सकती। यह अत्यन्त सुन्दर इमारत है। इसे देखकर दर्शक आश्चर्यचकित रह जाता है। रात्रि के समय जब विद्युत् से प्रकाशित इस स्मारक की परछाईं उस लम्बे ताल में दिखलाई देती है, जो इस स्मारक और वाशिंगटन-स्मारक के बीच बना हुआ है, तो हृदय प्रफुल्लित हो उठता है। इस स्मारक में मुक्ति-दूत लिंकन की एक विशालकाय मूर्ति कुर्सी पर बैठी हुई दिखाई गई है।

(७) जेफरसन का स्मारक ३० लाख डालर की लागत पर बनकर तैयार हुआ है। जेफरसन अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थे। यह स्मारक जेफरसन के प्रति अमेरिकी जनता की कृतज्ञता का प्रतीक है। जेफरसन का स्मारक एक वृत्ताकार कमरे के रूप में बना हुआ है। इसकी चौड़ाई ८२ फुट है और ऊंचाई ९१ फुट। मध्य भाग में जेफरसन की कांसे की एक मूर्ति है। कांसे की १८ फुट ऊंची यह मूर्ति ७ फुट ऊंचे एक चबूतरे पर खड़ी की गई है।

हमने यहां एक ऐसा नाटक देखा जिसके मंच के चारों ओर दर्शकों के बैठने का स्थान था और रंगमंच ऐसा था जिसमें न नेपथ्य था और न किसी प्रकार के पर्दे थे। रंगमंच पर एक किसान के घर का दृश्य दिखाया गया था, पर पर्दे पर नहीं। अमेरिका के किसान के घर का एक कोठा, दालान, उसके दरवाजे और खिड़कियां लकड़ी के सांकेतिक टुकड़ों से दर्शाए गए थे। फर्श पर सोने का पलंग, उसपर बिस्तर, कुछ मद्दी-सी कुर्सियां, मोढ़े, टेबिल आदि रखी थीं। रसोई बनाने और खाने के कुछ बर्तन तथा गृहस्थी का अन्य कुछ सामान

भी था। सारा नाटक इसी मंच पर हुआ। जब दृश्य बदलता, तो नाटकघर में अंधेरा हो जाता और जब फिर प्रकाश होता तब उस दृश्य में काम करने वाले नट मंच पर अपना काम करते दिखाई पड़ते। ऐसे रंगमंच पर अमेरिका के प्रसिद्ध नाटककार यूजीन ओ' नील का एक नाटक खेला गया। श्री नील को नोबल प्राइज भी मिल चुका था और मैं उनका यह नाटक पहले पढ़ चुका था। नाटक अच्छी तरह खेला गया। अभिनय अच्छा और स्वाभाविक था। पर सबसे बड़ी विशेषता थी रंगमंच की। यदि अपने देश में हमें नाट्यकला को गांवों में पहुंचाना है तो इस प्रकार के रंगमंच हमारे देश के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे।

हावर्ड विश्वविद्यालय, जहां मेरा भारतीय संस्कृति पर भाषण होने वाला था, हब्शियों का विश्वविद्यालय है। इसके सभापति हब्शी हैं, इसके कार्यकर्ता भी अधिकांश हब्शी हैं और विद्यार्थियों में भी हब्शियों की ही अधिक सख्या है। हावर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका में हब्शियों का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। इसके विद्यार्थियों की सख्या दो हजार है। यह विश्वविद्यालय मन्त्रियों के प्रशिक्षण-स्कूल के लिए प्रसिद्ध है। विश्वविद्यालय ज्यौजिया एवेन्यू के पूर्व में बना हुआ है। यहां मेरा भाषण हुआ। उपस्थिति काफी थी, फिर जो लोग श्रोताओं के रूप में आए थे उन्हें भारत और भारतीय संस्कृति से बड़ा अनुराग जान पड़ा। भाषण के पश्चात् यहां की प्रथा के अनुसार प्रश्न पूछे गए। बाद में जो सूचनाएं मुझे मिलीं उनसे मालूम हुआ कि भाषण और प्रश्नों के उत्तर वहां के लोगों को पसन्द आए। मेरा भाषण, प्रश्नों के उत्तर और यहां की सारी कार्यवाही अंग्रेजी भाषा में हुई।

आकाशवाणी की मेरी दोनों मुलाकात तो वाशिंगटन की चर्चा का बहुत समय तक एक विषय बनी रहीं। इन मुलाकातों के सम्बन्ध में मेरे पास भारत में भी कई पत्र आए और अभी भी आते हैं।

१८। हम सैनफ्रांसिस्को से छोड़ने वाले थे और सैनफ्रां-

जिसको छोड़ने के पहले रास्ते में जितने अधिक से अधिक स्थान और महत्वपूर्ण वस्तुएं देख सकते थे, उन्हें देख लेना चाहते थे। कनैडा में होने वाली कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी कान्फ्रेंस की तारीखें निश्चित होने के कारण यूरोप में तो हम एक महीने से अधिक न ठहर सकते थे, पर यहां के लिए कोई ऐसा बन्धन न था। अतः वाशिंगटन से रवाना होकर हमने नीचे लिखे स्थानों को जाना और निम्नलिखित वस्तुओं को देखना तय किया तथा इसीके अनुसार अपना कार्यक्रम बना हवाई जहाज से यात्रा के टिकिट बनवाए—

(१) बफलो जाकर नियाग्रा के जल-प्रपात।

(२) डिट्रायट जाकर फोर्ड का प्रसिद्ध मोटर कारखाना।

(३) शिकागो जाकर शिकागो नगर और वहां के दो प्रसिद्ध अजायबघर—म्यूजियम आफ साइन्स एण्ड इण्डस्ट्री तथा म्यूजियम आफ नेचुरल हिस्ट्री।

(४) डेनवर जाकर वहां के चारों ओर का प्राकृतिक सौन्दर्य।

(५) लास एंजल्स जाकर वहां के हालीवुड के स्टूडियो।

(६) सैनफ्रांसिस्को जाकर वहां के कुछ खेती के फार्म और जहां दो-दो तीन-तीन हजार वर्ष पुराने रेडवुड के दरख्त हैं वह जंगल।

वाशिंगटन तारीख १४ अक्तूबर को छोड़ा और हम सैनफ्रांसिस्को से तारीख २ नवम्बर को रवाना हुए। इस बीच हमने समस्त उपर्युक्त स्थानों को देखा। हवाई यात्रा होने के कारण बहुत कम समय लगा। इसी कारण इतने थोड़े समय का भी बहुत-सा भाग हम इन चीज़ों को देखने के लिए दे सके।

नियाग्रा जल-प्रपात

नियाग्रा जल-प्रपात संसार की आज सबसे अधिक अद्‌भुत वस्तुओं में एक माना जाता है। इस जल-प्रपात में जितनी ऊंचाई से पानी गिरता है उसकी अपेक्षा अनेक जल-प्रपातों का पानी कहीं अधिक

नोहारी दृश्य को देख होटल को लौट आए।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम फिर से प्रपात देखने चले। आज र्भाग्य से बादल हो गए थे, अतः दृश्य उतना सुन्दर न था। आज म पहले अमेरिकन जल-प्रपात के निकट की एक बिजली की लिफ्ट द्वारा, जहा भूमि पर पानी गिरता था, उस स्थान पर गए और एक छोटी-सी स्टीमर द्वारा अमेरिका और कैनेडा के दोनो जल-प्रपातों के उस विभाग मे घूमे जहा प्रपात से गिरता हुआ पानी एक झील के रूप में भर गया है। इस झील के इधर-उधर जल बड़े वेग से गिर रहा था तथा उसके कण उड़ रहे थे। लिफ्ट से नीचे उतरकर वहा के प्रपात का दृश्य और स्टीमर द्वारा झील में घूमते हुए प्रपात का दृश्य दोनो ही बड़े सुन्दर थे। हा, इतना अवश्य हुआ कि स्टीमर मे हमे बरसातिया पहननी पड़ीं और बरसाती कनटोपों से सिर ढाकना पड़ा अन्यथा उड़ते हुए नीर-कणो के कारण हम लोग भीग जाते। हम तीनों के अतिरिक्त इन दृश्यों को देखने के लिए और भी अनेक पुरुष और महिलाएं वहा जमा हुई थीं।

इसके बाद हम लोग अमेरिकन जल-प्रपात आरम्भ होने से पहले नियाग्रा नदी के कुछ दृश्यो को देखने पहुचे। इन दृश्यो के आसपास उद्यान लगाए गए हैं, जिनसे ये दृश्य परम रमणीय हो गए हैं।

नियाग्रा के ये जल-प्रपात इन देशो को प्रकृति की देन हैं, पर प्रकृति से जो कुछ इन्हे मिला है उसे यहा के लोगों ने और कितना अधिक सुन्दर कर दिया है! फिर इस सौन्दर्य के अतिरिक्त इन्होंने इसका पार्थिव उपयोग भी कम नहीं किया है। इस प्रपात से इसके चारो ओर के लाखो घरों को प्रकाश मिलता है, पश्चिमी न्यूयार्क राज्य के उद्योग-धन्धे चलते हैं और कैनेडा को भी प्रचुर परिमाण मे बिजली मिलती है। कई वर्षों से अमेरिका और कैनेडा मिलकर एक सयुक्त नियत्रण बोर्ड की सहायता से इस प्रपात के द्वारा उत्पन्न बिजली की शक्ति का उपयोग करते रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के द्वारा प्रकृतिदत्त साधनो के उपयोग का यह बड़ा अच्छा उदाहरण है।

देखा था।

दूसरे दिन प्रातः ही [illegible] भी [illegible] फिर हमें निकल मोटर से [illegible] पहुँचे। फोर्ड मोटर का कारखाना वस्तुतः ही एक महान उद्योग है। यह कारखाना दुनिया के सबसे बड़े कारखानों में एक माना जाता है। मोटरों के बाहरी ढांचे (बाडी), उन सभी के भिन्न-भिन्न विभाग, मोटरों के इंजन, उनके कल-पुर्जे आदि ठीक काम योग्य इसी कारखाने में बनते हैं। परन्तु कुछ वस्तुएं बाहर से खरीद करके भी इन मोटरों में लगाई जाती हैं। इसका कारण यह बताया गया कि जो वस्तुएं बाहर से खरीदकर मोटरों में लगाई जाती हैं उन वस्तुओं को बनाने में अन्य लोग इतने निपुण हो गए हैं कि यदि ऐसी वस्तुएं इस कारखाने में बनाई जाएं तो एक तो वैसी [illegible] न बनेंगी और उनसे महंगी भी पड़ेंगी।

[illegible] मोटर कंपनी की स्थापना १६ जून, १९०३ को हुई। [illegible] ने पहले केवल पच्चीस हजार डालर की पूंजी से अपना काम

के प्रागैतिहासिक काल के सग्रह देखे जा सकते हैं।

शिकागो में हमने बर्फ की चट्टान पर विविध प्रकार के नृत्यों का सुन्दर प्रदर्शन और देखा। बर्फ की चट्टान का यह मच लगभग १५० फुट लम्बा और ५० फुट चौड़ा था। एक ओर छोटे-से मकान का दृश्य था। इसीमें से नर्तक और नर्तकिया निकलते और अपना कार्य बर्फ के रंगमंच पर कर वापस लौट जाते। जब वे निकलते तब रंगमंच पर अधेरा हो जाता और उनके रगमच पर आने पर विविध प्रकार एव रगों के बिजली के प्रकाश मे उनके नृत्य होते। नाचने वालों के पैरों मे एक विशेष प्रकार के जूते रहते और उन जूतों के तले में एक विशेष प्रकार के स्केटिंग चक्के, जिनसे ये नृत्य बर्फ के रगमंच पर किए जाते। नर्तक और नर्तकियों के रूप पोशाकें और सारा कार्य अत्यधिक कलापूर्ण एव आकर्षक था। किसी प्रकार की अश्लीलता भी न थी। नृत्य आरम्भ हुआ 'दिल्ली दरबार' शीर्षक नृत्य से। दिल्ली के पुराने सुल्तानों की पोशाक मे कुछ नर्तक आए और नर्तकिया पुराने राजपूती कला के वस्त्र धारण कर। यद्यपि पोशाक और नृत्य दोनों सर्वथा भारतीय न थे, पर पोशाक पुरानी राजपूती कला से मिलती-जुलती अवश्य थी। इसके बाद न जाने कितने प्रकार के नृत्य हुए। इनमे हमें तो सबसे अच्छा तितलियों का नृत्य जान पड़ा। तितलियों की पोशाकें और उस नृत्य मे जिस प्रकाश की व्यवस्था की गई थी, उससे यही जान पड़ता था कि जैसे सचमुच की आदमकद तितलिया रगमच पर उड़ती हुई विविध प्रकार के नृत्य कर रही हैं। बर्फ के रगमंच का यह प्रदर्शन सचमुच ही अपने ढग का अनोखा प्रदर्शन था और इसकी सबसे बड़ी विशेषताएं थीं नृत्य करने वालों की पोशाकें, बिजली का प्रकाश और नृत्य मे महान गति।

डेनवर और उसके आसपास

डेनवर के चारो ओर के प्राकृतिक दृश्य बड़े सुन्दर हैं। ह

प्रागैतिहासिक काल के संग्रह देखे जा सकते हैं।

शिकागो मे हमने बर्फ की चट्टान पर विविध प्रकार के नृत्यों का सुन्दर प्रदर्शन और देखा। बर्फ की चट्टान का यह मंच लगभग २५० फुट लम्बा और ५० फुट चौड़ा था। एक ओर छोटे-से मकान का दृश्य था। इसीमें से नर्तक और नर्तकिया निकलते और अपना कार्य बर्फ के रगमंच पर कर वापस लौट जाते। जब वे निकलते तब रंगमंच पर अंधेरा हो जाता और उनके रगमच पर आने पर विविध प्रकार एव रगों के बिजली के प्रकाश मे उनके नृत्य होते। नाचने वालों के पैरो मे एक विशेष प्रकार के जूते रहते और उन जूतों के तले में एक विशेष प्रकार के स्केटिंग चक्के, जिनसे ये नृत्य बर्फ के रगमंच पर किए जाते। नर्तक और नर्तकियो के रूप, पोशाकें और सारा कार्य अत्यधिक कलापूर्ण एव आकर्षक था। किसी प्रकार की अश्लीलता भी न थी। नृत्य आरम्भ हुआ 'दिल्ली दरबार' शीर्षक नृत्य से। दिल्ली के पुराने सुल्तानों की पोशाक मे कुछ नर्तक आए और नर्तकिया पुराने राजपूती कला के वस्त्र धारण कर। यद्यपि पोशाक और नृत्य दोनों सर्वथा भारतीय न थे, पर पोशाक पुरानी राजपूती कला से मिलती-जुलती अवश्य थी। इसके बाद न जाने कितने प्रकार के नृत्य हुए। इनमे हमें तो सबसे अच्छा तितलियों का नृत्य जान पडा। तितलियो की पोशाकें और उस नृत्य मे जिस प्रकाश की व्यवस्था की गई थी, उससे यही जान पडता था कि जैसे सचमुच की आदमकद तितलिया रंगमच पर उडती हुई विविध प्रकार के नृत्य कर रही हैं। बर्फ के रगमच का यह प्रदर्शन सचमुच ही अपने ढग का अनोखा प्रदर्शन था और इसकी सबसे बडी विशेषताएं थीं नृत्य करने वालों की पोशाकें, बिजली का प्रकाश और नृत्य मे महान गति।

डेनवर और उसके आसपास

डेनवर के चारों ओर के प्राकृतिक दृश्य बड़े सुन्दर हैं। हम

के सदृश ही है तथापि उसके अनेक भागों की सड़कों के दोनो ओर के अत्यन्त सुन्दर वृक्षो ने और छोटे-छोटे हरे-भरे नजरबागों से युक्त तरह-तरह के गृहों ने इस नगर को एक विशेष प्रकार की सुषमा दे दी है।

लास एंजल्स मे मूवी पिक्चर एसोसिएशन की मार्फत वहां के सबसे बड़े स्टूडियो मे से एक पैरामाउण्ट पिक्चर के स्टूडियो दिखाने का भी इन्तजाम किया गया था।

स्टूडियो दर्शनीय था। यद्यपि किसी जमाने मे सिनेमा-जगत् से मेरा सम्बन्ध रह चुका है और यद्यपि स्टूडियो में मुझे कोई सर्वथा ऐसी नई चीज नहीं दिखी जो मैंने बम्बई-कलकत्ते के स्टूडियो में न देखी हो, पर उन सबसे यह स्टूडियो कही बड़ा था। बाजार इत्यादि के सैटिंग इतने बड़े और विशाल थे कि जान पड़ता था जैसे अमेरिका के बड़े-बड़े बाजार स्टूडियो मे ही बने हैं। स्टूडियो मे एक बहुत बड़ा तालाब था, जो आवश्यकता के अनुसार बढाया-घटाया जा सकता था। इस तालाब मे बिजली के सहारे बड़े-बड़े समुद्री तूफान दिखाए जा सकते हैं।

सैनफ्रांसिस्को और उसके आसपास

जब हमने सैनफ्रान्सिस्को की भूमि पर पैर रखा उस समय सबसे पहले मुझे लाला हरदयाल का स्मरण आया। श्री हरदयाल हमारे देश के उन क्रान्तिकारियों में प्रधान स्थान रखते थे जिन्होने हमारे देश को स्वतन्त्र कराने का बीड़ा सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध के पश्चात् सर्वप्रथम उठाया था। फिर श्री हरदयाल की बुद्धिमत्ता और विद्वत्ता की तुलना भी इने-गिने भारतीयो से ही की जा सकती है।

भारत आज स्वतन्त्र है और स्वतन्त्र भारत के हम नागरिक आज स्वतन्त्रतापूर्वक सारे संसार का चक्कर लगा रहे थे। मुझे इस बात से बड़ा खेद-सा हुआ कि जिन भारतीयों ने भारत की स्वतन्त्रता का शंख भारत के बाहर भी फूका और जिसके कारण भारत की स्वतन्त्रता के पक्ष में ससार का लोकमत बना तथा इस लोकमत ने भारत को

ती है। इस समय जो वृक्ष वहां अभी भी हरे-भरे हैं वे लगभग
ो हजार वर्ष प्राचीन हैं।

रेडवुड फारेस्ट के सिवा हमने जो अन्य चीजें देखीं उनमें अमेरिका
के कुछ खेती के फार्म थे। इन फार्मों के साथ मैंने अमेरिका का
देहाती जीवन भी देख लिया और वहा के कुछ किसानों से भी मिल
लिया।

प्रेस कान्फ्रेन्स की तारीख तीस अक्तूबर को और उसी दिन मेरा
भाषण भी था। ये दोनों सार्वजनिक कार्य भी भली भांति निपट गए।
प्रेस कान्फ्रेन्स का वृत्त वहा के सभी अखबारों में बड़े-बड़े शीर्षकों
और चित्रों के साथ छपा।

अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव-अभियान

हमारे अमेरिका के इस दौरे के अवसर पर अमेरिका में एक बहुत
बड़ा काम चल रहा था। यह था अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव।
अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव हर चौथे वर्ष होता है। अमेरिका
के राष्ट्रपति का चुनाव ४ नवम्बर, १९५२ को होना था। हर चार
वर्ष बाद ४ नवम्बर को ही यह चुनाव हुआ करता है। अमेरिका की
संसद को कांग्रेस कहते हैं। हमारे देश में कांग्रेस एक संस्था-मात्र
है। इस वर्ष चूंकि अमेरिकी कांग्रेस की लोक-सभा की (हाउस आफ
रिप्रेजेंटेटिव्ज) सभी जगहों के और उच्च सभा अथवा सीनेट की एक-
तिहाई जगहों के चुनाव होने थे इसलिए प्रचार का बड़ा जोर-शोर
था। इसके अतिरिक्त राज्यों के गवर्नर से लेकर साधारण म्यूनिस्पल
अधिकारी तक निर्वाचित किए जाने थे। इसलिए यह चुनाव और
भी महत्त्वपूर्ण था।

अमेरिका में केवल अपराधियों को छोड़ सभी वयस्क नागरिकों
को मताधिकार प्राप्त है—हर जाति, रंग, धर्म, लिंग अथवा मूल
निवासियों सबको।

अमेरिका में कई राजनैतिक पार्टियां हैं, जो राष्ट्रपति-पद के

र्टी का चुनाव-कार्यक्रम प्रारम्भ हो जाता है। उम्मीदवार देश-भर ा पर्यटन करते हैं। समाचारपत्रों, रेडियो और टेलीविज़न आदि ी सहायता से उनके विचार जनता तक पहुंचते रहते हैं, पर लोग यं भी उन्हें देख लें यह आवश्यक होता है। किसी विदेशी को तो सा प्रतीत होता है मानो समस्त अमेरिका बौखला उठा है। ऐसा ी जान पड़ता है कि इस अवसर पर जो कड़वाहट, गाली-गलौज ोती है और वैमनस्य की भावना पैदा हो जाती है वह समाज का स्थायी ग हो जाएगी और उसे सदा के लिए दूषित कर देगी, किन्तु ज्योंही ाष्ट्रपति का चुनाव सम्पन्न हो जाता है, समस्त जनता उसके सम्मान के लिए आदर से अपना शीष नवा देती है और सारी कालिमा धुल जाती है।

जैसा ऊपर कहा गया है, अमेरिका में दो प्रधान राजनैतिक दल हैं—डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन। राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के समय से डेमोक्रेटिक दल के हाथ में ही अमेरिका की राज्यसत्ता रही थी अर्थात् लगभग बीस वर्ष से डेमोक्रेटिक दल ही अधिकार में था। इस बार राष्ट्रपति के चुनाव में बड़ा संघर्ष था। डेमोक्रेटिक दल की ओर से श्री स्टीवेन्सन खड़े थे और रिपब्लिकन दल की तरफ से श्री आइसन हावर। दोनों ओर से खूब प्रचार चल रहा था।

हमें यह देखकर कुछ खेद हुआ कि दोनों ही ओर के प्रचार में संयम और शालीनता की अत्यधिक कमी थी। बहुत नीचे स्तर पर उतरकर बातें कही और छापी जाती थीं, यहां तक कि कई बार तो गाली-गलौज तक की नौबत आ जाती थी। स्वयं राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन के डेमोक्रेटिव पार्टी के समर्थन के भाषणों में न संयम था और न शालीनता।

हमने अमेरिका के दौरे में इस चुनाव के प्रचार को देखा। चुनाव का क्या नतीजा निकलेगा इसपर लोगों से बातें कीं। सभी संदिग्ध थे और सभी कहते थे कि करारी मुठभेड़ है, जो भी जीतेगा थोड़े वोटों से।

जिस तरह कोरिया में लड़ा और उसने जिस तरह अपनी शक्ति का
रिचय दिया उससे संसार के देश दांतों-तले अंगुली दबाकर रह गए
। उधर नैतिक दृष्टि से भारत ने बड़ी प्रतिष्ठा पाई है और उसे
ान्ति का सच्चा समर्थक समझा जाने लगा है। इसके उपरान्त
केवल एक और शक्ति उल्लेखनीय रह गयी है और वह है फ्रांस।
ो फ्रांस न तो अपनी सामर्थ्य के कारण ही अधिक विश्वास पैदा
करता है और न अपनी नीति के कारण ही। इण्डोचाइना, ट्यू-
नीसिया, मोराको आदि के सम्बन्ध में अपनी नीति के कारण उसे
तिरस्कार ही अधिक मिलता है। फ्रांस की गणना यदि अब बड़ी
शक्तियों में की जाती है तो वह केवल इसलिए कि वह काफी अर्से
तक एक बड़ी शक्ति रहा है और अमेरिका व ब्रिटेन उसे अभी भी
बड़ी शक्तियों में बनाए रखना चाहते हैं।

अपने मुख्य विषय अमेरिका पर लौटते हुए मैं यही कहना चाहता हूं कि यद्यपि अमेरिका आज संसार का सिरमौर बना हुआ है किन्तु उसका यह स्थान उसके लिए एक कसौटी है। देखना तो यह है कि अमेरिका संसार मे शान्ति बनाए रखने, कम उन्नत देशों को सबल-स्वस्थ बनाने, पीड़ित मानवता का कष्ट निवारण करने मे कहां तक योग देता है। साम्यवाद के निवारण के लिए अमेरिका आवश्यकता से अधिक चिन्तित जान पड़ता है और कभी-कभी ऐसा जान पडता है कि अपनी बौखलाहट मे अमेरिका कहीं गलत कदम न उठा ले। लेकिन मेरा मत है कि अमेरिका को साम्यवाद से कोई खतरा नही होना चाहिए। खतरे की वस्तु तो संसार के देशों मे तनाव, भूख, रोग और कष्ट आदि का विद्यमान रहना है। यदि अमेरिका ने रचनात्मक दृष्टिकोण अपना कर इन्हें दूर करने का दृढ निश्चय किया तो उसकी सफलता निष्कंटक है, इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए। मेरे विचार मे जो दृष्टिकोण अमेरिका के लिए उचित है वही रूस के लिए भी श्रेयस्कर है। यदि ये दोनो महान राष्ट्र प्रतिस्पर्द्धा छोड़कर विश्व के कल्याण के लिए रचनात्मक कार्यों में लग जाएं तो मानवता

कदाचित् अमेरिका की स्थिति का सच्चा विश्लेषण प्रस्तुत किया
िका का कर्तव्य पूरा कर सकता होगा। अमेरिका का आज भी
देखकर बैठे बस पर यह प्रभाव भी पड़ा कि धन और भौतिकवी
सुखों के अतिरेक से भी एक प्रकार का पाप प्रारम्भ होता है।
भी अमेरिका में शुरू हो गया है। इसका एक छोटा-सा प्रमाण
अमेरिका के 'फेडरल ब्यूरो आफ इन्वेस्टिगेशन' के डायरेक्टर
जे० एडगर हूवर द्वारा प्रकाशित सन् १९५१ की पहली छमाही
अमेरिका के अपराधों की सूची। इस सूची में बताया गया है कि इ
छ महीनों में अमेरिका में दस लाख अड़तीस हजार दो सौ नब्बे
अपराध हुए, हर ४०.३ मिनट पर एक खून, हर २९.४ मिनट प
एक बलात्कार, हर ८.८ मिनट पर एक डाका, हर ५.७१ मिनट प
एक चोरी। इस प्रकार हर १४.९ सेकण्ड पर एक बड़ा अपराध
इसी रिपोर्ट में यह बताया गया है कि अपराधों की यह संख्या ब
रही है।

अमेरिका को अपने नैतिक चरित्र की ओर ध्यान देने की और
स ओर अत्यधिक सतर्क रहने की नितान्त आवश्यकता है। जिनका
ह मत है कि गरीबी ही सारे अपराधों का कारण है वे अमेरिका के
न अपराधों की ओर दृष्टिपात करें। अपराधों की जड़ है अनैतिकता,
ह चाहे अमीरी में हो या गरीबी में।

फिर इतना सम्पन्न रहते हुए भी अमेरिका भावी युद्ध के भय से
ाप रहा है, यह भी उसके जीवन में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

तारीख २ नवम्बर, ११ बजे दिन का हमने पैन अमेरिकन लाइन के वायुयान से अमेरिका देश छोड़ दिया।

हवाई द्वीप

भारत से कैनेडा जाते हुए लन्दन से मांट्रियल पहुचने मे एटलांटिक महासागर को पार करते समय ही इस दौरे की अब तक की सबसे बड़ी उड़ान हुई थी। सैनफासिस्को से टोकियो की उड़ान मे प्रशान्त महासागर को पार करना पड़ता है। यह उडान एटलांटिक महासागर को पार करने वाली उड़ान से कही लम्बी थी और सैनफ्रासिस्को से होनोलूलू की उड़ान, जो बिना बीच मे कहीं ठहरते हुए थी, ससार की बिना बीच मे कहीं ठहरने वाली उड़ानों मे सबसे लम्बी। कोई २,४०० मील की उड़ान थी जिसमे पौने दस घण्टे के लगभग लगते थे।

चार इजन वाला पैन अमेरिकन लाइन का हमारा वायुयान खूब बड़ा और सुविधाजनक था। एयर कण्डीशन होने के कारण पन्द्रह हजार फुट ऊपर उठ जाने पर भी वायुयान के भीतर का वायुमडल वैसा ही था, जैसा उस समय था जब वह जमीन से उड़ा था। फिर बाहर किसी तरह का तूफान आदि न था, अतः इतनी लम्बी उड़ान होने पर भी बिना किसी कष्ट के ठीक समय हम होनोलूलू पहुच गए। यद्यपि हमारी उड़ान में पौने दस घंटे लगे. परन्तु होनोलूलू का समय सैनफ्रासिस्को से दो घटे पीछे रहने के कारण होनोलूलू के इस समय पौने सात ही बजे थे।

होनोलूलू के हवाई अड्डे पर यात्रियों के स्वागतार्थ बड़ी भारी भीड़ जमा थी और यह भीड़ उमंगो से परिप्लावित थी।

होनोलूलू हवाई द्वीपों में से एक पर बसा हुआ है और यद्यपि यह अमेरिका का हिस्सा नहीं है तथापि इसपर अधिकार है अमे-

लिया था। इसका फौजी महत्व भी है। यहीं है प्रसिद्ध वैकी
हार्बर, पर फौजी महत्व के अलावा यह है अमेरिका निवासि
विहार-भूमि। इसका कारण है हवाई द्वीपों का प्राकृतिक सौ
और कुछ उष्णता लिए हुए यहां की हवा। हवाई पार्लमेन्ट
मास का चाहे कोई पर्व हो, पर मैं तो हवाई द्वीपों का यह वर्ण
मेरा है कि यहां की हवा बड़ी पवित्र हो। अमेरिका-निवासी
आते हैं छुट्टियां मनाने तथा विवाह के बाद 'हनीमून' के लि
यहां आकर वे खूब घूमते, यहीं समुद्र में नहाते तथा यहीं की
की रेत पर लेटे-लेटे धूप का सेवन करते हैं। जो यहां विहार क
आए हुए थे वे ही आए थे उनका स्वागत करने जो इसी प्रकार
विहार करने जा रहे थे। स्वागतार्थ आने वाली जनता में इतनी
उमंगें थीं। अब तक जो यात्री शान्ति से वायुयान में बैठे हुए
रहे थे वे भी इन उमंगों को देख उत्साहित हो उठे। उतरते
यात्रियों को पैन अमेरिकन लाइन वालों ने एक-एक पुष्पहार पहना
और स्वागत के लिए आए हुए लोगों ने जो जिसका स्वागत क
आया था उसे। सुना यह कि यहां आने वालों का सदा पुष्पहारों
इसी प्रकार स्वागत होता है।

जब प्रातःकाल हम उठे तब हमने देखा कि सारा प्राकृतिक दृ
एकदम बदल गया है। यूरोप, कैनेडा, अमेरिका की उद्भिज्ज-सृ
यहां न थी। यहां की यह सृष्टि भारत से मिलती-जुलती थी। नारियल
सुपारी, आम न जाने कितने प्रकार के भारतीय वृक्षों के यहां दर्श
हुए। भारत छोड़े हमें तीन महीने से कुछ ऊपर हुए थे, पर जा
पड़ता था जैसे वर्षों बीत गए हैं। भारतीय तरु और लता
गुल्मों को देख भारत से अभी भी बहुत दूर रहने पर भी जान पड़
जैसे हम भारत में नहीं, तो भारत के समीप अवश्य पहुंच गए हैं, यो
यद्यपि हमें किसीने न देश-निकाला दिया था, न हम कहीं कैद हो
थे, स्वयं आए थे इस विश्व-भ्रमण के लिए, पर अब हम भारत
के निकट हैं यह अनुभव कर हमें कितना आनन्द हुआ! प्रशान्त महा-

सागर के फीजी द्वीपों में भी मैं इसी प्रकार की उद्भिज-सृष्टि के दर्शन कर चुका था। वहां तो मैंने ग्रामों पर मौर ग्रौर फल तथा मोगरे के पुष्प भी देखे थे। प्रशान्त महासागर के ही इन हवाई द्वीपों में हमें भारत के बाहर पुनः वैसी ही भारतीय उद्भिज-सृष्टि के दर्शन हुए। इस भारतीय उद्भिज-सृष्टि के सिवा भी प्राकृतिक दृष्टि से हवाई द्वीप सचमुच बड़े सुन्दर हैं, चारों ग्रोर लहराता हुग्रा समुद्र ग्रौर बीच में खूब हरे-भरे ये द्वीप।

हवाई द्वीपों के निवासी दूसरी ग्राकर्षक वस्तु थे; भारत के निवासियों के सदृश ही वर्ण तथा रूप में भारतीयों से कुछ मिलते-जुलते।

यहां जो लोग विहार करने ग्राए थे उनकी संख्या भी कम न थी। सुना कि इन द्वीपों की ग्रार्थिक ग्राय प्रधानतया तीन ज़रियों से है—गन्ने की खेती तथा शक्कर का उत्पादन, ग्रनानास की खेती ग्रौर यात्रियों का ग्रागमन। इनमें यात्रियों का ग्रागमन भी कम महत्त्वपूर्ण न था।

हवाई द्वीपों की ग्रर्थ-व्यवस्था का ग्राधार मजबूत है। यहां का सबसे बड़ा उद्योग चीनी-उद्योग है। पिछले सौ वर्ष से यह उद्योग हवाई द्वीप-समूह की ग्रर्थ-व्यवस्था का मूलाधार रहा है। ग्रौद्योगिक ग्राय ग्रौर राजस्व की दृष्टि से भी चीनी-उद्योग सर्वोपरि है। १७७८ में जब कप्तान जेम्स कुक ने पश्चिमी देशों को हवाई द्वीपों की जानकारी कराई थी तब भी यहां गन्ना पैदा होता था, लेकिन गन्ने की खेती १८३७ में प्रधानता पा गई। प्रति वर्ष सारे ग्रमेरिका में जितनी चीनी तैयार होती है उसकी एक चौथाई हवाई द्वीपों में होती है ग्रौर इस चीनी के कोई सातवें भाग का उपयोग संयुक्त राज्य ग्रमेरिका करता है।

दूसरा स्थान ग्रनानास उद्योग का है। पिछले पचास वर्ष से टीन के डिब्बों में ग्रनानास भरकर बाहर भेजा जाता है।

तीसरा स्थान यात्रियों के ग्रागमन का है।

जापान

जापान की राजधानी टोकियो हम ४ नवम्बर को पहुंचे ।

जापान में हम तारीख २३ नवम्बर तक एक पक्ष से भी अधिक ठहरे। इन दिनों में हम लोग टोकियो में रहे और जापान के अन्य प्रसिद्ध स्थानों को भी गए।

अन्य देशों के सदृश जापान में भी हमने सभी कुछ देखने का प्रयत्न किया। यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा देखी। यहां के सबसे बड़े नगर टोकियो और यहां के सबसे बड़े व्यापार-केन्द्र ओसाका को देखा। यहां के प्राचीन धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्थान देखे। यहां के जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं को जानने का प्रयत्न किया। यहां की प्रसिद्ध संस्थाएं देखीं। यहां की खेती और उद्योग-धन्धे देखे, विशेषकर छोटे-छोटे कल-कारखाने (स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज़ तथा काटेज इण्डस्ट्रीज़) जिनके लिए जापान सारे संसार में प्रसिद्ध है। यहां का प्रसिद्ध काबुकी नामक रंगमंच देखा और यहां के नाइट-क्लब भी देखे।

प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण समूचे जापान को एक बड़ा पार्क या हिल स्टेशन अर्थात् बाग अथवा पार्वत्य प्रदेश कहा जा सकता है, इसीलिए सैर के लिए जापान एक अत्यन्त उपयुक्त स्थान है। सर्वत्र ही पहाड़ दिखाई देते हैं, जो कहीं भी बहुत ऊंचे नहीं हैं। समूचे जापान में पर्वत-श्रेणी रीढ़ की हड्डी के समान फैली हुई है। इनमें से कुछ पर्वत जलते हुए ज्वालामुखी हैं। पर्वतों के बीच-बीच में अत्यन्त सुन्दर झीलें हैं। मैदानों में पाई जाने वाली झीलें उतनी सुन्दर नहीं और कहीं-कहीं तो दलदल-मात्र हैं। ज्वालामुखी के प्रकोप के कारण पर्वत के आकार कहीं-कहीं जहां-तहां बिगड़ गए हैं, पर इससे उनका सौन्दर्य और भी बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त-जापान का वनस्पति-जगत् है, जो सर्दैव हरा-भरा रहता है।

जापान की एक और विशेषता वहां के गरम सोते हैं। दुनिया में कोई और देश ऐसा नहीं है जहां इतने अधिक प्राकृतिक गरम सोते

हों। इनके अनुसार जापान के प्रतिदिन के जीवन की जितनी झां-
की मिलती है उतनी अन्यत्र नहीं। गत कुछ वर्षों से शहरों के न
सप्ताह के अन्तिम दिनों में इन सोतों की ओर अधिकाधिक आकर्षित
होने लगे हैं। इन लोगों की सुविधा के लिए एक संस्था भी कायम
की जा चुकी है। एक हजार एक सौ से अधिक ऐसे सोते हैं जिनका
पानी चिकित्सा के लिए लाभदायक माना जाता है। बेप्पू का बन्दर
नगर तो आश्चर्यजनक गरम सोतों के नगर के रूप में विश्व-विख्यात
हो चुका है। गंधक के भी बहुत-से सोते पाए जाते हैं, जहां रोगी
इलाज के लिए आते रहते हैं।

संसार के जितने देश हमने देखे उनमें प्राकृतिक शोभा की दृष्टि
से जापान का स्थान सबसे अच्छे देशों में है। इस प्राकृतिक देन का
मनुष्य ने भी उपयोग किया है। यहां के बगीचों में क्रिसेंथमम नामक
पुष्प के पौधे तो विदेशी निरीक्षक कभी विस्मृत ही नहीं कर सकते। इन
फूलों को भारत में गुलदावदी कहते हैं। बड़े गुलदावदी के फूल एक-
एक पौधे में सौ-सौ से अधिक होते हैं और छोटे गुलदावदी के फूल तो
एक-एक पौधे में सैकड़ों। फिर इनके भिन्न-भिन्न रंग देखते ही
बनते हैं।

प्रकृति ने यहां के जड़-जगत् पर ही कृपा नहीं की है, जंगम-
जगत् पर भी। इस जंगम-जगत् की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि मानव और मानव
के वाम भाग पर यहां निसर्ग की जितनी दया हुई है उतनी मेरे मता-
नुसार इस संसार के किसी भी देश पर नहीं। मैं पढ़ता और सुनता
रहा था कि नख-शिख जितना आर्यजाति का सुन्दर होता है उतना
अन्य किसी जाति का नहीं, परन्तु जापानी महिलाएं मंगोल जाति
की होने पर भी मुझे जितनी सुन्दर जान पड़ती थी उतनी आर्य जाति
की भी नहीं। जापान ठण्डा देश है, अतः यहां के निवासी गौर वर्ण
हैं; बहुत ऊंचे-पूरे भी नहीं, प्रायः ठिगने हैं। यहां के निवासियों की
मुखाकृति आर्यों से सर्वथा भिन्न है। हमारी आर्य जाति में जिन
कमलदल-लोचनों और शुक-नासिका का वर्णन है वैसे बड़े-बड़े नेत्र

और नुकीली नाक यहां के निवासियों की नहीं । अनेक की आंखें तो दो रेखाओं के सदृश मुख पर खिंची-सी रहती हैं, पर उनकी मुखाकृति पर ये टेढ़ी नेत्र-रेखाएं मुझे तो बड़ी भली जान पड़ीं । फिर यहां की महिलाओं के व्यवहार मे एक विचित्र प्रकार की मृदुता है । यह व्यवहार प्रारम्भ होता है मुस्कराहट से युक्त अत्यन्त झुककर विनम्र नमन से । जापानी एक या दोनों हाथ उठा अथवा केवल सिर झुकाकर नमस्कार नहीं करते । नमस्कार करते समय वे कमर तक के शरीर के आधे ऊपरी भाग को झुकाते हैं । महिलाओं को इस प्रकार का नमन मुस्कराकर करना चाहिए, यह शायद सारी जापानी जाति को सिखाया गया है । यह नमन तथा इसके पश्चात् भी हर प्रकार के व्यवहार में विनम्रता ने इन महिलाओं के सौन्दर्य मे मृदुता और माधुर्य का समावेश कर इन्हें कहीं अधिक सुन्दर बना दिया है । फिर इस सौन्दर्य मे और वृद्धि की है इनके चित्र-विचित्र रंगों के विशेष ढंग के वस्त्रों ने । मुझे तो यह बड़े ही खेद की बात जान पड़ी कि जापानी महिलाएं अपनी जापानी पोशाक छोड़कर पश्चिमी वेश-भूषा अपना रही हैं । और जापानी युवतियों के इस समस्त सौन्दर्य, चटकीली वेश-भूषा एवं विनम्र तथा मधुर व्यवहार में कहीं भी अश्लीलता का स्पर्श तक नहीं हुआ है । उनमें सौन्दर्य है, शील है, शालीनता है । जो लोग यह समझते हैं कि स्त्रियों की अर्धनग्न वेश-भूषा और केवल चटक-मटक आकर्षक वस्तुएं हैं, उनके लिए जापानी महिलाएं एक चुनौती हैं । ये महिलाएं अपने बच्चों को एक विचित्र प्रकार से ले जाती हैं, गोद मे नहीं, पीठ पर ।

आर्थिक दृष्टि से इस देश में मानव ने कम काम नहीं किया है। भूमि पर्याप्त न होने तथा जनसंख्या की अधिकता होने के कारण यदि जापान के निवासी अपनी आवश्यकता के अनुसार खाद्य वस्तुएं उत्पन्न न कर सकें तो इसमें उनका दोष नहीं, पर उन्होंने सारे देश की भूमि का इंच बराबर भी निकम्मा नहीं छोड़ा है । यहां खेती के बड़े-बड़े फार्म नहीं हैं, इसीलिए खेती मे ट्रेक्टर आदि बड़ी-बड़ी मशीनों

करता है। कोई भी तो तैयार माल ऐसा नहीं जिसकी बिक्री का 'मार्केटिंग ब्यूरो' न हो। दूसरा कारण है, यातायात की व्यवस्था। यह व्यवस्था इतनी अच्छी है कि कोई माल यातायात के साधनों की कमी के कारण पड़ा नहीं रहने पाता। और तीसरा कारण है, हर कारखाने वालों को कानूनन कुछ संख्या काम सीखने वालों (एप्रेन्टिसों) को रखना पड़ता है। इससे काम जानने वालों (स्किल्ड लेबर) की कमी नहीं होने पाती। जापान में आर्थिक उन्नति का प्रधान कारण यहां के लोगों का अत्यधिक श्रमशील और चरित्रवान होना है। अपने काम-धन्धों में जापानी जितनी अधिक मेहनत करते हैं कम जातियां करती होंगी। इसीके साथ सुना गया कि वे बड़े ईमानदार होते हैं। कोई भी जिम्मेदारी का काम उन्हें निःशंक होकर सौंपा जा सकता है। इतने पर भी जापान अमेरिका और यूरोप के सदृश धन-वान नहीं है। हां, पूर्व का शायद सबसे धनवान देश कहा जा सकता है।

परन्तु सम्पन्न होने पर भी जापान की अर्थ-व्यवस्था मूलतः कमजोर है। अर्थ-व्यवस्था की कमजोरी के कारण हैं—भूमि की और प्राकृतिक साधनों की कमी, बढ़ी हुई आबादी, अभी भी किसानों की गरीबी, उद्योग-धन्धों की आधुनिकता की ओर जाते हुए भी जापानी माल की निकासी के लिए मंडियों की कमी और विदेशों पर आव-श्यकता से अधिक निर्भरता आदि।

जापान का केवल साढ़े पन्द्रह प्रतिशत भाग खेती के योग्य है। कोई साढ़े सात प्रतिशत भाग में चरागाहें हैं। बाकी भाग में जंगल हैं। जापान के प्राकृतिक साधन न्यून हैं। अपनी आवश्यकता का एक तिहाई लोहा उसे विदेशों से मंगाना पड़ता है। अधिकतर कच्चे माल के लिए उसे दूसरे देशों का मुंह ताकना पड़ता है। रबड़, कपास, ऊन आदि उसे लगभग पूरे के पूरे बाहर से ही मंगाने पड़ते हैं। मोटे तौर पर अपने कारखानों की आवश्यकता के कच्चे माल का ४० प्रतिशत भाग ही जापान अपने यहां से प्राप्त कर पाता है। गन्धक

जापान में कला, साहित्य, दर्शन और विज्ञान का विकास होने लगा। सातवीं शताब्दी समाप्त होते न होते सारा देश बौद्धमत के प्रभाव में आ गया था। चौदहवीं शताब्दी में धर्म और राजनीति के बीच संघर्ष छिड़ा। मूल जापानी धर्म शिंटो का पुनः प्रादुर्भाव हुआ। दो शताब्दी तक खींचतान चलती रही। सत्रहवीं शताब्दी में जब शान्ति और राजनीतिक एकता स्थापित हुई तो जापान में ईसाई धर्म ने भी प्रवेश किया।

इस धार्मिक प्रभाव वाली संस्कृति ने यहां के लोगों को बड़ा कलापूर्ण बना दिया है।

यहां के लोगों की तन्दुरुस्ती भी बुरी नहीं। महामारियों का प्रकोप यहां नहीं सुना गया। पर इस सम्बन्ध में यहां की सरकार की कुछ विचित्र आज्ञाएं हैं, जैसे, न जाने क्यों यह माना गया है कि आम से हैज़ा होता है, अतः आम के आयात पर यहां पूर्ण प्रतिबन्ध है।

यहां के लोगों की वेश-भूषा पश्चिमी हो गई है। पुरुष तो प्रायः सभी पश्चिमी ढंग के वस्त्र पहनते हैं, स्त्रियों में भी अधिकतर पश्चिमी। यह क्यों हुआ है, यह कहना कठिन है। कदाचित् पश्चिमी वेश-भूषा का यहां की वेशभूषा से अधिक सुविधाजनक होना इसका प्रधान कारण है। गांवों तक में पश्चिमी वेश-भूषा का प्रचार है। फिर आज तो सारे संसार के देशों पर ही पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी वेश-भूषा का प्रभाव है। परन्तु वेश-भूषा पश्चिमी होने पर भी जापानियों के रहन-सहन में अधिकांश बातें पूर्वी ढंग की हैं, जैसे, उनके मकानों के भीतर जूते नहीं जाते। कुर्सियों पर न बैठ वे ज़मीन पर बैठते हैं और ज़मीन पर बैठकर ही खाते हैं।

यहां के निवासियों में बहुत अधिक धनवान और बहुत अधिक निर्धन दोनों ही कम हैं। मध्यम श्रेणी के लोग अधिक हैं। पर धनवान और निर्धन दोनों ही नहीं हैं, यह नहीं कहा जा सकता। निर्धन तो काफी कहे जा सकते हैं। हमने यहां भिक्षा मांगने वाले भी देखे। जीवन-धारण अमेरिका और यूरोप के अनुसार नहीं, पर पूर्व के देशों

में शायद सबसे अच्छा है। गांवों के मकान बहुत अच्छे नहीं, पर कपड़े सभी अच्छे पहनते हैं। बच्चों में भी नंगे बच्चे हमने कहीं नहीं देखे। लोगों का भोजन चावल है। और भी सभी प्रकार के मांस खाए जाते हैं। बिना पकाई हुई मछली लोग बड़े चाव से खाते हैं। कहीं-कहीं मेंढ़क और सांप भी आहार के काम में आते हैं। हमने जापान में जिन स्थानों को देखा वे हैं—टोकियो, कामाकुरा, इनोशिमा, ओसाका, नारा, कियोटो, हाकोने, निक्को।

टोकियो

टोकियो जापान की राजधानी तथा इस देश का सबसे बड़ा नगर है, और इस देश का ही क्या संसार के सबसे बड़े नगरों में टोकियो का नम्बर चौथा था और अब सुना, पहला हो गया है। टोकियो की आबादी है अब लगभग एक करोड़। छोटे-छोटे लकड़ी के मकानों का यह खूब फैला हुआ शहर है। पत्थर, सीमेंट या ईंट-चूने के पक्के मकान यहां बहुत कम हैं। प्रायः भूकम्पों का होते रहना कदाचित इसका मुख्य कारण है। सड़कें भी बहुत चौड़ी नहीं हैं। नगर में सफाई अच्छी नहीं है, अधिकांश भाग काफी गन्दे हैं।

टोकियो शहर जापान का मैं कोई दर्शनीय स्थान नहीं मानता। यहां की धारासभा के भवन, कुछ बगीचे और डिपार्टमेंटल स्टोर्स नामक सब वस्तुओं के मिलने की विशाल दुकानों को छोड़ यहां का न कोई मकान ही देखने योग्य है और न कोई बाजार। संसद् जिसे यहां 'डायट' कहते हैं उसका भवन अवश्य दर्शनीय है।

टोकियो का जीवन जापान देश के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। यहां की सड़कों पर नर-नारियों का सदा प्रवाह-सा बहता रहता है।

यहां हमने जापान के प्रसिद्ध काबुकी नामक रंगमंच को देखा। इसका आरम्भ सत्रहवीं शताब्दी में हुआ था। बड़ा भारी मंच, उस पर चित्र-विचित्र रंगों के विशाल और भव्य दृश्य। जापान की पुरानी

वेश-भूषा में नट और नटी। स्त्रियों का काम भी इस रंगमंच पर पुरुष ही करते हैं, परन्तु कुछ ऐसे ठिगने-ठिगने तथा दुबले-पतले पुरुषों को स्त्रियां बनाया जाता है कि जब तक हमें यह बात बताई नहीं गई कि काबुकी रंगमंच पर स्त्रियों का काम पुरुष ही करते हैं, तब तक हम यह बात न जान सके कि वे स्त्रियां न होकर यथार्थ में पुरुष हैं। काबुकी रंगमंच पर एक प्रदर्शन में एक ही नाटक नहीं खेला जाता। बहुधा छोटे-छोटे नाटकों का संग्रह रहता है। रंगमंच पर एक ओर एक या एक से अधिक लोग जापानी तबूरे पर नाटक की कथा का गान करते हैं और बीच में नाटक खेला जाता है। इस खेल में सम्भाषण, अभिनययुक्त गीत, नृत्य सभी होते हैं। नाटक की कथा का गान बैंकग्राउण्ड म्यूज़िक की भांति चलता है। मुझे अभिनय बहुत स्वाभाविक न जान पड़ा। ओवर ऐक्टिंग बहुत था। मुख्य कलाकारों की सहायता के लिए रंगमंच पर काले वस्त्र पहने व्यक्ति आते हैं जिन्हें 'कुरोगो' कहा जाता है। इस रंगमंच की वेश-भूषा जिस प्रकार जापान की पुरानी वेश-भूषा रहती है उसी प्रकार इस रंगमंच की भाषा, जिसे वर्तमान जापान-निवासी तक बहुत कम समझते हैं और इतने पर भी कितनी अधिक संख्या में कितने अधिक चाव से जापानी देखते हैं, इस काबुकी रंगमंच को! सुना यह गया कि काबुकी रंगमंच जापान का राष्ट्रीय रंगमंच है, जिसे सिनेमा आदि कोई भी आधुनिक प्रदर्शन ज़रा भी आंच नहीं पहुंचा सके। दिसम्बर १९५० में अट्ठाईस करोड़ दस लाख येन की लागत पर इसका पुनर्निर्माण हुआ और यह जापान की आधुनिक वास्तुकला का एक अनुपम नमूना है। यहां प्रमुख काबुकी कलाकार दर्शकों के सम्मुख उपस्थित होते हैं। वर्ष में तीन बार जनवरी, अप्रैल और नवम्बर में विशेष [illegible] इस थियेटर में ढाई हज़ार से अधिक

रात्रि-क्लबों का इस लड़ाई के बाद यहाँ के जीवन में प्रचार हुआ है। परन्तु यूरोप तथा अमेरिका के रात्रि-क्लबों और यहाँ के रात्रि-क्लबों में कई बातों में बहुत अन्तर है। यहाँ के रात्रि-क्लबों को देखने एवं वहाँ नाचने आदि के लिए पुरुष भार्त्नीक या अन्य कुटुम्ब महिलाओं के साथ नहीं जाते। यहाँ जाते हैं पुरुष अकेले, क्योंकि उनकी शारीर-नृत्यकी के लिए यहाँ की स्त्रियों का एक समूह रहता है, जो किसी पुरुष के जाते ही उनके पास आ जाती हैं। रात्रि-क्लब मुझे तो सभी जगह व्यभिचार के अड्डे दिखे, पर जापान के ये क्लब तो परोक्ष ही में नहीं प्रत्यक्ष में भी व्यभिचार के अड्डे कहे जा सकते हैं। यहाँ जाने वाले पुरुषों को यहाँ की ये अर्द्धनग्न रमणियां खिलाती-पिलाती हैं और फिर इनके साथ नाचती हैं। इस नृत्य के अतिरिक्त नृत्य और गीतों के कुछ और प्रदर्शन भी देखने को मिलते हैं। इनमें कुछ प्रदर्शनों की नर्तकियां नृत्य करते-करते अपने शरीर पर के कपड़े उतार-उतार कर फेंकती जाती हैं और अन्त में दोनों जांघों के बीच तीन इंच की पट्टी के सिवा ऊपर और नीचे के अंगों में पेरिस के सदृश यहाँ की नर्तकियों के शरीर पर भी कोई वस्त्र नहीं रहता। इन करीब-करीब नगी स्त्रियों के हाव-भाव तो इतने कामुक होते हैं जितने मैंने न रोम में देखे थे और न पेरिस में। सुना गया कि लड़ाई के बाद अमेरिकनों के यहाँ आने के पश्चात् की यह सृष्टि है। अमेरिका के सच्चे नाम पर जापान के इन रात्रि-क्लबों को मैं कलंक का स्तर मानता हूं।

टोकियो में हमने दो जापानी फिल्म भी देखे, जिन्हें देखकर हमारा मत हुआ कि जापान में अभी सिनेमा की बहुत तरक्की नहीं हुई है। इनमें से एक फिल्म में जापान की इस समय की सबसे प्रसिद्ध कला-कार सुश्री हारा हैरोइनी ने काम किया था।

कामाकुरा और इनोशिमा

टोकियो के निकट ही हमने दो स्थान और देखे। इन दोनों को बहा जा सकता है। इनके नाम हैं—कामाकुरा और इनो-

शिमा। कामाकुरा सागामी खाड़ी के किनारे स्थित है और अपनी मधुर जलवायु तथा सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ भगवान बुद्ध की आज की विशाल दाइबुत्सू मूर्ति है जो दुनिया में अपने ढंग की अनोखी है। अकेले इस मूर्ति के कारण भी कामाकुरा दर्शनीय है और कोई भी दर्शक वहां जाने का लोभ संवरण नहीं कर सकता। सन् ७३७ ई० में जापान के प्रसिद्ध सम्राट् श्री शोमू ने जो अनेक बौद्धमठ और मन्दिरों का निर्माण कराया उसमें कामाकुरा का सर्वश्रेष्ठ है।

यहां की गौतम की विशाल मूर्ति सन् १२५२ में गढ़ी गई थी। इसे प्रसिद्ध जापानी कलाकार ओनो-गोरोवे-मान ने राजकुमार सो सुन की आज्ञानुसार निर्मित किया था। यद्यपि सन् १४६५ ई० के भयंकर समुद्री तूफान ने मूर्ति को क्षति पहुंचाई फिर भी आज मूर्ति की हालत बहुत अच्छी है। इस मूर्ति की ऊंचाई ४३ फुट है और इसका घेरा ९७ फुट। चेहरे की लम्बाई ७·७ फुट है। एक-एक आंख ३·३ फुट की है। कान की लम्बाई ६·६ फुट है। मूर्ति का कुल वजन दो हजार सात सौ मन है। इससे बड़ी जापान में एक ही बौद्धमूर्ति है—किमोटो में।

टोकियो से कामाकुरा पहुंचने में ५४ मिनट लगते हैं। बिजली की रेलगाड़िया जल्दी-जल्दी चलती रहती हैं। मोटरकार भी इन स्थानों को जाती है। कामाकुरा में बहुत-से प्राचीन मंदिर आदि हैं। इन मन्दिरों तथा कई अन्य कला-वस्तुओं से पता चलता है कि बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में इसका कितना ऊंचा स्थान था। प्राचीन ऐतिहासिक दृश्य और मन्दिर आदि दर्शकों के लिए बड़ी आकर्षक वस्तुएं हैं।

इनोशिमा कामाकुरा के समीप ही एक छोटा टापू है। इस टापू में एक गुफा है जो कोई ३६० फुट गहरी है और दो शाखाओं में बंटी हुई है। दर्शकों को गुफा देखने के लिए मोमबत्तिया दी जाती हैं। गुफा के छोर पर बाईं ओर बनेटन की एक मूर्ति है जिसे सौभाग्य के देवी-देवताओं में से एक माना जाता है।

ज्ञान शाकुन्तल' में वर्णित महर्षि कण्व के आश्रम का स्मरण आए बिना न रहा।

कियोटो

कियोटो सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों वाला एक रमणीय स्थान है। कियोटो जापान की प्राचीन राजधानी रहा है और एक हजार वर्ष से अधिक समय से जापान की सभ्यता का केन्द्र। यह नगर प्राचीन ऐतिहासिक और धार्मिक परम्पराओं का स्थान है और यहां उन कलाओं व दस्तकारियों का जन्म हुआ जिनके लिए जापान सारे संसार में प्रसिद्ध है। आधुनिक भौतिक प्रगति के साथ-साथ कियोटो बौद्धमत का एक प्राचीन केन्द्र है और यहां आज भी प्राचीन जापान की आत्मा के दर्शन किए जा सकते हैं। यह नगर पर्वतों से घिरा हुआ है और इसमें अनोखी मोहक कान्ति है। यहां का 'दाइबुत्सू' बौद्ध मन्दिर, उसका पगोडा, उस मन्दिर की विशाल बौद्धप्रतिमा तथा घण्टा दर्शनीय हैं। इस मन्दिर में एक मुरली बजाती हुई श्रीकृष्ण की मूर्ति भी है।

हाकोने

यहां का प्राकृतिक दृश्य भी बड़ा रमणीय है। गन्धक के कारण यहां अनेक गरम पानी के झरने हैं, जिनसे भाप निकला करती है। एक खासी बड़ी झील भी है। परन्तु गन्धक के ये खेल न्यूज़ीलैण्ड के रोटारुआ नामक स्थान में इस स्थल से कहीं अधिक विशेषता रखने वाले हैं।

निक्को

निक्को एक पहाड़ी स्थल है। कुछ फुट चढ़कर एक पहाड़ी मैदान मिलता है जिसमें एक सुन्दर झील और जल-प्रपात है। नदियों, झरनों और पुरातन वृक्षों के कारण निक्को का प्राकृतिक सौन्दर्य अद्वितीय

ा के सचालको ने मुझे भाषण देने के लिए निमन्त्रित किया
।

हमें एक बात का खेद रहा कि ससार मे एक सरकार की स्थापना
उद्देश्य से हिरोशिमा में होनेवाली एक परिषद् का निमन्त्रण मिलने
भी जापान देर से पहुचने के कारण मैं हिरोशिमा न जा सका
र इस परिषद् का संगठन करने वालो से मिलकर ही हमे सन्तोष
ना पडा।

जैसा सर्वविदित है, हिरोशिमा पर ६ अगस्त, १६४५ को अणु-
 फेंका गया था। बम गिरने के स्थान से चारो ओर दो-दो मील
 के प्रदेश को 'अणु मरुस्थल' कहा जाने लगा था। सरकारी
किड़ो के अनुसार इस बम-विस्फोट मे हताहत होने वालों की सख्या
 प्रकार है—

मृत	—	७८, १५०
लापता	—	१३, ६८३
घायल	—	३७, ४२५
कुल जोड़		१, २६, ४५८

इस बम-विस्फोट मे ६, ०४० भवन और इमारतें नष्ट हो
गई थीं।

आरम्भ मे यह खबर थी कि जिस प्रदेश में अणुबम का विस्फोट
हुआ है वह पचहत्तर वर्ष तक बजर रहेगा, किन्तु कुछ महीनो के
अनन्तर यह बात निराधार साबित हुई। विस्फोट के बाद जीवित रहने
वालो ने साहस के साथ पुनर्निर्माण का काम आरम्भ किया और १६५०
मे हिरोशिमा की जनसंख्या बढती हुई दो लाख पचासी हजार सात सौ
अट्ठारह तक पहुंच चुकी थी।

यूरोप मे जो स्थिति ब्रिटेन की है, एशिया मे वही स्थिति जापान

की है। इनमें बहुत छोटे हैं किन्तु अत्यन्त विकसित देश है। इनमें स्थिति के कारण प्रकट होता है कि जापान चीन के समुद्र-तट के क्षेत्र को घेरे हुए है जब कि ब्रिटेन यूरोप के समक्ष स्थित है। जापान का अधिकांश भाग पहाड़ी है और ज्वालामुखियों व भूचाल के कारण कठोर लगता है। भारत जैसे मैदान जापान में कम होने के कारण इसमें विस्तृत मैदान नहीं और कटा-फटा समुद्र-तट होने के कारण जापान में बन्दरगाह बहुत अच्छे हैं, जिससे व्यापार में बड़ी सहायता मिलती है। नदियाँ छोटी और पथरीली हैं जिनसे बिजली तो पैदा की जा सकती है, किन्तु वे नौ परिवहन के काम की नहीं हैं।

जापान एक अत्यन्त सुन्दर देश है और हो सकता है कि जापानी इसी कारण प्राकृतिक सौन्दर्य-प्रेमी हैं।

जापान पश्चिमी और पूर्व, प्राचीन और नवीन का सम्मिश्रण है। जापान पर अन्य संस्कृतियों का प्रभाव धीरे-धीरे न पड़कर एकाएक फैलने वाली बाढ़ के रूप में पड़ा। पहले जापान पर प्राचीन चीनी संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा। बाद में यहाँ बौद्धमत छा गया। नये युग में जापान पर पश्चिम का जो व्यापक प्रभाव पड़ा और आज के जापानी जीवन में हम देख सकते हैं कि पुरानी जापानी संस्कृति और परम्परा पर पश्चिमी सभ्यता का मुलम्मा चढ़ गया है।

जापान की मुख्य फसलें हैं, चावल, गेहूं, चाय और तम्बाकू। खेती योग्य भूमि के तीन बटा चार भाग में वे लोग खेती करते हैं जो जमीन के मालिक हैं। बाकी जमीन में ऐसे किसान हैं जो दूसरे से जमीन लेकर खेती करते हैं। धान की खेती के जापानी तरीके का उल्लेख करना यहां उचित ही होगा, क्योंकि इस तरीके का भारत में बड़ा प्रचलन हो रहा है। यह धान की खेती का एक वैज्ञानिक तरीका है जिससे फसल कई गुनी होती है।

तरीका यह है : हर पचीस फुट के लिए एक पौण्ड कम्पोस्ट खाद अथवा गोबर की खाद काम में लाइए। हर पचीस फुट पर एक पौण्ड ... छितरा दीजिए, मिट्टी को सम करके कम्पोस्ट खाद डाल

दीजिए और ऊपर से हलकी-हलकी राख बुरक दीजिए। फसल काटने के ठीक बाद ही जमीन की जुताई करनी चाहिए। एक-एक फुट जगह छोड़कर चार-चार फुट चौड़ी पट्टियां बना लीजिए जिनकी मोटाई तीन इंच हो। बहुत अधिक बीज न बोए। बीज अच्छे किस्म के लें और उनको ननखरे पानी से भरी बाल्टी मे भिगो दें। इसके बाद बीजों को हिलाएं। भारी बीज बैठ जाएगे, हलके बीज ऊपर तिरने लगेंगे। भारी बीजों को चुनें। बीस मिनट के लिए बीजों को मिक्स्चर मे डालकर ऊपर से एक बटा आठ इंच अच्छी मिट्टी बिछा दें। पच्चीस फुट की पट्टी मे एक पौण्ड बीज बोना ठीक होगा। यदि वर्षा न हो तो जल दें। फिर पौधे तैयार होने पर उन्हें अन्यत्र बो दें। पौधे उस समय तैयार समझने चाहिएं जब वे छः से आठ इंच तक लम्बे हो और उनमें छः पत्तियां निकल आई हों। ये पौधे उस जमीन में अच्छे उगेंगे जो खूब तैयार की गई हो और जहां फी एकड़ जमीन मे पन्द्रह-बीस गाड़ी खाद डाली गई हो। एक विशेष बात ख्याल रखने की यह है कि पौधे एक दूसरे से दस-दस इंच की दूरी पर होने चाहिए।

जापान की राजनीतिक रूप-रेखा समझने के लिए वहां के जीवन में सम्राट का स्थान जान लेना बड़ा जरूरी है। दूसरे महायुद्ध मे जपान की हार के बाद सम्राट के महत्त्व मे काफी परिवर्तन हुआ है। दूसरा महायुद्ध समाप्त होने तक सम्राट की बड़ी पूजा होती थी, उसकी आलोचना करना या उसके विरुद्ध मत प्रकट करना गुनाह था। लोगों का अपने सम्राट में अन्धविश्वास-सा था और वे उसे दैवी शक्ति मानते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि जापान अपने सम्राट के अधीन एक अत्यन्त सगठित देश बन गया।

सन् १८८६ में मेजी सविधान की रचना हुई और पश्चिमी देशों की देखा-देखी ससद्, डायट, भी बनी, किन्तु इसका अधिकार-क्षेत्र बहुत ही सीमित था। सम्राट के हाथो में पूर्ण सत्ता रहने का व्यवहार-रूप यह था कि सारे अधिकार सरकारी अधिकारी वर्ग और सैनिक गुट के हाथों में आ गए। परिणाम यह हुआ कि जापान एक महान

सैनिक शक्ति के रूप में संगठित हुआ और दूसरे महायुद्ध में इसकी करारी हार हुई।

३ नवम्बर, १९४६ को जापान में नया संविधान तैयार किया गया जिससे उसका राजनैतिक स्वरूप ही बदल गया। नये संविधान के अनुसार सारे अधिकार जनता के हाथों में आ गए हैं और जनता के प्रतिनिधियों की सभा के रूप में संसद् को मिल गए हैं। सम्राट राज्य का प्रतीक-मात्र रह गया है। जापानी संसद् में दो सदन हैं—लोकसदन और विधान-परिषद्। देश के लिए कानून बनाना और देश की सरकार चलाना सब संसद् और मन्त्रिमण्डल के हाथों में है। इस तरह जापान में लोकतन्त्र का सूत्रपात हुआ है और अब देखना यह है कि वह कहां तक सफल होता है। जापान का भविष्य क्या है यह तो निश्चित नहीं कहा जा सकता, पर इतना अवश्य है कि लड़ाई के आघात के बाद जापान ने बड़ी तेजी से अपनी खोई शक्ति प्राप्त करने की कोशिश की है और इसमें उसे काफी सफलता भी मिली है।

२२ नवम्बर की रात को टोकियो से हम हांगकांग के लिए रवाना हुए।

हांगकांग

२४ नवंबर के प्रातःकाल हमारा वायुयान हांगकांग पहुंचा।

जब हमारा हवाई जहाज हांगकांग के हवाई अड्डे पर उतर रहा था उस समय हमने देखा कि हवाई द्वीपों के सदृश ही हांगकांग भी एक सुन्दर और रमणीय द्वीप है। साथ ही हवाई द्वीप की उद्भिज-सृष्टि जिस प्रकार भारत की उद्भिज-सृष्टि से मिलती-जुलती है उसी प्रकार हांगकांग की भी। भारत के सदृश ही यहां नारियल और सुपारी आदि के वृक्ष [illegible] यहां आम के वृक्षों का अभाव

था। हागकांग की उद्भिज-सृष्टि हवाई के समान अत्यधिक घनी भी नहीं थी। हवाई द्वीप के समान हागकाग पहुंचते ही भावना की एक लहर-सी उठी कि हम भारत के निकट पहुंच रहे हैं, परन्तु भावना की इस लहर को ग्राज विलीन होते भी देर न लगी। जिस प्रकार होनोलूलू से हम सीधे भारत न जाकर जापान रुक गए थे और भारत फिर से बहुत दूर हो गया था उसी प्रकार हांगकांग से भी हम चीन जा रहे थे और भारत पुनः दूर होने वाला था।

चीन की सीमा के लिए रवाना होने के पहले हमने हागकांग देख लेना चाहा।

हागकांग एक छोटे-से समुद्री टापू पर बसा हुआ है। यह द्वीप घिरा है पर्वत-श्रेणियो से। ग्राबहवा है बंबई के सदृश। प्राकृतिक दृश्य समुद्र और पहाड़ियों के कारण बड़ा सुन्दर हो गया है। लगभग बीस लाख की ग्राबादी की बड़ी-बड़ी इमारतो और संकरी-सकरी सड़को वाला यह शहर भूमि की कमी के कारण बहुत घना बसा है। पर बस्ती के घने होने पर भी नगर काफी साफ-सुथरा है। ग्राबादी मे अधिकाश चीनी हैं, पर कम रहते हुए भी प्रभुत्व है श्वेतागो का। ये सफेद अधिकतर अंग्रेज हैं। यहां के गोरे खूब धनवान जान पडते हैं, पर यहां की जनता अत्यधिक गरीब। यह गरीबी शोषण का परिणाम है और गरीबी में जिन कष्टों तथा दुर्गुणों की उत्पत्ति होती है वे सब यहां की ग्राम जनता मे स्पष्ट दिखाई देते हैं। लोगो के शरीरो, उनके मुखों, उनकी वेश-भूषा से निर्धनता साफ दिखाई पड़ती है। भिखारियो की भी काफी तादाद है और चोरो तथा उठाईगीरो की भी। मेरे कोट की ऊपर की जेब से मेरा फाउन्टेनपेन और पेंसिल इस सिफ्त से निकाल लिए गए कि हमे ज्ञात हो गया कि चोरी में यहां के निवासी कितने पटु हो गए हैं। हागकाग को देखकर हमे पुनः याद ग्रा गया कि विदेशी अंग्रेजी राज्य और गरीबी तथा गरीबी के कष्ट एवं दुर्गुण शायद पर्यायवाची हैं।

फौजी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के कारण हागकाग का संसार

के भूगोल में अपना एक विशेष स्थान है। फिर हवाई यातायात भी हांगकांग का हवाई अड्डा संसार के मुख्य हवाई अड्डों में है। यहां व्यापार का भी बड़ा विकास हुआ है और सिंगापुर सदृश हांगकांग का बन्दर भी एक खुला बन्दर होने की वजह से के व्यापार को बहुत सहायता मिली है।

हांगकांग में एक और विशेष कष्ट वहां के निवासियों को है यह कष्ट है पानी का। इस दौरे में पहली बार होटल पहुंचने पर ह लोगों को यह मालूम हुआ कि हम स्नान नहीं कर सकते, क्यों नलों में पानी केवल प्रातःकाल दो घंटे के लिए आता है और सन्ध्या को दो घटे के लिए। साथ ही पानी खराब न करने की लम्बी हिदायतें हुक्मत-भरे शब्दों में होटल के स्नानागार में लिखी हुई थीं जब हम लोग सन्ध्या को हांगकाग की सड़कों पर घूम रहे थे, ह लोगों को कुछ जगह गरीब स्त्रियां नाली के पानी में कपड़े धोते दिखाई दीं। हमारी यह समझ में नहीं आया कि जिस हांगकांग नग में इतने दिनों से अंग्रेजों का अधिकार है, जहा से करोड़ों रुपयों का व्यापार अंग्रेज प्रतिवर्ष करते हैं, वहा अब तक पानी की व्यवस्था क्यों न हो पाई।

तारीख २५ को प्रातःकाल ११ बजे जब हम हांगकांग से लाल चीन की सीमा के लिए रवाना हुए तब चाइना ट्रेवलिंग एजेन्सी के दो आदमी हमारे साथ थे। हांगकाग से लाल चीन की इस सीमा का शुनचुन स्थान बहुत दूर नहीं है।

लाल चीन की सीमा का यह स्थान एक अपनापन रखता है। हांगकांग से आने वाली रेल जहां ठहरी वहां फहरा रहे थे अंग्रेजी राज्य के यूनियन जंक और एक छोटे-से पुल के बाद लाल चीन की सीमा पर लाल चीन के लाल झंडे। दोनों ओर इन झंडों की जितनी अधिकता थी उतनी हमें इस दौरे में किन्हीं झंडों की न मिली थी। केवल नियाग्रा नदी के पुल पर कैनेडा और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सीमा पर कैनेडा और अमेरिका के झंडे [illegible] वहां चिह्-

सब एक-एक ही झंडा लगाया गया था । इसका कारण कदाचित् इस स्थल का ऐसे स्थान पर होना था जहां दो राज्यों की सीमा लगती है। इन झण्डों की बहुतायत के सिवा लाल चीन की सीमा में पैर रखते ही जिन दो चीजों ने हमारा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया वे थीं रूस के सर्वेसर्वा स्तालिन और चीन के सर्वेसर्वा माओ-त्सेतुग के चित्र तथा चीन की सरकार के कार्यों का हर प्रकार का लगातार प्रचार करने वाला रेडियो । लाल चीन की सीमा में प्रवेश करने के बाद से लाल चीन छोड़ने तक ये दो चीजें तो हर जगह अनेक रूपों में हमें दृष्टिगोचर होती रहीं ।

लाल चीन की इस सीमा से चीनी रेल लगभग दो बजे जाती थी। चीन की हमारी सारी यात्रा अब रेल से होने वाली थी । यहां से चलकर लाल चीन के जिस प्रथम स्थान पर हम ठहरने वाले थे उसका नाम था कैंण्टोन । इस स्थान से कैण्टोन पहुंचने में लगभग चार घण्टे लगते थे ।

भोजन कर दो बजे हम कैण्टोन के लिए रवाना हो गए ।

चीन

जब हमने चीन के मुख्य भू-भाग में प्रवेश किया तब मेरे मन में जैसी उत्सुकता थी वैसी इस विश्व-भ्रमण में अब तक कहीं भी नहीं रही थी ।

इसका प्रधान कारण था इस प्राचीनतम देश में एक नवीनतम प्रयोग का होना । अब तक हम जिन देशों को गए थे उनकी राज-नैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था थोड़े-बहुत हेर-फेर के साथ वैसी ही है जैसी हमारे देश की । लगभग सौ वर्षों से जो पूंजीवाद संसार के सभी देशों की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किए हुए है उसको उखाड़ फेंकने का जो देश प्रयत्न

कर रहे हैं उनमें चीन का एक मुख्य स्थान है। यद्यपि चीन के आधुनिक नेताओं का यह दावा नहीं है कि चीन का जीवन साम्यवादी जीवन हो गया है तथापि वहां के शासन में साम्यवादियों का नेतृत्व है और चीन को वे उसी दिशा में ले जा रहे हैं। हमारे देश के कुछ प्रतिनिधि-मंडल इन्हीं दिनों चीन आए थे और इन मंडलों के कुछ प्रतिनिधियों ने चीन में जो कुछ हो रहा है, उसके सम्बन्ध में अपनी अपनी सम्मतियां दी थीं; कुछ ने पक्ष में, कुछ ने विपक्ष में। इन प्रतिनिधियों में से कुछ के भाषण मैंने सुने थे और कुछ के विचार पत्रों में पढ़े थे। मेरे मन में बड़ी उत्सुकता रही थी चीन के इस नवीन प्रयोग को स्वयं देखने की। यद्यपि रूस में यह प्रयोग बहुत समय से चल रहा है और वहां जो लोग गए थे या कुछ साल तक रह आए थे, उन्होंने वहां की सफलता तथा विफलता के सम्बन्ध में भी अनेक बातें कही थीं, जिन्हें सुनकर या पढ़कर मेरी वहां जाने की भी बड़ी इच्छा थी और अभी भी है तथापि रूस की अपेक्षा भी चीन के सम्बन्ध में यह इच्छा कहीं अधिक प्रबल थी। इसका प्रधान कारण था हमारे देश का और चीन का बहुत पुराना सांस्कृतिक सम्बन्ध। साम्यवाद के सिद्धान्तों से मैं पूर्णतया सहमत नहीं हूं। इसके प्रधान कारण दो हैं—साम्यवाद सर्वथा भौतिकवाद है अतः मैं उसे इकंगावाद मानता हूं। मानव को किसी भी प्रकार के केवल भौतिकवाद से सन्तोष नहीं हो सकता, यह मेरा मत है। दूसरे, साम्यवाद व्यक्तिगत स्वातंत्र्य का लोप कर देता है। पर साम्यवादी न होते हुए भी मैं मानता हूं कि पूंजीवाद ने, उसके पूर्व के सामन्तवाद आदि के सदृश, अधिकतर लोगों को दुखी ही रख छोड़ा है, अतः समाज की वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक है। यद्यपि मैं अभी अमेरिका देखकर लौटा था और मैंने वहां देखा था कि पूंजीवादी व्यवस्था में भी वहां दुखियों की संख्या बहुत कम है तथापि अमेरिका के समान अन्य कोई पूंजीवादी देश नहीं, यह भी मैं देख

सात्विक सम्बन्ध रहा है, ऐसा जो देश पूंजीवाद से पिंड छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा है, मात्र मैं उसी देश को देखूंगा, मेरी इस समय की उत्सुकता का यह प्रधान कारण था। अन्य देशों को जाते समय वहां के प्राकृतिक दृश्य और दर्शनीय स्थानों को देखने की मेरी जैसी उत्सुकता रहती थी उससे चीन देखने की उत्सुकता सर्वथा भिन्न थी।

चीन की मुख्य भूमि में प्रवेश करने के दिन से उसे छोड़ने तक हम लोग सोलह दिन और पन्द्रह रात चीन में रहे। इन सोलह दिनों में आठ दिन और पन्द्रह रातों में छः रातें हमारी रेल में बीतीं, शेष समय हमने बिताया कैण्टोन, शंघाई, पीकिंग और हैंको नगरों तथा इनके आसपास के कस्बों-गावों आदि में। परन्तु चूंकि हमारी यह सारी यात्रा रेल में हुई और इस यात्रा में दक्षिण से उत्तर तथा उत्तर से दक्षिण हमने चीन देश के अनेकों मीलों के भू-भाग को नापा इसलिए रेल के डब्बों की खिड़कियों से भी हमने चीन के कितने नगर, कस्बे, गांव, वहां की भूमि, नदियां, पहाड़ और मैदान, बस्तियां और खेत तथा वहां का हर प्रकार का जीवन देखा। हमें इस बात पर बड़ा खेद हुआ था कि रेल की इस यात्रा के कारण हमारा बहुत-सा समय यात्रा में ही लग जाएगा और जो कुछ हम वहां देख सकेंगे वह बहुत थोड़ा होगा, परन्तु आज मुझे इस बात पर हर्ष है कि हमारी यह यात्रा रेल से हुई। रेल की इस यात्रा के कारण हम जो कुछ देख सके वह हवाई यात्रा से सम्भव न था। फिर जिस दृष्टि से हम यह देश देखना चाहते थे वह स्पष्ट होने के कारण चलती हुई रेल से, स्टेशनों से, जहां-जहां हम ठहरे और जिन-जिन स्थानों को हम गए उन सबके नाना प्रकार के दृश्यों, एवं जिन-जिनसे हम मिले उनके वार्तालापों तथा जो साहित्य हमने वहां इकट्ठा किया उससे, इतने थोड़े समय में भी हम वर्तमान चीन का थोड़ा-बहुत अध्ययन करने में शायद सफल हो सके हैं। यों तो किसी देश के सांगोपांग अध्ययन के लिए हफ्तों, महीनों ही नहीं, वर्षों की आवश्यकता होती है, फिर चीन के सदृश विशाल देश के लिए तो युगों की। पर घूमते-फिरते यात्रियों की अपनी

एक दृष्टि होती है। यह दृष्टि खींचती है मन पर कुछ घुमती-फिरती रेखाएं जो मिलजुलकर एक चित्र-सा बना देती हैं। हमारे चीन के चित्र की ये रेखाएं विविध प्रकार की थीं, क्योंकि घूमते-फिरते यात्री होने पर भी हम चीन को एक विशिष्ट प्रकार से देखना चाहते थे और इसीलिए हमने इतने थोड़े समय में भी केवल दर्शनीय स्थान ही नहीं, पर वहां के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली विविध प्रकार की वस्तुओं को देखने का प्रयत्न किया तथा वहां के अनेक फिरकों के जिम्मेदार व्यक्तियों से मिल अनेक समस्याओं पर चर्चा करने एवं वहां के नाना प्रकार के साहित्य को इकट्ठा कर उसका अध्ययन करने का। फिर हम एक न होकर तीन थे, साथ ही साइनो-इंडियन फ्रेंडशिप एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने हमारे इस प्रयत्न में हमें हर तरह की पूरी सहायता प्रदान की इसीलिए हमारे इस प्रयत्न में हमें कई सहूलियतें मिल गईं।

हमने चीन में जो कुछ देखा उसमें से दर्शनीय स्थानों एवं नाटक, नृत्य आदि सांस्कृतिक प्रदर्शनों की बात तो बाद में करेंगे, पहले चीन में जो एक नवीन प्रयोग हो रहा है और जिस प्रयोग को देखने की ही मेरी सबसे अधिक उत्सुकता थी उसीकी मैं कुछ चर्चा कर लूं। इसके लिए मैंने कुछ सरकारी और गैरसरकारी कारखाने देखे। मजदूरों की बस्तियां देखीं। गांव, वहां की खेती और वहां के लोगों का रहन-सहन देखा। कुछ लोगों से मुलाकातें कर कुछ विषयों पर चर्चा की और कुछ साहित्य इकट्ठा किया। इस सब निरीक्षण से वहां के इस नवीन प्रयोग के विषय में हमारा जो मत बना उसीका संक्षेप में एक मोटे रूप में मैं यहां एक निचोड़-सा रख रहा हूं। पर इस निचोड़ को रखने के पूर्व मैं इतना अवश्य कह देना चाहता हूं कि चीन के निरीक्षण के उपर्युक्त सारे साधनों के जुटाने पर, इस निरीक्षण के सारे प्रयत्न करने पर और यह मानने पर भी कि हम अपने निरीक्षण में कुछ दूर तक शायद सफल हो सके हैं, हमारा चीन के

कारण यह है कि वहां उन तीन वर्षों में जो कुछ किया गया था उसके विषय में वहां के जिन लोगों से हम मिले उनकी राय में इतनी विभिन्नता थी तथा जो शासन इस समय वहां चल रहा था उसमें इतनी बातें गुप्त रखी जाती थीं, यहां तक कि वहां का वार्षिक बजट तक प्रकाशित नहीं होता, कि किसी भी बारीक से बारीक और स्पष्ट दृष्टि रखने वाले निरीक्षक का भी यह कह सकना कि उसका मत ठीक है, मैं कठिन ही नहीं असम्भव मानता हूं। मेरी यह राय उन लोगों के सम्बन्ध में भी है जो दीर्घकाल तक वहां रहे हों, यहां तक कि उन दूतावासों के सम्बन्ध में भी, जो सदा वहां रहते हैं और उनका काम हर प्रकार से हर बात का पता लगाते रहना रहता है।

नये चीन को लाल चीन कहना यथार्थ में उपयुक्त नहीं है। इस समय का चीन साम्यवादी नहीं कहा जा सकता और चीन ही क्या रूस तथा पूर्वी यूरोप के चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, बलगेरिया आदि देश जो साम्यवादी कहे जाते हैं, यथार्थ में साम्यवादी नहीं हो पाए हैं। सच्चे साम्यवाद में व्यक्तिगत सम्पत्ति का कोई स्थान नहीं है। इन सब देशों में, यहां तक कि रूस में भी, व्यक्तिगत सम्पत्ति मौजूद है; चीन में तो बहुत बड़े परिमाण में। चीन में चाहे जमीन का पुनर्विभाजन हो गया हो, पर अभी भी सारी जमीन व्यक्तिगत सम्पत्ति ही है। कहीं-कहीं सहकारी (कोआपरेटिव) और सामूहिक (कलेक्टिव) फार्मों की स्थापना के प्रयत्न हुए हैं, पर सुना गया है कि ये सफल नहीं हो रहे हैं। कहीं-कहीं सरकारी फार्म स्थापित हुए हैं, पर इन्हें स्थापित हुए अभी इतना कम समय बीता था कि इनकी सफलता के सम्बन्ध में कुछ भी कहना उपयुक्त न होगा। चीन में उद्योग-धन्धे कम थे और उनमें अधिकतर व्यक्तिगत सम्पत्ति ही थी। कुछ बड़े-बड़े कारखानों का राष्ट्रीयकरण हुआ था, पर इनकी संख्या बहुत कम थी। चीन का व्यापार सरकार के हाथ में आया था, पर व्यक्तियों के हाथ में भी था। साम्यवाद का दूसरा सिद्धान्त है कि हर आदमी अपनी शक्ति के अनुसार उत्पादन करे और अपनी आवश्यकता

अनुसार बाटा । इस सिद्धान्त के तो निकट भी कोई देश नहीं ब
। है । चीन में तो इसकी चर्चा तक सुनाई नहीं दी । एक व्यक्ति
आमदनी में दूसरे की आमदनी में बहुत बड़ा अन्तर सभी मान्य
ति कहे जाने वाले देशों में है, रूस में भी ; चीन में एक बड़े परिमाण
। फिर भी यह बात माननी होगी कि पूंजीवादी देशों की अपे
र का यह अन्तर चीन में कम था । अमेरिका आज के संसार
में बड़ा पूंजीवादी देश है, और अन्य अधिकांश पूंजीवादी देशों
वाद बहुत दूर तक जो बुरा समझ केवल सहनीय माना जा
ऐसा अमेरिका में नहीं, अमरिका ने तो पूंजीवादी सिद्धान्त
है, यह माना जाता है। अमेरिका में एक व्यक्ति की आमदनी
की आमदनी में जितना अन्तर है, उतना कदाचित् कहीं नहीं
उतने पर भी वहां जिनकी आमदनी सबसे कम है उनमें तो हं
शोष न दिखाई दिया ; ऐसे लोग भी पूंजीवाद बुरा है और साम्यवाद
आवश्यकता है, यह कहते हुए नहीं सुने गए । इसका कारण
वन् यह है कि वहां की न्यूनतम आय भी इतनी अधिक है जितनी
देशों में अधिकांश की अधिकतम आय । यहां मैं चीन का ही
रण दूंगा । चीन में अधिक लोगों की राय में उच्च से उच्च
री कर्मचारी को हमारे रुपयों में ६४०) मासिक वेतन मिलता
चीन जनराज्य के प्रधान माओत्सेतुंग का वेतन कोई ७००) रुपये।
कुछ लोगों की राय है कि यह ऊंचे से ऊंचा वेतन चार हजार
महीना भी है । ठीक बात क्या है इसका पक्का पता इसलिए
लता कि जैसा ऊपर कहा गया है कि चीन का बजट ही किसी
। नहीं । अमेरिका में एक घण्टे की मजदूरी की निरख कम से
र रुपये के लगभग (पचहत्तर सेंट) कानून से नियुक्त है, यद्यपि
इससे कहीं अधिक है । पर यदि हम कानून द्वारा निश्चित
कम मजदूरी भी ले लें तो अमेरिका में आठ घण्टे के काम की
बत्तीस रुपये हुए । हफ्ते में दो दिन की वहां छुट्टी होती है

वे उच्च सरकारी कर्मचारी के वेतन की बात कही गई है। जिनके उद्योग-धन्धे और व्यापार हैं उनकी आय शायद इससे अधिक है और मजदूरों की बहुत कम। सुना गया कि मजदूरों की कम से कम मजदूरी एक रुपया रोज तक भी था। पर अमेरिका के लोगों की आमदनी और चीन के लोगों की आमदनी का कोई मिलान नहीं किया जा सकता। यथार्थ में अमेरिका के लोगों की आय से तो संसार के किसी भी देश के लोगों की आय का मुकाबला नहीं। अमेरिका में एक व्यक्ति की आमदनी से दूसरे की आमदनी में बहुत अधिक अन्तर होने पर भी जिनकी आमदनी कम से कम है उन्हें भी इतना अधिक मिलता है कि उन्हें असन्तोष नहीं। पर जहां लोग भूखों मरते हों वहां यदि एक व्यक्ति की आय से दूसरे की आय में बहुत अधिक अन्तर हो तो कम आय वाले को असन्तोष ही नहीं ईर्ष्या होती है, जलन होती है और इसका अन्तिम परिणाम निकलता है क्रान्ति। संसार के किसी भी देश में साम्यवाद के मुख्य सिद्धान्त के अनुसार चाहे हर आदमी अपनी शक्ति के अनुसार उत्पादन कर अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त न करता हो, चाहे एक व्यक्ति की आमदनी से दूसरे व्यक्ति की आमदनी में काफी अन्तर भी हो, पर साम्यवादी कहे जाने वाले देशों में इस अन्तर को घटाने का प्रयत्न अवश्य किया गया है, चीन में भी यह हुआ है और इसलिए निर्धनता रहते हुए भी वहां के लोगों के पुराने असन्तोष की मात्रा अवश्य घटी है।

इस प्रकार साम्यवाद के उपर्युक्त दोनों मुख्य सिद्धान्तों के अनुसार संसार का कोई भी देश पूर्णतया साम्यवादी नहीं कहा जा सकता, चीन तो सर्वथा नहीं, और इसलिए चीन का शासन जिनके हाथ में है वे भी चीन को साम्यवादी न कह केवल इतना ही कहते हैं कि चीन का शासन साम्यवादियों के नेतृत्व में है, और इस नेतृत्व का ध्येय चीन में साम्यवाद की स्थापना है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या चीन इस ध्येय की ओर बढ़ रहा है? इसका उत्तर देना सरल नहीं है।

हो जाने वाला है, और आज जो लोगों को ग्यारह-ग्यारह, बारह-बारह घण्टे काम करना पड़ रहा है उसके परिणाम में उन्हें भविष्य में कैसा आराम मिलने वाला है, इसे लोगों को नाना प्रकार से समझाया जाता था।

चीन ठंडा देश होने के कारण वहां के निवासियों का रंग गौर है। रंग में पीली-सी झाई है। कद बहुत ऊंचा नहीं, पर जापानियों के सदृश ठिगना भी नहीं। वहां के और जापान के लोग एक ही जाति के होने पर भी जापानी महिलाओं के सदृश यहां की स्त्रियों में सौन्दर्य नहीं है।

चीन इतना बड़ा देश है और उसकी संस्कृति इतनी प्राचीन है, इसलिए विभिन्न जातियों का वहां होना स्वाभाविक ही है, किन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि इस विविधता में गहरी एकरूपता है। चीन के लोग अधिकांश मंगोल जाति के हैं यद्यपि महान् दीवार के पार से आकर आक्रमणकारी वहां बसे और वहीं के लोगों में घुल-मिल गए। यागसी नदी के मैदान के उत्तरी और दक्षिणी भाग के निवासियों की आकृति आदि में अन्तर पाया जाता है, किन्तु इस अन्तर के कारण भी उनकी मूल समानता अक्षुण्ण है। उत्तरी भाग के चीनियों का कद कुछ बड़ा होता है और जगह-जगह उनका रंग भी अधिक गोरा होता है। दक्षिणी भाग के लोगों को देखने से पता चलता है कि भिन्न-भिन्न कबीलों के लोग जिस तरह उत्तरी भाग में घुल-मिल गए हैं वैसे दक्षिणी भाग में नहीं। किन्तु चीन की एक ही लिखित भाषा होने के नाते उनकी एकता अधिक बनी रह सकी है।

अत्यन्त प्राचीन काल में चीनी अपने पूर्वजों और प्रकृति के उपासक थे। भारत की ही तरह चीन में भी अनेक देवी-देवताओं में आस्था की जाती थी। प्रकृति की उपासना भी की जाती थी। दैवी और मानवीय में विशेष अन्तर नहीं किया जाता था। मृत्यु को प्राप्त होने वाले पूर्वजों की गणना भी देवी-देवताओं में होने लगती थी।

चीन की वर्तमान संस्कृति में प्राचीनता के प्रभाव का सर्वथा लोप

जाने लगी। अनुमान है कि चीन में २,६३,००० से अधिक बौद्ध-विहार और ७,१८,००० से अधिक बौद्धभिक्षु और भिक्षुणियां होंगी। ऐसे बौद्धधर्म में विश्वास रखने वालों की तो गणना ही नहीं बताई जा सकती। युद्धकाल में चीनी बौद्धों ने घायलों की परिचर्या का महान कार्य किया। लड़ाई की भराई में और भूमि पर बमवर्षा होने पर वे लोग घायलों को स्ट्रेचर पर लिटाकर सुरक्षित स्थानों को पहुंचाते थे।

इसके पश्चात् ईसाई धर्म और इस्लाम के भी यहां के कुछ लोग अनुयायी हुए।

परन्तु ताओइज्म, कन्फ्यूशियस का दर्शन, बौद्धधर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम-किन्हीं धर्मावलम्बियों में वहां किसी प्रकार का झगड़ा नहीं रहा। एक ही कुटुम्ब में भिन्न-भिन्न धर्म मानने वाले रहे और अभी भी हैं।

धर्म का प्रभाव वहां बहुत कम होता जा रहा था, यद्यपि सभी धर्मों के अनुयायी अभी भी वहां हैं। आज भी चीन में बौद्धधर्म का ही सबसे अधिक प्रभाव है। बौद्धमन्दिर, पगोडा यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते हैं। भगवान बुद्ध के जन्म-दिवस को इन सभी मन्दिरों में, विशेष-कर देहात के मन्दिरों में, दर्शनार्थ बड़ी भीड़ होती है।

इतने बड़े चीन की भाषा एक है। यह इस देश की संस्कृति की *इससे बड़ी विशेषता है। हां, इस भाषा के उच्चारण में स्थान-स्थान* पर विभिन्नता अवश्य है। चीन की यह भाषा तीन लिपियों में लिखी जाती है। चीनी लिपि, मंगोलियन लिपि और तिब्बती लिपि, सबसे अधिक प्राचीन लिपि चीनी लिपि है और इसीका सबसे अधिक प्रचार भी है। चीनी भाषा संसार के जितने अधिक लोगों की मातृ-भाषा है उतनी अन्य कोई भाषा नहीं। भौगोलिक दृष्टि से कदाचित् अंग्रेजी, फ्रेंच और रूसी भाषा का अधिक प्रचार है, लेकिन इनमें से कोई भी भाषा इतने बड़े जनसमूह की मातृभाषा हो ऐसा नहीं है।

इतने विशाल भू-भाग की भाषा होने के कारण उनकी अनेक ब
हैं। चीनी भाषा के प्रसार कुछ असाधारण होते हैं और ऊपर
की ओर लिखे जाते हैं। इनमें से कुछ तो चित्र और संकेत-मा
हैं। जापान और चीन की लिपियें मिलती-जुलती हैं।

चीन की इस काल की वेषभूषा में प्राचीनता और नवीनत
मिश्रण था। पुराने चीनी पुरुष ऊपर के अंग पर लम्बी कोट के
वस्तु और नीचे के अंग पर पाजामे के समान चीज पहनते थे। वि
ऊपर से नीचे तक एक घेरदार पोशाक। पुरुषों का पुराना कोट
हो गया है और पाजामे की जगह पतलून आ गई है, पर वहि
नेकटाई, हैट आदि नहीं। स्त्रियों की पोशाक भी पुरुषों के समान
गई है और सबकी पोशाक प्रायः नीले रंग की है; कुछ लोग गहरा न
रंग पसन्द करते हैं, कुछ हल्का। पोशाक में यत्र-तत्र काला और स
रंग भी दिख पड़ता है। देहात में स्त्रियों की पोशाक प्रायः काले
की रहती है। वे चारों ओर झालर-सी लगी हुई लम्बेदार क
टोपी भी पहनती हैं। एक रंग की ऐसी पुरुष-स्त्रियों की एक
पोशाक मैंने दुनिया के किसी देश में नहीं देखी। इस नीले रंग
पोशाक देख मेरी इच्छा तो चीन को लाल चीन न कहकर नीला चं
कहने की होती है। हम जाड़े के मौसम में वहां गए थे। उस स
वहां के लोग रूई-भरे कपड़े पहनते थे।

लाल चीन की हद में प्रवेश करने पर हमने चारों ओर के प्राकृति
दृश्य को देखा तब हमें ऐसा जान पड़ा जैसे हम भारत के उत्तर प्रदेश
बिहार, महाकोशल आदि राज्यों में हों। हांगकांग यदि बम्बई
मिलता-जुलता है तो चीन की मुख्य भूमि उपर्युक्त प्रदेशों से। ची
के प्राकृतिक दृश्यों से भारत के प्राकृतिक दृश्यों का हमें जितना साम
दिखाई दिया उतना संसार के कहीं के प्राकृतिक दृश्यों से नहीं। फि
हमें यहां की भूमि, उसके धान के खेत, खलिहानों में धान की इकट्ठ
की हुई फसलें, पियार और घास की गंजियां, गांव, उनके खपरैल
और फूस की छावनी वाले छोटे-छोटे मकान, उनमें कहीं-कहीं खड़े

की पुरानी कथाएं कविता में खेली जाती हैं। भाषा न समझते हुए हमें यह प्रदर्शन बहुत पसंद आया। श्री टाई नानक एक चीनी सज्जन जो इस विषय में दक्ष हैं, हमें भाषा आदि समझाने के लिए हमारे साथ गए थे।

तारीख ३० के प्रातःकाल हम सबसे पहले उस पार्क को देखने गए जहां पहले शंघाई का प्रसिद्ध जुआघर घुड़दौड़ के साथ बना था। अब यह स्थान हो गया था जनता के आमोद-प्रमोद के लिए घूमने-फिरने का स्थान। यहां एक छोटा-सा अजायबघर भी था। वहां से हम शंघाई के एक टेक्सटाइल मिल देखने गए। यह भी सरकारी मिल थी। इसे हमें दिखाया इस मिल के डायरेक्टर श्री चैंग मिन और वाइस डाइरेक्टर श्री टाइकाऊ डाउ ने। दुभाषिये का काम फिर श्री ... वी ने किया। जिस मिल को देखने हम लोग गए थे वह नई सरकार द्वारा संचालित कारखानों में कदाचित् एक विशेष स्थान रखती थी इसीलिए हम लोगों को वहां खास तौर पर ले जाया गया था। चीन के बड़ी से बड़ी कपड़े की मिलों में यह मिल एक है।

अपराह्न में हम गए पहले चीन के आधुनिक प्रगतिवादी महान साहित्यकार लुशून की यादगार देखने। यह यादगार चीन की सरकार ने उस मकान को लेकर बनाई है जहां लुशून महोदय रहते थे। लुशून के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले सारे चित्र, उनका सब प्रकार का सामान, उनके ग्रन्थों आदि की उनकी हस्तलिखित प्रतियां, उनका सारा छपा हुआ साहित्य तथा उसके अंग्रेजी आदि भाषाओं में छपे हुए अनुवाद यहां संग्रहीत हैं। मकान बहुत बड़ा नहीं, पर यह संग्रह हृदयग्राही है। काश! हमारे साहित्यकारों के भी हमारी राष्ट्रीय सरकार इस प्रकार के स्मारक बना सके, बार-बार मेरे मन में ये भावनाएं उठने लगीं। लुशून महोदय का नये चीन में वही स्थान है जो रूस में गोर्की का, वरन् ये चीन के गोर्की कहे ही जाते हैं। मैं श्री लुशून का नाम ही जानता था बल्कि अंग्रेजी के द्वारा उनके साहित्य का रसास्वादन ...र चुका था। चीन के इस अमर मानव को परम श्रद्धा और भक्ति

। प्रणाम कर हम यहां से एक बौद्धमन्दिर को पहुंचे। इस बौद्ध-मन्दिर का नाम है नू फू योह। अत्यन्त विशाल और भव्य मन्दिर था वैसी ही भगवान बुद्ध एवं उनके समीपवर्तियों की मूर्तियां।

शघाई से तारीख १ दिसम्बर को १२ बजे दिन को हम पीकिंग के लिए रवाना हो गए।

जिस दिन हम पीकिंग के लिए विदा हुए उस दिन दिन-भर और रात-भर कोई नई बात न हुई। पर दूसरे दिन प्रातःकाल जब हमने खिड़की के बाहर देखा तब हमने सारे प्राकृतिक दृश्य को एकदम सफेद रंग का पाया; पर्वत, भूमि, वृक्ष, नदी, नाले, सरोवर, पोखरे, घर, सब श्वेत वर्ण के थे। नदी-नालों, सरोवर-पोखरों सबका पानी जम गया था और जान पड़ता था जैसे उन स्थलों पर बड़ी-बड़ी स्फटिक की नाना रूपों वाली लम्बी, चौकोर, गोल चट्टानें रखी हों। वृक्षों की टहनियों से यह सफेदी नीचे की ओर वृक्षों के डण्ठलों-सी दिखाई देती थी। मीलों तक भूमि पर शुभ्र रंग की चादर बिछ गई थी और उस चादर पर उसी रंग के कहीं छोटे-मोटे टीले और कहीं बड़े-बड़े ऐसे बैठे से जीव जान पड़ते थे जिनके सारे अवयव चादर से ढके हुए हों और जो किसी प्रकार की समाधि में स्थित रहने के कारण हिलते-डुलते भी नहीं हों। घरों के सफेद छप्परों को देख मुझे सन् २१ की अहमदाबाद कांग्रेस का खादी नगर याद आया, जिसमें प्रतिनिधियों आदि के ठहरने की झोपड़ियों को श्वेत खादी से ही आच्छादित किया गया था। मालूम हुआ कि रात को जोर की हिम-वृष्टि हुई है और बरफ इस समय सर्वत्र जमी हुई है। थोड़ी ही देर में उदय होते हुए सूर्य की लाल आभा ने इस सारे श्वेत रंग पर यत्र-तत्र गुलाल-सी उड़ा दी। थोड़ी ही देर में इस लाल गुलाल ने सुवर्ण का रंग ले लिया और इसके थोड़ी ही देर बाद ऐसा जान पड़ा जैसे उस सोने पर ढेर के ढेर हीरे जड़ दिए गए हैं तथा इस जड़ाई के कारण पीला सोना चमकीले हीरों से ढक गया है। कभी-कभी चमकीले हीरों में कहीं-कहीं रवि-रश्मियां इन्द्र-धनुष वाले रंग दे देतीं और उस समय

टूट-फूट गया था। इस समय इसकी मरम्मत की जा रही थी। मरम्मत के इस काम के लिए चीन की वर्तमान सरकार ने १०·४ मिलियन युवान दिए हैं। तिब्बत के साथ ही चीन के अन्य विभागों में भी लामा मन्दिर हैं। लामा भी यहां अनेक रहते हैं। पीकिंग की म्यूनिस्पैलिटी और जिला बोर्ड में भी एक-एक लामा नामजद थे।

आज रात को हमारे सम्मान में साइनो-इंडिया फ्रेण्डशिप एसोसिएशन ने एक भारी भोज दिया था। इस भोज में पीकिंग के हर क्षेत्र के लोग निमन्त्रित थे। यहां हमें सर्वप्रथम इस एसोसिएशन के सभापति श्री टिंग सी लिंग मिले।

तारीख ४ को प्रातःकाल १० बजे हम संसार की सात आश्चर्य-जनक वस्तुओं में से एक चीन की महान् भित्ति को देखने मोटरों पर रवाना हुए। हमें चीन वालों ने कहा कि वहां ठण्ड बहुत अधिक होगी, अतः हमने अधिक से अधिक कपड़े पहने। मैंने तो आज जितने कपड़े पहने उतने जीवन में कभी न पहने थे। पीकिंग से चीन की यह महान भित्ति लगभग ६० मील दूर पड़ती है। मार्ग में हमें कई गांव, कस्बे आदि मिले जिन्हें हमने कहीं-कहीं मोटर से उतरकर भी खूब ध्यान से देखा। रास्ते में ही हमें इस जिले का चैंगपिंग नामक एक छोटा-सा नगर भी मिला। इस क्षेत्र के लोग बड़ी गरीबी में रहते थे और अत्यधिक सर्दी के कारण भेड़ों के बालदार चमड़े की पोशाक पहने थे। भित्ति बहुत दूर से दिखने लगती है, पर भित्ति पर चढ़ना होता है पाइटलिंग नामक पहाड़ी दर्रे को पार कर। इस भित्ति की बनावट भारत के किलों की पहार-दीवारी के सदृश है। भित्ति की बनावट में हमें कोई नई बात न दिखी। इसकी विशेषता है इसकी लम्बाई। यह भित्ति ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी के मध्य में सम्राट श्री हुआंगटी ने बनवाई थी, जिन्होंने कि चीन में प्रथम साम्राज्य की स्थापना की थी। पूर्व से पश्चिम तक यह भित्ति एक हज़ार चार सौ मील लम्बी है और पर्वत प्रदेश व मैदानों में होकर गई है। औसतन इसकी ऊंचाई २२ फुट है, किन्तु स्थान-स्थान पर बुर्ज बने हुए हैं

यहां का वायुमण्डल न था। चीन की अजीब चीजों के संग्रह के कारण यह सच्चा अजायबघर जान पड़ता था। इसे देख मन में उत्पत्ति होती थी अद्भुत रस की।

अपराह्न में हम चीन का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय पीकिंग यूनिवर्सिटी देखने गए। यूनिवर्सिटी के उपसभापति और डीन महोदय ने हमारा स्वागत किया। यहां हम भारत से आए हुए हिन्दी भाषा के अध्यापक प्रोफेसर जैन और उनकी पुत्री सुश्री श्रीचक्रेश से भी मिले। चीन के पाठ्यक्रम आदि के सम्बन्ध में हमें यहां अनेक जानकारियां प्राप्त हुईं। नये शिक्षा-अधिकारियों ने पुरानी पाठ्यपुस्तकों के स्थान पर नई पाठ्यपुस्तकें लागू की हैं। इनका प्रमुख उद्देश्य बालकों में मातृभूमि और साम्यवाद के प्रति गहरी श्रद्धा और अनुराग उत्पन्न करना है। विद्यार्थियों को क्रान्ति विषयक विचारों की शिक्षा दी जाती है। भारत की शिक्षा-प्रणाली से यहां की शिक्षा-प्रणाली एकदम भिन्न प्रतीत होती है। शिक्षकों और विद्यार्थियों में जैसा उत्साह पाया जाता है उसका भारतीय स्कूलों में प्रायः अभाव रहता है। इन लोगों में कर्तव्य-भावना बहुत गहरी जमी मालूम होती है। उनके मन में यह प्रेरणा काम करती जान पड़ती है कि हमें कुछ करना है। विद्यार्थियों और शिक्षकों का सम्बन्ध बड़ा निकट का और सरस होता है। दोनों ही एक-दूसरे में और अपने-अपने काम में दिलचस्पी लेते हैं। देश के सबसे बड़े नेता माओत्सेतुंग के प्रति उनमें बड़ा आदर-भाव था। यहां के मिडिल स्कूल भारत के हाई स्कूल अथवा हायर सेकेण्डरी स्कूल जैसे ही होते हैं। पहली तीन कक्षाएं निम्न मिडिल और बाद की तीन कक्षाएं उच्च मिडिल कहलाती हैं। इन कक्षाओं के लिए विद्यार्थी को ६ महीने के लिए फीस मुद्रा के अनुसार नौ-दस रुपये देनी होती है। भारत में ... के लिए लगभग इतनी फीस एक महीने में ली जाती ... देखा कि विद्यार्थियों में से कोई बीस प्रतिशत किसान- ... के होंगे और कोई छप्पन प्रतिशत मजदूर परिवारों के।

हैं, जिन्हें देखने में सारा दिन लग जाता है किन्तु फिर भी उनके साथ पूरा न्याय नहीं कर पाता। यहां की कई इमारतें ११
ई० तक की हैं। १९२४ में इसका प्रबन्ध पीकिंग म्युनिसिपैलिटि
सम्भाल लिया और तब से यह उसीके अधीन था। लड़ाई के दिन
कई बार यहां की इमारतें काफी नष्ट हो चुकी थीं, पर अब उ
मरम्मत कर दी गई है।

तारीख ६ दिसम्बर पीकिंग में हमारी अन्तिम तारीख थी।

आज प्रातःकाल हमने पाह ही नामक यहां की नर्सरी देखें
सुना कि इस प्रकार की अनेक नर्सरी चीन के बच्चों के लिए
हैं। इनकी एक सौ अस्सी संख्या तो पीकिंग और पीकिंग के आस
ही बताई जाती है, जो तीन वर्षों के समय में बन जाना कम से
हमें कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण जान पड़ा। जो कुछ हो, पाह ही नर्स
सचमुच बड़ी सुन्दर थी, बच्चे खूब तन्दुरुस्त और प्रफुल्लित थे।
नर्सरी में छोटे बच्चों का अच्छे वातावरण में लालन-पालन क
की बहुत अच्छी व्यवस्था करने का प्रयत्न किया गया था। छोटे बच्
के सोने के लिए अच्छे पलंगों की व्यवस्था थी। उन्हें सभी का
स्वयं करने का शिक्षण प्रारम्भ से ही दिया जाता है। भोजन कर
के लिए उनकी छोटी-छोटी विशेष प्रकार की टेबिल और कुर्सियां ह
लोग कभी न भूलेंगे। विशेष प्रकार के खाने के बर्तनों की भी व्यवस्
उनके लिए की गई थी। उन्हें खेल-खेल में ही कुछ महत्वपूर्ण
बातें सिखाने का विशेष इन्तजाम था।

इसके पश्चात् हमने यहां की 'फ्यूशिन' नामक एक मंडा मिल
देखी जो सरकारी न होकर एक व्यक्तिगत सम्पत्ति थी।

रात को हम पीकिंग ऑपेरा देखने गए।

तारीख ७ को प्रातःकाल हमने पीकिंग छोड़ दिया। स्टेशन पर
हमें बड़ी शानदार विदाई दी गई।

तारीख ७ को पीकिंग से रवाना होकर तारीख ८ को २ बजे
दिन को हम हैंको पहुंचे। यहां हमारी गाड़ी बदलती और हमें चार

घण्टे का समय चीन का यह नगर देखने को भी मिलता था। हैंगो स्टेशन पर हमारे स्वागत के लिए अनेक प्रतिष्ठित चीनी सरकारी कर्मचारी और दो भारतीय विद्यार्थी मौजूद थे। ये दोनों वर्षों से चीन में रहते थे। इन्हें हमारे आने की सूचना पीकिंग के भारतीय दूतावास ने दी थी।

इसके बाद हम गए हैंको देखने के लिए। हैंको भी चीन के अन्य शहरों के समान ही एक शहर है।

लगभग ६ बजे सन्ध्या को हमारी ट्रेन हैंको से कैण्टोन के लिए रवाना हो गई। कैण्टोन हम पहुंचे तारीख ६ की रात को १० बजे। रात-भर कैण्टोन मे ठहर तारीख १० को प्रातःकाल ६ बजे हम कैण्टोन से चीन की सीमा के लिम सांम स्थान को रवाना हुए। यह रास्ता चार घण्टे का था। हमारी ट्रेन चीन की सीमा पर पहुंची थी लगभग १२॥ बजे और ब्रिटिश सीमा से हागकाग हमारी ट्रेन जाती थी ढाई बजे।

पीकिंग से इस सीमा तक की हमारी यात्रा २,४५० किलोमीटर की थी।

जिस समय हम १६५२ में चीन गए, उस समय चीन और भारत का बड़ा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध था। यह सम्बन्ध कोई नया नहीं था। दो हजार वर्ष के ऊपर से यह मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध चला आ रहा था। सम्बन्ध की कोई परवाह न कर, जिन पंचशील के सिद्धान्तों को चीन स्वीकार कर चुका था उन्हें ताक में रख, सन् १६६२ मे चीन ने भारत पर जो विश्वासघाती हमला किया और भारत की पीठ पर जिस प्रकार छुरा भोंका वह ससार के इतिहास की एक शर्मनाक घटना है। इस हमले का मुकाबला जिस एकता से भारत ने किया और ससार का लोकमत जिस प्रकार चीन के विरुद्ध बना उसके कारण चीन को इस हमले से मुख मोड़ स्वयं ही पीछे हटना पड़ा। इस प्रकार चीन की वर्तमान सरकार ने न केवल भारत के सम्बन्धों को बिगाड़ा वरन् इस और चीन के जैसे मित्रता के सम्बन्ध थे उनको करीब-करीब समाप्त

कर दिया।

बैंगकाक हमारा हवाई जहाज तारीख ११ को १२ बजे दिन को जाना था पर वह लेट हो गया। दूसरे दिन करीब ५ बजे सन्ध्या को हम हांगकांग से रवाना हो सके।

स्याम

हांगकांग से रवाना होने भर की कठिनाई थी, फिर वहां से चलकर स्याम की राजधानी बैंगकाक पहुंचने में केवल ५। घण्टे लगे, क्योंकि हांगकांग से बैंगकाक लगभग एक हजार मील ही था। इंग्लैण्ड से कैनेडा और सैनफ्रान्सिस्को से होनोलुलू तथा होनोलुलू से टोकियो की उड़ानों के सामने यह उड़ान तुच्छ-सी जान पड़ती थी। इस उड़ान से बड़ी तो और भी कई उड़ानें उड़ी जा चुकी थीं।

कितना हर्ष हुआ हमें आज भारत के इतने सन्निकट पहुंचकर भारत के समान ही भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत भारत के पड़ौसी इस स्याम देश के दर्शन कर।

स्याम देश की राजधानी बैंगकाक में हम चार दिन ठहरे और हमारी घुमाई आरम्भ हुई।

बैंगकाक का अपना अद्भुत इतिहास है। सहस्र सौ वर्षों में धीरे-धीरे ही यह नगर बन पाया है। शनैः-शनैः मेनाम नदी की मिट्टी से समुद्र पटता गया और बैंगकाक नगर का निर्माण होता गया। इस नदी की मिट्टी अब भी जमती जा रही है और हो सकता है कि कभी आगे चलकर वर्तमान बैंगकाक समुद्र के किनारे न रह जाए। दक्षिण-पूर्व एशिया में बैंगकाक सबसे बड़ा नगर है और दर्शकों को दृष्टि से तो इसे संसार का एक बेजोड़ नगर समझना चाहिए। मनोहर प्राकृतिक दृश्यों का बाहुल्य तो है ही, सुन्दर मन्दिरों और महलों से उसकी छटा द्विगुणित हो गई है। पुरातन और नूतन का जैसा मोहक दृश्य यह

है वैसा संसार के अन्य किसी देश के नगर में कदाचित् ही देखने को मिले। आधुनिक युग की कोई भी ऐसी सुविधा नहीं जो वहां प्राप्त न हो, किन्तु इसपर भी वहां के शताब्दियों से वैसे ही चले आने वाले जीवन की झांकी भी सहज ही मिल जाती है।

सारे नगर का वायुमण्डल धार्मिक भावनाओं से भरा हुआ है और जिस धर्म की भावनाओं से यह नगर ओतप्रोत है वह है बौद्धधर्म। बैंकाक में अनेक बौद्धमन्दिर और बौद्धविहार हैं, कुछ बौद्धमन्दिर सचमुच ही कला के सर्वोत्कृष्ट नमूने हैं। तीन बौद्धमन्दिर यहां बहुत प्रसिद्ध हैं—पहला है 'वातअरुण'। यह अपने अत्यन्त विशाल पैगोडा के कारण प्रसिद्ध है। दूसरा है 'वात बेन्चामा बोरपित्', इसमे संगमरमर, चीनी मिट्टी और कांच का बड़ी कारीगरी का काम है। और तीसरा है—'पन्ने की बुद्ध-मूर्ति वाला'। इसकी पन्ने की बुद्ध-मूर्ति तो विलक्षण ही है, इसके सिवा इसकी भित्तियों पर पूरी रामकथा चित्रित है, पर स्याम देश की रामकथा और हमारी रामकथा में अनेक अन्तर हैं, दृष्टान्त के लिए हमारे हनुमान ब्रह्मचारी हैं, पर स्याम के हनुमान अनेक पत्नियों और रखैलो वाले हैं। एक खड़ी और एक शयन करती हुई बौद्धमूर्तियां भी बड़ी विशाल हैं।

स्याम के निवासी आकृति और वर्ण की दृष्टि से मंगोल रक्त के हैं, किन्तु वास्तव में स्याम-वासियों को किसी एक जाति का नहीं कहा जा सकता। न वे बहुत ऊंचे हैं न ठिगने, रंग है गहरा गेहुआ। ९०% प्रतिशत लोग बौद्धधर्मावलंबी हैं। स्याम में हर व्यक्ति को पांच वर्ष से पच्चीस वर्ष की अवस्था के बीच चार महीने से लेकर चार वर्ष तक बौद्धभिक्षु होना पड़ता है। वहां के स्त्रियों और पुरुषों दोनों की ही मुख्य पोशाक कोई ढाई फुट चौड़ी और सात फुट लम्बी धोती होती है, जो कमर से घुटनों तक का शरीर ढक लेती है। इस वस्त्र को स्याम में पानींग कहा जाता है। यह सूती या रेशमी होता है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण लोग शरीर के ऊपरी भाग पर न नहीं पहनते या छोटी ढीली जाकेट पहनते हैं। स्त्रियां पाहुम न

एक पट्टी वक्षस्थल पर बांधे रहती हैं या चुस्त बांहों वाली जाकेट पहनती हैं। कुछ स्त्री-पुरुष पश्चिमी लिबास भी धारण करती हैं, पर इनकी संख्या बहुत कम है। हमें पीत चीवर पहने हुए जितने बौद्ध-भिक्षु यहां दिखे उतने कहीं नहीं, हर व्यक्ति को जो चार महीने से चार वर्ष तक बौद्धभिक्षु होना पड़ता है!

स्याम की कला का भी बड़ा उत्कर्ष हुआ है। यहां की कल और साहित्य बौद्धधर्म से अत्यधिक प्रभावित है। यहां का रंगम भी उन्नत है। नाटक दो कोटि हैं। (१) खोन, जिसमें सभी पा नकली चेहरे लगाते हैं और (२) लाकोन, जिसमें पुरुष पात्र केवल दैत्यों अथवा पशुओं का चित्रण करने के लिए नकली चेहरों क प्रयोग करते हैं, शेष नहीं। यहां के नाटकों में वस्त्रों की विविधत और शृंगार-बाहुल्य का बहुत अधिक स्थान है। संगीत और नृत्य का भी प्राधान्य रहता है। हमने दोनों प्रकार के नाटक देखे।

बैंगकाक में भारतीयों की काफी बस्ती है। उनकी एक संस्था है, जिसका नाम है—'थाई भारत कलचरल सोसाइटी'। इस संस्था का निज का भवन है। वहां मेरे भाषण का भी प्रबन्ध किया गया था। बड़ी अच्छी उपस्थिति थी और मालूम हुआ कि उन भाषण की बहुत समय तक चर्चा रही।

न जाने क्यों मैं यह समझता था कि स्याम एक बहुत ही छोटा-सा देश है और वहां की आबादी भी नगण्य है। परन्तु ऐसा नहीं है। स्याम का क्षेत्रफल दो लाख एक सौ अड़तालीस वर्गमील है और आबादी है अट्ठासी लाख के लगभग। देश का शासन-प्रबन्ध सम्राट के हाथ में था जो मन्त्रिमण्डल के परामर्श से काम करते थे। शासन-प्रबन्ध की दृष्टि से सारा राज्य अठारह भागों में विभक्त था। यहां ...नवे प्रतिशत निवासी खेती से अपनी आजीविका कमाते हैं। ... का विकास अभी बहुत नहीं हुआ था। रेलें करीब डेढ़ हजार

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का आज़ाद हिन्द फौज के काल में स्याम भी आना हुआ था।

पन्द्रह दिसम्बर को हम हवाई जहाज से स्याम से बर्मा के लिए रवाना हुए।

बर्मा

बैंगकाक से रंगून पहुंचने मे हमे केवल तीन सौ बानवे मील जाना था। परन्तु उस समय हवाई जहाज़ो की चाल काफी भद्दी थी अतः हमें इस यात्रा मे दो घण्टे लगे।

रंगून के हवाई अड्डे पर ज्योंही हम उतरे, हमे जान पड़ा जैसे हम भारत मे आ गए हैं।

हम लोग तीन दिन रंगून रहे। इन तीन दिनो मे रंगून देखने के कार्यक्रम को गौण तथा सार्वजनिक कार्यक्रम को प्रमुख स्थान मिला, जो इस दौरे के अब तक के कार्यक्रमो मे कैनेडा के कार्यक्रम को छोड़कर उल्टी बात थी।

रंगून की सबसे अधिक दर्शनीय वस्तु 'श्वेडगान पंगोडा' है। कहा जाता है कि इसका निर्माण ईसा से पाच सौ अठावन वर्ष पूर्व हुआ था। यह पगोडा एक सौ अड़सठ फुट ऊचे, नौ सौ फुट लम्बे और छः सौ फुट चौड़े चबूतरे पर बना है। पगोडा की परिधि एक हजार पचपन फुट और ऊचाई तीन सौ साठ फुट है। नीचे से लेकर ऊपर तक इसपर स्वर्णपत्र चढ़ा हुआ है, जिसे समय-समय पर बदला जाता है। रंगून नगर के हर स्थल से इस पगोडा के दर्शन होते हैं। इस पगोडा के पास ही दो और दर्शनीय स्थान हैं, रायल लेक और डलहौजी पार्क। इसके बाद सूल पगोडा आता है। सूल पगोडा के पास ही शहर का सभा-भवन है।

रंगून कलकत्ते से मिलता-जुलता नगर है, भारतीय काफी सख्या

हमारा उत्कृष्ट कथा-साहित्य

[illegible]मती : सेठ गोविन्ददास	फागुन के दिन चार : 'उग्र'
[illegible] : गुरुदत्त	लौटे हुए मुसाफिर : कमलेश्वर
[illegible]वासी ,,	तीसरा आदमी ,,
[illegible]मता ,,	सरहदों के बीच ,,
[illegible] न मानूं ,,	नीना . अमृताप्रीतम
[illegible]रिवर्तन ,,	धमू ,,
[illegible]आभा : आचार्य चतुरसेन	बन्द दरवाजा ,,
धर्मपुत्र ,,	हीरे की कनी ,,
पतिता ,,	रंग का पत्ता ,,
मोती ,,	नागमणि ,,
हृदय की परख ,,	गद्दार : कृश्न चन्दर
हृदय की प्यास ,,	एक गधे की वापसी ,,
वासना के स्वर : 'अश्क'	एक गधे की आत्मकथा ,,
धोले . भैरवप्रसाद गुप्त	प्यास ,,
बड़े सरकार ,,	सपनों का कैदी ,,
मंजिल ,,	एक चादर मैली-सी :
ज्वालामुखी : मन्मथनाथ गुप्त	राजेन्द्रसिंह बे[illegible]
दिशाहीन ,,	पुर्नमिलन : नानक[illegible]
सच और झूठ ,,	एक रहस्य · एक सत्य [illegible]
पत्थर की नाव ,,	रजनी : बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्[illegible]
चन्द हसीनों के ख़ुतूत . 'उग्र'	आनन्द मठ
जुहू ,,	दुर्गेशनन्दिनी
बुधुआ की बेटी ,,	देवी चौधरानी

में रहते हैं। सबसे बड़ा बाजार माटगुमरी सड़क पर बागबोक मार्केट है [illegible]

विषवृक्ष : बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय		दत्ता : शरत्चन्द्र चट्टोपा
कपालकुण्डला	,,	ब्राह्मण की बेटी
इन्दिरा	,,	विप्रदास
दो बहनें : रवीन्द्रनाथ ठाकुर		लेन-देन
जुदाई की शाम	,,	देवदास
बहूरानी	,,	चरित्रहीन
काबुलीवाला	,,	शेष प्रश्न
गोरा	,,	बिराज बहू
आंख की किरकिरी	,,	गृहदाह
कुमुदिनी	,,	मंझली दीदी : बड़ी दीदी
घर और बाहर	,,	श्रीकांत
मिलन	,,	चन्द्रनाथ
चार अध्याय	,,	परिणीता
उजड़ा घर	,,	शुभदा
नीरजा	,,	पथ के दावेदार

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य एक रुपया

[illegible] सभी अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं व रेलवे बुक-स्टाल, [illegible]था रोडवेज बुक-स्टालों से मिलती हैं। अगर कोई कठिनाई हो तो सीधे हमसे मगाएं।